यात्री –एक संत – एक वियोगी

वियोगी दी बयाजा भाग–26

तुं बी सदिए में बी आह्ली बीतेआ हैन्नी,
पही कियां आखें जे में बाजी जित्तेआ हैन्नी?

Oh! Century you are alive and I am also alive.
How can you say that I have not won as yet?

कुंवर वियोगी

सुधा रणधीर चतुर्वेदी

Name of the Book: यात्री– एक संत–एक वियोगी
Authors- Kunwar Viyogi & Sudha Randhir Chaturvedi
Kunwar Viyogi di Bayaja:Volume- 26.
Editor- Sudha Chaturvedi
An anthology of writings of Kunwar Viyogi in Dogri, English and Urdu compiled and published by Mrs. Sudha Randhir Chaturvedi.

Copy right---- Sudha Randhir Chaturvedi and Rounak Singh

ISBN:

Publisher- Mrs. Sudha Randhir Chaturvedi
Address- Mrs. Sudha Randhir Chaturvedi
M-327, Utsav Ashiana Manglam
Kalwar Road, Jaipur, Raj. 302012
e-mail : sudha.chaturvedi5@gmail.com
Mob. 9829738844,9829245255
www.kunwarviyogi.com

Online distribution on Amazon, Kindle & Book Media on line book stores . Link---
http://www.amazon.in/dp/B098Q89PNY?ref=myi_title_dp
printer- Book Media, bookmediaindia@gmail.com
Thiagu mudali Street, Pondicherry-605001,
India. Ph: 0413-2211899 2, 094475 36240
year of publication: 2021
Price: 150/-

रणधीर सिंह उपनाम **कुंवर वियोगी**

4–9–1940 से 16–9–2015

साहित्य अकादमी पुरस्कार –1980

दो शब्द ....

हमारे परिचय के आरंभिक दिनों में रणधीर ने मुझे अपनी दो पुस्तकें –'घर' व 'पहेलियां बांगा' दी थीं जिन पर उन्होने लिखा था....

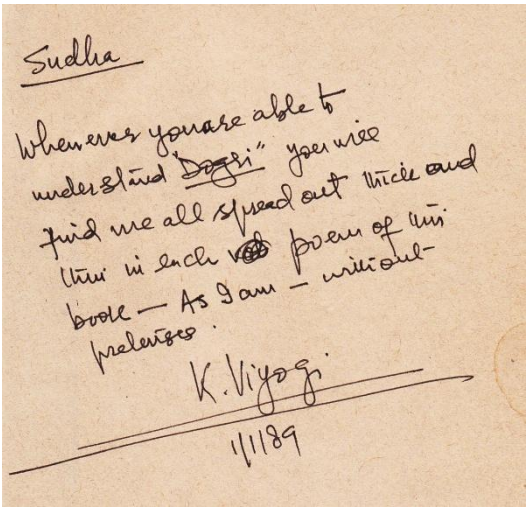

Sudha
Whenever you are able to
understand "Dogri" you will
find me all spread out thick and
thin in each poem of this
book — As I am — without
pretenses.
K. Viyogi
1/1/89

तब मैं सिर्फ 'डोगरी' नाम से परिचित थी। कुछ समय बादसाहित्य अकादमी पुरस्कार लेते फोटो भी देखे थे, पर इन फोटोज् ने पुरानी स्मृतियों को जागृत नही किया था। 2001 में नये घर ''आलना'' में आने पर सब चीजें सम्हाली जा रही थीं, छांटी जा रही थीं, तब अचानक एक अखबार की कटिंग ने चौंका दिया।

1981 में हर अखबार, मैग्जिन में एक समाचार और फोटो छपी थी, मीडिया भी चकित थी, एक वायुसेनाधिकारी को साहित्य पुरस्कार प्राप्त करते देखकर। उस कटिंग को अनजाने ही सहेज लिया था। थोड़े समय तक रखी रही। उसी

फोटो कि कटिंग रणधीर के पास देखकर, बगैर पढ़े ही रणधीर से पूछा, ये कटिंग तुम्हारे पास कैसे? वो मुझे देख हंसते रहे, बोले कुछ नहीं। तब एकदम सब साफ हो गया, अरे! ये तो 'ये' ही हैं। अचानक इस नये परिचय ने मुझे हतप्रभ कर दिया था। घर में स्पेशलिस्ट डॉक्टरों की भीड़ में मैंने सांइस–मैथ्स लिया था। बचपन से पायलेट ऑफिसर बनना चाहती थी, पर तब ऐसा संभव नही था तो एरॉनॉटिकल इंजीनियर बनना चाहा था। शायद इसी भाव के तहत 1981 मैंने वह कटिंग सम्हाली थी। पर रणधीर..... 1988में हम मिले। लगता है कि हमारी किसमत में मिलना लिखा था, ऊपरवाला अपने प्रयास कर रहा था पर ये प्रयास बड़े ही कठोर थे, मर्मान्तक पीड़ा देकर मिलाया था।

रणधीर के बारे में मैं लिखना चाह रही थी, इसपर हमने चर्चा भी की थी। कुछ बचपन की यादें, रिश्ते, रिश्तेदार, दोस्त, घर, गौर व जम्मू की सिलसिलेवार बातें बतलाते थे। इन्हें क्या अच्छा लगता और कौनसी बातें दुखः, पीड़ा देती थीं, सबका चरित्र–चित्रण भी करते जाते थे। इनकी रचनाओं के अर्थ बतलाते हुऐ, उन स्थितियों का वर्णन करते थे, पर इन सबके बीच मन खराब हो जाता था। समय पंख लगाये उड़ रहा था।

अपने दादाजी के बारे में इन्होने बहुत गर्व से बतलाया कि चिनाब में एक बार खूब भयंकर बाड़ आयी थी, सब तरफ पानी ही पानी था। सारी संचार व्यवस्था टूट गयी थी, तो इनके दादाजी ने मुंह में टेलिफोन का तार लेकर चिनाब को पार किया था। उस वक्त यह ताकत और जोश, बहादुरी की मिसाल थी।

अपनी छोटी उम्र के किस्से बतलाते बतलाया कि– बचपन में ये भगवान कृष्ण के भक्त थे, इतना विश्वास था कि कृष्ण की फोटो अपनी कमीज की जेब में रखते थे, अपने दिल के पास सुरक्षीत रखी रहती थी। पिता के सिपाही इस बात को जानते थे और आपस में बतलाते थे कि–देखो फोटो रखी है। डोना बुआ मां से

कहा करती थी कि यह एक दिन काशी–बनारस चला जावेगा, साधू हो जावेगा। इनकी इस प्रवृति के कारण मां भी आशंकित रहती थी कि कहीं सचमुच में साधू न हो जायें।

दत्तक पुत्रियों के पालन–पोषण और रणधीर के अपने पत्रकारिता व शिक्षण में व्यस्त होने से, मुट्ठी की 'समय–रेत' फिसलती गयी और रचनाओं का प्रकाशन न हो पाया। मेरे लिए प्रकाशन में भाषा का न आना और जम्मू से दूरी ने कठिनाई का स्तर बढ़ा दिया था।

मनुष्य जीवन देवताओं के लिए भी आकांक्षित है। वियोगी जी ने कभी भी मोक्ष या मुक्ति की चाह नही की है। वे बार–बार मनुष्य जीवन ही चाहते हैं। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द को अभिव्यक्ति का मुख्य स्रोत माना है। अभिव्यक्ति का माध्यम शरीर होता है। इसी में शक्तियां सूक्ष्म रूप से रहती हैं। दर्शन और ज्ञान से चरित्र का निर्माण होता है। विद्या, ज्ञान याने आत्मज्ञान का पर्याय है, वहीं अविद्या, कर्म का या चरित्र का पर्याय है। चरित्र जीवन शैली है, जीवन की अवधारणा है। जीवन में दर्शन और ज्ञान की अभिव्यक्ति है।

व्यक्ति जैसा सोचता है, जैसा उसका स्वभाव होता है वही आचरण के रूप में परिलक्षित होता चला जाता है। संकल्प के बिना आपसी सम्मान, आपसी उत्तरदायित्व, सहनशीलता, पूर्वाग्रह आदि प्रकाश में नही आ सकते हैं। प्रकाशित होना, व्यष्टि से समष्टि की ओर विस्तार है। जीवन में मेरा होना, मेरा अस्तित्व है। अस्तित्व की जागरूकता अंदर से जोड़े रखती है। अस्तित्व अहं है पर विशिष्ट होना अहंकार है। विशिष्ट होना, बाहरी पहचान है, कामना है, लक्ष्य है, प्रकृति की अभिव्यक्ति है, अंहकार है, अधिकार है, प्रतिक्रिया है, अपेक्षा का भाव है, नियंत्रक है, सपने देखता और मार्गदर्शक बन जाता है। स्वंय का महत्व दूसरों से अधिक होना, आक्रामक होना है। यह संबधों को तोड़ता है।

चरित्र को जानने के दो आयाम है–एक अहंकार का बाहरी जीवन पर प्रभाव, यह बुद्धि का क्षेत्र बन जाता है। दूसरा आंतरिक जीवन शैली का, चिंतन का, शरीर पर प्रभाव। ज्ञान का अर्थ है आत्मज्ञान, व्यष्टि से समष्टि की ओर जाना। बुद्धि से निकला संदेश, संप्रेषण या आह्वान, दिल तक नही पहुंचता वरन् दूसरे की बुद्धि से टकराकर लौट आता है और सारे प्रयास निरर्थक हो जाते हैं। कभी भी परिवर्तन नहीं लासकते। पर यही संदेश, संप्रेषण या आह्वान मन से होने पर रूपांतरण होगा। मन जोड़ता है, कारण, यह शीतल, मृदु और स्नेहिल होता है। मन, कामनाका केंद्र होने पर कर्म को प्रेरित करता है। इच्छित रूपांतरण लाता है और ठीक ऐसा ही रणधीर ने किया भी, जिससे वाछित परिवर्तन ला सकें।

व्यक्ति, ज्ञान मार्ग से धर्म, धारणा, ज्ञान, वैराग्य से अविद्या, अस्मिता, आसक्ति, से मुक्त हो जाता है। मन में साधुता का भाव अंकुरित होता है और जीवन में सूक्ष्मता का प्रवेश होता है। यह चरित्र का उज्ज्वल पक्ष है।

वियोगी जी की रचना संसार में चरित्र की उज्ज्वलता के दर्शन होते जाते हैं। क्रम से बालपन, किशोरावस्था, युवावस्था, गृहस्थ जीवन में ज्ञान, व वैराग्य से स्वंय का विस्तार, मैं से हम, व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रयाण के दर्शन होते हैं। मन में साधुता या संत चरित्र के दर्शन होते है।

- ✓ ''रामधन गी श्रद्धांजली'' मे.....धन रामधन, तेरा धन एका धन ऐ।
- ✓ ''वियोगी'' गी सुकरात आंगर जहर–मौरा तुसदे ओ– पर ध्यान रक्खयो जे एह् उसी पची निं जा।
- ✓ पहलें बी ''वियोगी'' मौन–गौण हा,

बत्तह्रे दा होई संकोची होए ऐ।

✓ ''चालकड़ी, अय्यारन'' आखन–बड़ी ऐ दुनियां,
ओह् लोक चंगी चाल्ली –जिनें पढ़ी ऐ दुनियां।

✓ 'वियोगी' दी शखसीयत ऐ इक खुल्ली दी कताब,
छपैल नेईं कुसा थमा बी खुट्टे–खरे दी।

✓ जदूं मरी गये हे ओ जिनें गी फी अपनै उप्पर गमान हा,
अपनै थ्हारै खड़े खड़ोते एह् धरत ही ते समान हा,

तप

पसरें दें धने आन्गु चोन जोगी ओई दी
अठ भ्रा ते भैना अस हे में सवने शा वड्डा
मात पिता जदूं सुरग सधारे अस हे ठिड म ठिड़ा
अस वेसमझे, ते वेसहारा सयाने निक्के निक्के
लोक ए आखन असें ते खाने जिन्दु अन्दर धिक्के
नां घर कोठा, धेला पैरगनां गै चारदिवारी
लिखी दी साड़ी किसमत अन्दर दर दर खज्जल खारी
पर दाते दी मरजी दुनिया नां समझै नां समझी
नां मेरी हठ धरमी समझी नां मेरी मनमरजी
मेरी नरम तबीयत अन्दर उने फौलाद नी दिक्खी
आखन करग लखारी के के ओ जानन नी मिक्की
पन्द्रह साल में तप जप कीता करिऐ उन्नी ईखी
अज्ज वने दे उऐ वच्चे अफसर घर गृहसती
ते पन्द्रह साल दै बाद में वैठा मगन नखिद्दी सोचे
इक्कलापन किश जीव पाये दा वड़ा पी जिद्दी सोचें

✓ वियोगी' दी लवारस लोथ ऐ भले लोको,
सदगती होए उदी, भोला मनुक्ख हा।

✓ पीड़ें दे दाने भुनाने में गया,
भट्ठी आल्ली दिक्खिया रोना लगी।

✓ सादा कमरा दिक्खियै राही पुछदे मीं अकसर,

गब्बे– नमदे कुत्थे न? की खाली तेरा ''घर''
तां में उनेंगी पुच्छना ''दरसो तुंदे नमदे कुत्थें?
जीवन दे अस–तुस मसाफर।

✓ शिवजी दे विषपान दा किस्सा लिखया पुरखें वेदें च,
में कीता विषपान तां ओदा जिकर कुसानै नेईं कीता।

✓ चुना दे फुल्ल मिक्की फूकिऐ न यार ए मेरे,
उनें गी दिक्खी दिक्खी आखन रिश्तेदार ए मेरे।

सत्ताईस सालों में जिसे जाना–पहचाना, उसीको फिर से उसकी रचनाओं के माध्यम से खोजना, एक नया परिचय कुछ ऐसा ही है जैसे दुःख की उत्ताल तरंगों से आलोड़ित सागर में छोटी सी नौका का विहार। अपार दुःख, शोक, असंतोष, अक्षमता, निरर्थकता, अपनी सीमाओं की तीखी धार से बार–बार घायल कर खोये प्रिय को न सही, उनकी स्मृतियों से ही कुछ पल को अस्थायी शांती मिलना है। घाव पर मलहम लगाना है। जिन रचनाओं के अर्थ–सामान्य जीवन में समझ में आते हैं वही प्रिय की अनुपस्थिति में अर्थ अनोखे होकर गहराई तक उतरते चले जाते हैं। व्यक्ति की उपस्थिति में उतनी तीव्रता से गोते नहीं लगते जितना अनुपस्थिति में लगते जाते हैं। उन स्मृतियों को पुनर्जीवित कर जीना ही शायद भगवान से साक्षात्कार होने से ज्यादा सुखद होता है।

पुरखें कीती दी 'वियोगी' ए वसीयत तेरै नां,
सेहतमन्दी डोगरी दी तेरै जम्मै लाई दी ।
पुरखें दी तलवार ते बन्दूक गी तूं छोड़िऐ,
अपने हत्था च 'वियोगी' कान्नी कैली लेई ही।
उमर भर कानी चलाई अनगिने किस्से घड़े,
ते 'वियोगी' जिन्दगी दी लज्जतें गी चूसया।

चुप होया रोन्दे रोन्दे में बड़ा चित्था होआ,
दुये लोकें दे दुःखे दी पीड़ा वारै सोची ऐ।

चरित्र को जानने के दो आयाम है–एक बाहरी जीवन, दूसरा आंतरिक जीवन शैली का, चिंतन को आधार बनाकर ही लिखने का प्रयास किया है।कुंवर वियोगी जी से मिली जानकारियों और उनकी व दूसरों की लिखित रचना सामग्री को एकत्र कर सिलसिलेवार रखने का प्रयास ही है। कुंवर वियोगी जी की हिन्दी, अँग्रेजी, डोगरी रचनाओं का जगह–जगह पर उल्लेख किया गया है। इन्हें छोटे अक्षरों में लिखा गया है। अंत में कुछ रचनायें हैं।

मेरे द्वारा लिखीत सामगीं को सफेद पृष्ठ भूमी व कुंवर वियोगी जी के उद्धरण डोगरी, हिन्दी व अंग्रेजी में लेख, विचार, कविता,कथनों को हल्के भूरे रंग की पृष्ठभूमी पर दिये गये हैं।

उद्धरण के सम्मुख vol. no, व पेजनंबर लिखे हैं। जैसे vol 6-12 का अर्थ हे कि वह उद्धरण वियोगी दी बयाजा के VOL- 6 के पेज 12 पर दिया गया है। अंत में कुछ रचनायें हैं।

कुंवर वियोगी जी के उद्धरण डोगरी, हिन्दी व अंग्रेजी में छोटे फांट में दिये गये हैं। उद्धरण के सम्मुख vol. no, व पेजनंबर लिखे हैं। जैसे vol 6-12 का अर्थ हे कि वह उद्धरण वियोगी दी बयाजा के VOL- 6 के पेज 12 पर दिया गया है।

वियोगी जी की बयाज छापने के प्रकरण में मेरी भूमिका मात्र मजदूर की रही है। पुस्तक के प्रकाशन में हुई गलतियों को एक हिन्दी भाषी का डोगरी में अनधिकार चेष्टा समझकर क्षमा करें।

पर यह भी सच है.....

तुं बी सदिए में बी आह्ली बीतेआ हैन्नी,
फ्ही कियां आखें जे में बाजी जित्तेआ हैन्नी?

एक हिन्दी भाषी के डोगरी में हस्तक्षेप से हुई गलतियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूं।

सुधा रणधीर चतुर्वेदी
जयपुर राज.

यात्री –एक संत – एक वियोगी

1. किस्सा मियां जाफर सिंह

पुराने वकतें च 'वियोगी' दे पुरखे चा इक पुरखा,
मियां जाफर सिंह गलांदे अम्वा–रां च रौहदां हा,
ते इक दैंती कथा अनुसार सुनेआ ऐ जे ओ पुरखा
अपने वकतें दा सिरमौर सूरमा गनोदां हा।vol.-7,135

डोगरा राजपूतों के इतिहास का प्रथम सिरा भगवान राम, सूर्यवंश से जोड़ा बतलाया गया है पर पौराणिक कथाओं, तथ्यों व किंवदंतियों के अनुसार इनके पूर्वजों की महान् योद्धा मियां जाफर सिंह से वंशावली की जानकारी होती है। जिन्होनें आगोर बसाया, उन्ही की सातवीं पीढ़ी के महान् योद्धा मियां जवाहर

सिंह, महाराजा गुलाब सिंह को जम्मू–कश्मीर का राजा बनाने में मुख्य मददगार रहे थे।

चिनाब पहाड़ों से उतर कर अचानक दक्षिण–पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। आगे जाकर चिनाब के दायीं तरफ अंबारा है और बायीं तरफ टीले पर आगौर गांव बसा है, यह अखनूर को छूती आगे बढ़ जाती है। मियां जवाहर सिंह के पुत्र मियां गोबिन्द सिंह के तीन पुत्र थे–मियाँ फुलासिंह, मियाँ त्रिलोकसिंह, मियाँ हजारासिंह। मियां त्रिलोकीसिंह के दो पुत्र थे–मियां उधमसिंह व मियां पुरखसिंह (1905-1966)।

पुरख सिंह एक सुदर्शन, हट्टे–कट्टे, नरम दिल के स्वामी थे। अपने जमाने में वे जम्मू फुटबाल टीम के कैप्टन रहे थे। पंजाब यूनीवर्सिटी के अंडरग्रेजुएट थे। यूनीवर्सिटी में वे फुटबाल खिलाड़ी, मुक्केबाज व शॉटपुट चैम्पियन थे। इसी आधार पर उन्हे पुलिस में नौकरी मिली थी। जम्मू और गौर में कच्चे–पक्के मकान थे। मियाँ पुरख सिंह पुलिस सब इंस्पैक्टर अवश्य थे पर ईमानदार और थोड़े भीरू प्रकृति के थे। स्वंय इच्छा होने पर भी कभी ऊपर की कमाई नहीं की पर जो करते थे उनकी प्रशंसा करते थे। मियाँ पुरख सिंह के प्रथम विवाह से एक पुत्र व एक पुत्री थे। गौर निवासी पुरख सिंह, असिस्टैंट सब इंस्पैक्टरपुलिस सांबा में तैनात थे। उनकी पत्नी के प्रसव के दौरान जच्चा–बच्चा दोनों चल बसे थे।

कुमेदान सन्तराम चाड़क सरोर निवासी सामान्य कद–काठी के पतले मुँह वाले बड़े रौबदार अफसर थे। अपने पिता की कुछ एकड़ जमीन पर काम करने में मजा नहीं आया तो घर छोड़कर भाग गये। तीसरी– चौथी पास होने से राजा प्रताप सिंह की पुलिस में कांस्टेबल बन गये। अपने हुनर और कौशल, बुद्धि से 35 वर्ष की आयु में, कुमेदान DSPपद पर आसीन हुए। राजा ने उन्हे अपना सुरक्षा अधिकारी बनाया। फौज के काम के अतिरिक्त उन्हें दिन में दो मुख्य डयूटी दी गयी। राजा के दोनों खाने के पहिले चखना और साथ में बैठ कर खाना खाना। तीन पत्नियों

के प्रसव के दौरान बारी–बारी से मृत्यु होने से फिर विवाह नहीं किया। लगभग पचास वर्ष की उम्र में राजा प्रताप सिंह ने खुश होकर पांचसौ एकड़ जमीन इनाम में दी। पर उन्होने लेने से इन्कार कर दिया। कारण, उनके लिये राजा की सेवा ही इनाम है। परिवार है नहीं, किसके लिये जमीन लें ? राजा ने अपने वजीर से तुरन्त उनकी शादी के लिये लड़की बतलाने को कहा। तब सन्तराम चांडक का विवाह आठ वर्षीया कन्या से हुआ। तेरह वर्ष की होने पर ससुराल आयीं, तब तक सन्त राम चौवन के हो चुके थे। उनसे एक लड़का और पांच लड़कियां हुई। उनमें तीसरी रामदेई थी। रामदेई गौर वर्ण अच्छे नाक–नक्श की थीं पर बचपन में माता की बीमारी ने नुकसान किया था और माता के चिह्न छूट गये थे। बारह वर्ष की होने पर भी शादी न होने से घर में चिंता थी। एक मध्यस्थ द्वारा उनकी शादी पुरख सिंह से करवाई गयी। सीमित आय में धीरे–धीरे नो बच्चे हुऐ।
4 सितंबर 1940–प्रथम पुत्र कुंवर रणधीर सिंह,
1942–कुलबीर सिंह, 1945–सभ्यता,1947–ललिता, 1949–बलबीर सिंह, 1952–सरिता, 1956–जगबीर सिंह, 1960–कन्या–X,1961–मगधेश सिंह

प्रथम पुत्र कुंवर रणधीर सिंह व चार पुत्र व जीवित तीन पुत्रियां थीं। कुल दस बच्चों का पालन–पोषण, सीमित कमाई में कठिन से कठिनतर होता गया। रामदेई दिनरात लगी रहतीं, तीन पाव से सेर करते–करते दिन निकलते गये। कच्चे घर में इतनें बच्चे जनना, सम्भालना, बड़ा करना, शिक्षा देना बहुत कठिन था। पुरख सिंह कम आमदनी और जिम्मेदारियों के कारण घर से दूर ही रहते थे। बच्चों के लिये खाना, चौका–बर्तन, सफाई बहुत काम रहता था। मां को चादर के कोने खींच–खींच कर बच्चों को ओढ़ाने में बहुत परिश्रम करना होता था। घर में सहायिका थी, बाद में डोना बुआ आ गयी थी। विधवा डोना को रामदेई ने बड़े

आदर के साथ रखा। इसलिये डोना बुआ बुलाते थे। रामदेई को बच्चों के साथ बतियाने का समय नहीं था। काम–काम और काम में समय तेजी से बीतता जा रहा था। बड़ा बेटा तेज पर घर घुस्सू था। रामदेई अपनी सौतेली लड़की को अपनी ही मानकर पाल रही थी। वह बारह बरस की होने आयी थी पर शादी का जुगाड़ बैठा नहीं था। रामदेई को चौथा प्रसव होने वाला था।

रणधीर सिंह अपने पिता के समान फुटबॉल के खिलाड़ी थे पर दूसरों से ज्यादा बात करने से कतराते थे। भाई दूसरे लड़कों से लड़ाई करते और उनको धमकाने के लिये बड़े भाई को बुलाते। मां को काम करते देखते थे– श्रम से थकी मां को देख दुःख होता था। घिसे कपड़े पहने काम में व्यस्त मां कम ही बोलती थी, पर उन अभावों मे भी परिवार के रिश्ते शुद्धभाव से बह रहे थे। अभावों के प्रति रोष या हीनभावना का अभाव था। दूसरा लड़का बड़ा जिद्दी और अपने मन की करने वाला था। रोकर अपने लिये साईकिल लेली थी।
रामदेई कितनी ही बार बड़े को ''वड्डा'' या बड़ा मियाँ कहकर पुकारती थीं। बोलती थीं तू बाहर जाकर खेलता क्यों नही है। मीठी–मीठी बातें कर मन बहलाता है। कारण? बड़ा मियाँ उसे देखकर बोलता था–– एक दिन बड़ा होकर तुझे खूब आराम दूंगा। तुझे रानी बनाकर रखूंगा, तुझे काम नही करना पड़ेगा। रामदेई हंसती, बोलती –''चल देखूंगी।''

रणधीर अधिकतर अपनी मां को गर्भवती या नवजात को सम्भालते ही देखते थे। छोटे भाई–बहनों को सम्भालने में मदद करते थे, पोतड़े तक धोते थे। शायद इसीलिए थोड़ा खाना बनाना भी सीख गये थे। मां के प्रति प्रेम, श्रद्धा भाव, सहचर का

भाव था। शायद वे उन बच्चों में एक ही थे जिन्होंने मां को इतना करीब से देखा और जाना था। इन परिस्थितियों से उबारने का विचार दिमाग में चलता रहता था। घर की हालत देख उम्र से पहले ही बड़े हो गये थे। बचपन खो गया था। शायद ये परिस्थितियां ही रणधीर की अनकही, अपरिभाषित पीड़ा या वेदना का स्रोत रही होंगी। ज्येष्ठ पुत्र होने और मां से नजदीकी के कारण, युवा होते रणधीर से मां अपनी कई बातें साझा करती। कही–अनकही मजबूरियां, अभाव, भविष्य की अनिश्चितता, प्यार, छोटों के प्रति वात्सल्य भाव साझा होते गये। यह साझाकरण अपने अन्य बच्चों से नहीं हुआ, यहां तक कि घर में रहने वाली पुत्रियों से भी नहीं। साझा होने से कुछ स्थायी भाव हमेशा के लिये संकल्प में रूपांतरित होते गये जिससे स्वयं रणधीर अनभिज्ञ थे।

2. बहुमुखी प्रतिभा के धनी रणधीर सिंह ने अपनी पहली कविता, लगभग वर्ष 1950 में, कक्षा पांचवी मे लिखी/बोली थी। उन दिनों रामायण कथा पाठ सुनकर बड़े ही सरल–सहज भाव से मातृभाषा डोगरी में कविता बोली.....
''सच्च बोल्लियै जे जिन्द छुड़कै,/ झूठे ब्हान्ने लाने की।''

पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद के बाद उन्हे जम्मू के S.P.M. Rajput School, Jammuस्कूल में भर्ती किया गया ओर वहीं राजपूत बोर्डिंग में रखा गया जहां न्यूनतम आवश्यकताओं में बच्चे फ्री **में** रहते और पढ़ते थे। दो साल बाद छोटा भाई भी उसी बोर्डिंग में आ गया।

एक बार युवराज कर्णसिंह आये, कृशकाय रणधीर सिंह को देखकर कहा इतना दुबला क्यों है? रणधीर का एक सहपाठी जोरावर सिंह हमेंशा फर्स्ट आता था। आठवीं के परीक्षा परिणाम के समय वही लड़का सोच के बैठा था कि वही पहले नबंर पर आयेगा, पर पहले नबंर पर रणधीर सिंह का नाम आने से अचंभित और नाराज हुआ। हाईस्कूल में ध्यान सिंह से दोस्ती हुई। वे भी रणधीर के समान साहित्य प्रेमी थे। रणधीर अपने विद्यार्थी काल में हॉकी और फुटबॉल के बहुत उत्साही खिलाड़ी रहे थे। फुटबॉल टीम के कैप्टन रहे थे। इसी के साथ साहित्य के प्रति भी बहुत रूचि थी। 1954 में S.P.M. Rajput School, Jammuमें पढ़ाई करते हुएउर्दू में लिखना शुरु किया था।
1955 से 1962 का समय रणधीर के जीवन का विलक्षण और चुनौतियों से भरा समय था। तेज स्मरणशक्ति ,ऊर्जावान, उच्च नैतिक मूल्यो व संस्कारों व जिजीविषा से युक्त बहुआयामी व्यक्तित्व का स्वामी, जिज्ञासु, विद्रोही, स्नेही बेटे के दो रुप सामने आते हैं–– एक ज्येष्ट पुत्र का, दूसरा स्वयम् की अभिव्यक्ति का।

एक तरफ ज्येष्ठ पुत्र, घर की विषम परिस्थतियों से वाकिफ था। मां की विचारणीय कठिनाइयों से जूझती स्थिति थी। उसे यथासंभव सहारा देने के प्रयास में बचपन खो गया था, पर इसके साथ ही रिश्तों की मिठास, गंभीरता, और महत्व को जाना और उनको पोषण देने का कौशल भी सीख रहे थे। ज्येष्ठ पुत्र के उत्तरदायित्वों को भी सीख रहे थे। मां, अपने पति की सीमित आय, गिरते स्वास्थ्य और दस बच्चों की परवरिश से बहुत चिंतित

थी। कोई रास्ता नहीं दिखता था। उम्मीद की किरण मात्र ज्येष्ठ पुत्र था। भाग्य से ज्येष्ठ पुत्र अतिसंवेदनशील और मातृभक्त था।

रणधीर बचपन से ही कम बोलते थे। जरूरत होने पर धाराप्रवाह बोलते या वाद–विवाद भी करते थे। पर किसी बात से असंतुष्ट या नाराज होने पर या उन्हे लगता कि बोलने से कोई अन्तर नहीं होगा तो वे चुप रहते थे। अपने दुःख, संवेदनाऐं, निराशा मन में ही रखते थे, शायद इन्हे बाँटने वाला कोई नहीं था, अकेलापन था।

केई बारी ईयां लग्गया जे गई गई चुप्पी
पर कोशिशें दै बावजूद नेई गई चुप्पी
मीं लुट्टी–पुट्टी लेई गई तेरी रवानगी
ते बदले च सन्नाटेदार देई गई चुप्पी
मेरी दलेरियें री बीनियें गी फगड़ियै
जित्थै बी गई अपनै कन्नै लेई गई चुप्पी
जुलमें दै बरखलाफ जदूं बोलना चाहया
बजिद्ध होई ऐ जीया उप्पर बेई गई चुप्पी
'वियोगी' गी यारा नै रद्ध कीता जिस बेल्लै
हैरान, परेशान, दिखदी रेही गई चुप्पी

सामान्यतः मूल्यों की स्थापना में यह देखा जाता है कि माता–पिता के मूल्य, मान्यतायें अनकहे ही बच्चों में स्थानांतरित हो जाते हैं। ऐसा ही रणधीर के साथ हुआ होगा। रणधीर के अवचेतन ने अनजाने ही रिश्तों की समझ, जिम्मेदारी, स्वेच्छा से खुशी–खुशी आत्मसात की होगी। पर इन सब के साथ प्रकृति और विधना के अन्याय से मासूम हृदय विदीर्ण अवश्य हुआ होगा। इस मूक पीड़ा या वेदना ने अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग ''कलम'' ही चुना होगा।

इसी ने जन्म दिया होगा, **''यात्री– एक सन्त– एक वियोगी''** को।

3. 1955 में फर्स्ट डिविजन में मैट्रिक उत्तीर्ण किया। तब रणधीर का परिवार उधमपुर चला गया था। कारण, पिताजी की पोस्टिंग उधमपुर थी। मामूली फीस के कारण इन्टरमीजिएट में C.J.M. Science College जम्मू में प्रवेश लिया। बोर्डिंग छोड़ना पड़ा और कॉलेज हॉस्टल में रखने के लिये पैसे नहीं थे तो फत्तुचौगान घर में रहने का निश्चय हुआ। उस मकान में दो कमरों में एक मुसलमान हलवाई रहता था। बाकी के दो कमरे खाली थे, उसी में रणधीर का वास हुआ। घर से खर्चे के लिये पैंतालिस रूपये मिलते थे। एक बार उधमपुर से जम्मू आने के लिये पिताजी के पास पैसे नहीं थे। उन्होने एक कांस्टेबल को बोला कि इसे जम्मू की बस में बैठा आवो। वह बैठाकर चला गया। तीन चार किलोमीटर आने पर कंडक्टर ने टिकिट के लिये पूछा। वड्डा संकोच में कह नहीं पाया कि कांस्टेबल बैठा कर गया है, बोला मेरे पास पैसे नहीं है तो कंडक्टर ने बस रूकवाई और नीचे उतार दिया। वड्डा मायुस पैदल उधमपुर वापस आया। उसे देख रामदेई ने पूछा– ''गया नहीं ?'' वड्डे ने सारी बात बतलाई। रामदेई वड्डे को कॉलेज भेजना चाहती थी, अफसर बनाना चाहती थी। रामदेई ने कुछ सोचकर अपने एक कान का झुमका खोल वड्डे को दे दिया और बोली, इसे बेचकर पैसे ले आ। झुमके के चौवन रूपये मिले, रामदेई ने बीस रूपये वड्डे को दिये और कहा –''जा''।

उसी झुमके के प्रताप से वड्डा बहुत बड़ा ईमानदार, इज्जतदार आदमी बना। अभावों में मिले संस्कारों, आत्मसम्मान और सतह के नीचे– परिवार के स्नेहिल रिश्तों की निरंतर धारा ने भाईयों व

बहिनों को सच में आदमी, अफसर बनाया। बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व खिलने लगा था।

1956 में पूरा परिवार फत्तुचौगान–जम्मू आ गये। कारण पिताजी जम्मू सीटी के पुलिस इंस्पेक्टर (incharge of the whole city)बन गये थे। दो कमरों के घर में रहने लगे। पिताजी उच्च रक्तचाप और डाइबिटीज से पीड़ित थे, नियमित शराब सेवन से बीमार हो जाते थे। स्थिति खराब होती जा रही थी। 1956 में एक पुत्र का जन्म हुआ। सबसे बड़ी लड़की का विवाह 1950 में postal clerk,बलदेव सिंह चौहान से हुआ जो गबन के केस में पकड़े गये। पिता ने वह केस डिसमिस करा दिया। बलदेव सिंह नौकरी से निकाले गये पर गबन राशि जमा करवाने के लिये मां के सारे गहने बेचने पड़े। यह माता–पिता के बीच टेंशन का कारण बना। मां को हरवक्त सरदर्द रहने लगा। मां सर पर कपड़ा बांधे काम में लगी रहती।

रणधीर अँग्रेजी में कविताऐं लिखने लगे और उनकी कवितायें छपने भी लगीं। घर की हालत की जानकारी होने पर भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें ? वे अँग्रेजी का प्रोफेसर बनना चाहते थे। इस समय उन्होने मां से वादा किया कि वे इन कठनाइयों से उबारेगें और वे घबराये नहीं। मां को शायद थोड़ी तसल्ली मिली।

मां बहुत प्यार करने वाली थी, पिता भी बहुत प्यार करने वाले थे, पर जीवन की कुछ बातों ने उन्हे मजबूर कर दिया था। माता–पिता के मध्य टेंशन बढ़ता ही जा रहा था, बच्चों को उनके अपने उपर ही छोड़ दिया गया था। लड़के पढ़ें, खेलें या टाईम खराब करें। लड़कियों को तो घर पर ही रहना होता

था। वड्डे के काम के बारे में बात होने लगी थी। नतीजा हुआ कि 1957 में रणधीर ने परीक्षा ही नहीं दी और 1958 में बारहवीं में फेल हो गये। छोटा भाई सहपाठी बन गया।

इस बीच परिवार वापस गौर आ गया था। कालेज की छुट्टियों में घर जाते तो वहां वही आर्थिक तंगी देखते। घरवाले अपेक्षा करने लगे थे कि रणधीर भी कमाये और घर पर मदद करे। रणधीर भी कुछ करना चाहते थे पर उलझन में थे कि क्या करें? अपनी बचपन की इच्छा और इस समय नौकरी में विरोधाभास था। पर उनके मन में कोई असंतोष नहीं था। पिता बीमार रहने लगे थे। एक बार अखनूर में नौकरी की। वह पसन्द नहीं थी पर कर रहे थे। इस पर एक कविता भी लिखी है– ''नौकरी''।

– नौकरी –

रोज में वडलै, गौरा दा चलिए जन्दा अखनूर हा नौकरी गी
मिक्की पसन्द निही पर के करना नौकरी ही मड़ा नौकरी ही
टवरै दी रूट्टी टल्ले गितै–मानू मारिए इरस धन्धा करै
कोहलू दा वलद ए, इसै लेई जो मिलदा हसि ए वन्दा करै
ते रोज तरकालें में अपने ग्रां वल्ल चलदे जन्नां निरजीव ओईए
इक्क दिन मता गै हुटटे त्रुटटे दा वैईयां आनिए पत्तना पर
साथिये आखेया, करि लै उद्धम, थोड़ा सफर रैया धरतकर
आखेया चलो तुस, ऊनै में आयां, घड़ी पर करीलै मे रमां
सायां दा वक्कत हा, गरमी दे दिन हे, तन मन चाहन्दे ही थोडी बसां
पत्तना पर घनी वोड़ी दी छां दी ठन्डी हवां कन्नें झूल दी ही
नीन्दर मेरे कन्नें या कलावे, हुट्टना ने जिन्द ठुल्ली दी ही
सोचेया करी लैं छैल वसां में कन्नैं दन्ना अख मीटी में लैं vol-8,346

1959 में रणधीर फर्स्ट व छोटा भाई थर्ड डिविजन में पास हो गये।दोनों ने B.Sc.में दाखिला लिया। J&k में एक नियम था कि 12th, IIDiv. पास करने पर सरकारी लोन पर इंजीनियरिंग में जाकर Asst. Engineer बन सकते थे पर उन्हे कोई गाइड करने वाला नहीं था। अगर मालूम होता तो जीवन कुछ और ही होता। 1960 पिता की पोस्टिंग राजौरी में हो गयी थी। पूरे जम्मू क्षेत्र में यहां के लोग बाह्य आक्रांताओं के भय से कन्याओं को जन्म से ही दफन करते आ रहे थे। सैकड़ों सालों से भारत में प्रवेश करने वाले आततायी उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र से आये। हर बार युद्धों से पीड़ित राज्य में खून–खराबा होता था और हार–जीत लगी रहती थी। परदा और कन्या हत्या धीरे–धीरे आवश्यकता से परंपरा में बदल गयी। स्वतत्रंता के बाद भी यह परंपरा चालू रही। यह कुकृत्यमाता द्वारा ही किया या करवाया जाता था। इसलिये कुछ दशकों पूर्व तक परिवारों में कन्याऐं नहीं मिलती थीं।जो परिवार अपने पुश्तैनी स्थानों पर रहते थे वहां बड़ी–बूढ़ी, माता से यह दुष्कर्म करवाती थीं और जो परिवार बाहर शहर में रहने लगे उनकी कन्यायें बच गयीं।

नपुंसक क्रोध, परवशता, परिवार में हुए इस काण्ड ने रणधीर को अन्दर से हिला दिया था। ऐसा कांड घर में दूसरी बार हुआ था।रणधीर का उस वातावरण में रुकना संभव नहीं था। कुछ कर नहीं सकते थे तो पलायन ही अन्तिम विकल्प था। आवेश में घर से निकले तो कुछ करने के लिये देहली जाने का विचार ही मन में आया। देहली जाकर सोचने पर समझ में आया कि वे वापस उसी वातावरण में लौट नहीं सकतें हैं, दूसरे जीने के लिये उनके पास पैसे नहीं हैं। न तो कोई ठीया है, न खाना खरीदने के पैसे हैं। स्वयं ही स्वयं के लिये उत्तरदायी हैं। बीएससी के छात्र के पास कोई भी व्यावसायिक कौशल नहीं था। 2–3 दिनों तक काम ढूंढते, ढूंढते देहली में रणधीर ने एक दुकान पर सेल्समैन का काम करना शुरू किया और लोधीरोड पर एक कमरा लेकर रहने लगे। *(ये 2–3 रोज किस निराशा, हताशा और कुछ कर न पाने*

का क्रोध, पैर के नीचे जमीं नहीं और सर पर छत नहीं में बीते होंगे? एक सुरक्षित वातावरण से एकदम संसार सागर में बगैर संबल के कूद गऐ थे।) अपना खाना खुद बनाते और खाली समय में कर्जन रोड पर अमेरिकन लाईब्रेरी में पढ़ने जाते थे। मां के साथ रहकर व सहायता कराने से काम चलाऊ खाना बनाना सीख गये थे और पढ़ने का शौक काम आया। ऐसे में उनका अँग्रेजी प्रोफेसर बनने का सपना पूरा होना असंभव था। जैसा उस समय जम्मू समाज में सेना में जाने का प्रचलन था। कारण उस कंडीप्रदेश में ओर कोई धंधा नहीं था। छोटे भाई को तो I.M.A.& Navyकी तैयारी करा ही रहे थे। वह English और G.K. को पास नहीं कर पाया था। रणधीर ने भी सेना में जाने का मन बनाया। रणधीर Recruitment Centreगये और मालूम हुआ कि रणधीर के पास अपनी उम्र के अनुसार IMA, Navy and IAF की परीक्षा में भाग लेने का मात्र एक ही मौका है। रणधीर को syllabus के बारे में पता नहीं था और किताबें भी नहीं थीं। तब Nursing Degree College कर्जन रोड के नर्सों का elementary Physicsका ट्यूशन करने लगे और वे लोग पढ़ने की किताबें लाकर देते थे। रणधीर हमेशा से कितनी ही साहित्यिक गतिविधि में भाग लेते थे पर अपनी पढ़ाई के प्रति हमेशा सतर्क रहे थे। इससे प्रतियोगी परीक्षा में बड़ा फायदा हुआ। रणधीर तीव्र स्मरणशक्ति वाले होने के कारण किसी भी चीज को भूलते नहीं थे।

1961 में परीक्षा का परिणाम आया और IMA, NAVY & IAF तीनों की लिखित परीक्षा में पास हो गये थे। IAFमें सबसे ज्यादा और Nevy में कम नबंर आये थे। IAF में 23, IMAमें 69 & Navyमें 5, सीटें थी। इंटरव्यू में गये तो देखा बाकी सभी प्रतियोगी खूबHI-Fi,स्मार्ट, अच्छी अँग्रेजी बोलने वाले लड़के थे, और रणधीर तो उनके सामने 'गांवड़ेली' (गंवार) लग रहे थे। रणधीर को ज्ञान तो बहुत था पर अँग्रेजी बोलने में सलीकेदार नहीं थे। इन्टरव्यू में अँग्रेजी साहित्य और सामान्य ज्ञान से प्रभावित किया, शैक्सपियर और कीट्स मौखिक याद थे। और हर इंटरव्यू में वे

चुने जाते रहे। मैडिकल में भी पास हो गये। IAF & IMA में तो मेरिटलस्टि में थे पर नेवी में stand by list में थे। इस बार भी कोई गाइडेंस देने वाला नहीं था।

रणधीर मई 1961 में जम्मू लौट आये। छोटे भाई ने IAF का फार्म भरा और 83 पायलट कोर्स के लिए चुना गया पर मैडिकल में फेल हो गया, और B.Sc.में compartment आया। जून 1961 में एक ओर भाई का जन्म हुआ। रणधीर ने IAF 81 pilot course -- Air Force Flyingcollege Jodhpurको joinकिया। कारण, इसमें 250रूपये (Flying Bounty) ज्यादा थे। प्रथम सत्र में sergeant cadet बने पर दूसरे सत्र में फेल हो गये और जम्मू लौटना पड़ा।

तबतक चीन से युद्ध शुरू होने से रणधीर को, जो 31 IMA courseपास किये हुए थे और 81 pilot course में फेल होने से 32 IMA courseके लिये बुलवाया गया। सेना में जॉइन करते उससे पहले पुनः 23 NAV courseके लिये बुलावा आया और वही 250रूपये के कारण 1962 में IAF join की । इस समय तक घर की स्थिति और जिम्मेदारी का पूरा ज्ञान हो गया था।

1956 व 1960 में रणधीर की सौतेली बड़ी बहन को टी.बी. होने से जम्मू टी.बी. सेनिटोरियम में रखा गया और उसकी लड़की घर पर ही रही।

रणधीर का पॉयलट कोर्स में फेल होने के कारण थे–

1. His less aptitude
2. He used to vomit blood. But he hid this from IAF for fear of losing this course. He got himself privately treated by Dr. Minhas of Jammu, who diagnosed it as plurisy contacted from his step sister. There was a hole in his lungs.

4-कॉलेज के दिनों मे रणधीर ने काव्य रचना और कहानियां लिखना अँग्रेजी, उर्दू व हिन्दी में जारी रखा। ये रचनायें कॉलेज मैगजीन में छपने भी लगी। उर्दू में लिखी कहानियां, उर्दू पिरिओडिकल्स ''गीत'' और ''शमा'' में भी छपने लगी थीं। डोगरी में भी लिखना शुरू किया। उन दिनों मोहन यावर, वेद राही, आजाद, कश्मीरीलाल जाकिर व ठाकुर पुंछी से थोड़ी पहचान होने लगी थी। रामनाथ शास्त्री, मधुकर, वेदपाल दीप, दीनूभाई पंत अच्छे डोगरी साहित्यकार थे पर उनसे रणधीर की पहचान नहीं थी और वे लोग भी रणधीर को पहचानते नहीं थे। डोगरी संस्था की जानकारी नहीं थी। कारण हाईस्कूल तक वे राजपूत स्कूल के बोर्डिंग में रहे थे ओर जम्मू के लिए नये थे। कॉलेज में आने पर डोगरी वालों की जानकारी मिलने लगी।

1956 से 1959 तक तीन ऐसी घटनायें हुई जिनके कारण रणधीर ने उर्दू व अँग्रेजी छोड़, डोगरी को अंगीकार कर लिया।

- 1955में ''लिटरेरी ऐंड कल्चरल ऐसोसिएशन'',बनी जिसमें डोगरी,उर्दू व हिन्दी में ड्रामें व रचनायें पढ़ी जा सकें। रणधीर ने वहां जाना शुरू कर दिया। 1956 में गांधी भवन में डोगरी व उर्दू मुशायरा रखा गया। इस मुशायरे के संचालक, डोगरी के बड़े कवियों से संपर्क करने से घबरा रहे थे तो उन्होने शायर बालकृष्ण सागर को डोगरी संस्था में संपर्क करने के लिये भेजा पर किसी कारण से नामी शायर आ नहीं पाये। पर उर्दू के बड़े शायर आये। तब डोगरी की ग़ज़ल पढ़ने का जिम्मा रणधीर को मिला। पहली बार मुशायरे में भाग लेने का मौका मिला। सोलह साल की उम्र में डोगरी ग़ज़ल पढ़ी, थोड़ी दाद भी मिली। दूसरे दिन फत्तू चौगान में खड़े थे तब एक हंसमुख सज्जन आये,

पूछा– क्या कल गांधी भवन में डोगरी ग़ज़ल तुमने ही पढ़ी थी? उन्होने बतलाया कि वे तारा सेमलपुरी हैं।
''तुम्हारी ग़ज़ल अच्छी थी।''
'' आपकी मेहरबानी है।''
आपने बड़ी प्यारी लाईनें लिखी है।....

उनें दुख खदोलना छोड़ी दित्ता।
बूटा गमें दा ठोलना छोड़ी दित्ता।
अड़ेआ के होआ? मड़ेआ नर्थ होआ।
उनें साढ़ै नै बोलना छोड़ी दित्ता।

अपनी ग़ज़ल को किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा जबानी याद रखने और बोलने से वे अचंभित थे। तारा सेमलपुरी बोले, तुम इसी तरह अपनी आग को शब्दों में ढालते रहे तो जमाना एक दिन दंग रह जायेगा। उनकी इस सलाह व प्रशंसा ने रणधीर को अन्दर तक प्रभावित किया। सेमलपुरी, रणधीर की पीठ को थपथपाते हुए चले गये पर उस दिन, पीठ पर वह थपकी रणधीर के जीवन का अंश बन गयी। रणधीर ने निश्चय किया कि अब से वो हर मुशायरे में सुनने–सुनाने जायेगें।

- 1958 में रणधीर ने एक कविता ''भोली'' लिखी। लिटरेरी ऐसोसिएशन की संचालिका को दिखाई, उन्होने विष्णु भारद्वाज को दिखाई और ''क्यारी'' रेडियो प्रोग्राम के लिये रणधीर को पढ़ने के लिए प्रतिबंधित किया जिसके संचालक प्रोफसर राम नाथ शास्त्री थे।All India Radio, Jammuके ''क्यारी'' प्रोग्राम में रणधीर ने ''भोली'' कविता का पाठ किया। ''भोली'' कविता को बाद में वर्ष की श्रेष्ठ कविता चुना गया और 1960 में वह त्रैमासिक पत्रिका ''रेखा'' में प्रकाशित हुई।

शास्त्री जी को रणधीर की कविता बहुत पसन्द आई। शास्त्री जी अच्छा होने पर ही अच्छा कहते थे तो रणधीर को अच्छा लगा। रात दस बजे खुशी–खुशी घर पहुंचे। दूसरे दिन वेद राही, जिन्हे रणधीर जानते थे पर वे रणधीर को नहीं जानते थे, घर आये और ''योजना'' पत्रिका में ''भोली'' छापने की बात कही। इस सबसे रणधीर इतने उत्साहित हुऐ कि दर्जनों गज़लें और दसों कवितायें डोगरी में लिख दीं। चार कहानियां और दो यादें लिखी जो बारी–बारी से तवी, योजना, त्रिकुटा में छपी।

कविता– आह्लड़ा, भोली, जालोखाला, हिरखा दे गुंजल, पंडारी दा घर,जुगा दे राखे, झुसमुसा। यादां–दो किसतां,
कहानियां– डुसकदे चेते, रत्तो, दिब्ब रस्ते, इद्धर बी दिक्ख, मरेल्ली, पागल देवता ते, हिरख दा भार, खूना दे अक्खर

झुसमुसा कविता 300 लाइनों की थी। इस कविता को संसार चन्द्र बारू ने बहुत पसन्द किया और रणधीर के पिताजी को खुद ने जोर से पढ़ कर सुनाई। इससे पिताजी ने घर आकर बतलाया की उसकी प्रशंसा हो रही थी। कुछ लाइनें हैं.....

ए बेल्ला न्हेरे दा बेल्ला,
ते लोई दी छैल दुआरी,
इस बेल्लै लोई दे कन्ने न्हेरे/रलियै,
रूप त्रोंकन बारी–बारी।

- 1959 की शुरुआत में खलील जिब्रान की पुस्तक ''प्रॉफेट'' का डोगरी में स्वछंद कविता के रूप में अनुवाद किया। इसीके साथ ''कज़ा'' कविता को भी पूरा किया। सितंबर 1959 में एक प्रतियोगिता में चुने जाने के कारण सा. जे. एम. कॉलेज की पत्रिका ''तवी'' के अँग्रेजी व उर्दू विभाग के एडिटर बने। इसी के साथ अँग्रेजी विभाग के वाद–विवाद

सोसाइटी के सेक्रेट्री भी चुने गये। देहली में S.N. Das college द्वारा आयोजित –All India English Debate competitionमें भाग लिया।

1959–61 में उर्दू व अँग्रेजी विभाग की पत्रिका ''तवी'' का संपादन किया। डोगरी संस्था के मेम्बर न होने पर भी रामनाथ शास्त्री , रणधीर को हर मुशायरे में बुलाते थे।

उपरोक्त तीनों बातों ने रणधीर को बहुत प्रभावित किया और भविष्य का रास्ता भी तय कर दिया। अपनी कमजोर अँग्रेजी के साथ अँग्रेजी में लगभग दर्जन भर सॉनेट लिखीं। 1959 में एक मुशायरे मे रामनाथ शास्त्री की कविता ''रातीं दा खीरी बेल्ला'' सुनी और बड़े उत्साह में उस्ताद मोहल्ले में चरण सिंह के कमरे में डोगरी की ग़ज़ल लिखी जो वास्तव में प्रथम सॉनेट थी।

लोक सोचदे न

तुन्दे रूपा गी जोका केह् होई जा दा।
जेह्ड़ा दिक्खा दा उ'यै बतोई जा दा।
होर किन्ना बधाना ऐ लालचें गी,
उ'ऐं काफी ऐ जो मिगी थ्होई जा दा।
जेह्ड़ी गल्ल गलानी ही खोई निं ओह्,
जेह्ड़ा आखना निं उ'यै खोई जा दा।
उन्दी नांह् दा कियां बसाह् करां,
मूंडी ल्हाऽ दे कन्ने गै स्होई जा दा।
साढ़ा नांऽ निं लैन्दे को आलने तै
छड़े आखदे दिक्खो ओ कोई जा दा।
मेद हीखी दी मस्ती नै बिम्भली दी,
मन हिरखा शा हारियै रोई जा दा,
जिन्ना गेरने दी लोक सोचदे न
उन्ना उच्चा 'वियोगी' ऐ होई जा दा

1959A.D…. Read in Musharia in AJIB GHAR, published in Tawi as ex-student

डोगरी संस्था द्वारा युवराज कर्णसिंह के जन्म दिवस के अवसर पर रामनाथ शास्त्री ने एक मुशायरा रखा। नामी शायरों के साथ रणधीर सिंह को भी आमंत्रित किया गया। वहां रणधीर सिंह ने ''आलड़ा'' कविता का पाठ किया। अँग्रेजी ,डोगरी व उर्दू में लेखन चालू रहा।

5 अक्टूबर 1959 में एक दिन चरण सिंह अपनी लिखी एक ग़ज़ल लेकर आये और अपना परिचय दिया। उसी साल कालेज में प्रवेश लिया था। समय के साथ दोस्ती पक्की होती गई। वह डोगरी संस्था का मेम्बर था। रणधीर तो डोगरी संस्था के सदस्य नहीं थे पर राम नाथ शास्त्री हर मुशायरे में आमंत्रित करते थे। रणधीर, पदमा शर्मा और चरण सिंह तीनों लगभग 18–19 साल के होगें, मुशायरे में बच्चों के समान बैठते थे। चरण सिंह की पढ़ाई में कोई रुची नहीं थी और किसी फंक्शन या एक्टिविटी में भाग भी नहीं लेता था। पदमा परिवार पर ज्यादा घ्यान देती थी। रणधीर ही खेल, student union, संपादन, ड्रामा, डिबेट,आदि साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेते थे। अब ओर बीस ग़ज़ल, कुछ कहानियां, कवितायें लिख दी थीं।
1962 में तवी में दस ग़ज़ल प्रकाशित हुई। ट्रेनिंग के दौरान भी लगभग 193 पृष्ठों का एक उपन्यास, ''हिरखे दी भरमाली , कज़ा

लिखा और रामनाथ शास्त्री जी को दिखाने की इच्छा से हस्तलिखित स्क्रिप्ट को, 1.चुसमुसा, 2. जुगा दे राखी, 3. पिंडारे दा घर, 4.फरिश्ता(translation),5. कज़ा(मन मना दे मामले), 6. डोगरी सॉनेट, 7. तीन डोगरी कहानियां, 8. हिरखा दी भरमाली(उपन्यास) चरन सिंह को भेजी जिसकी कोई कॉपी नहीं रखी। इसके बाद –

श्री प्रशान्त जी ने ''रेखा'' में ''कज़ा'' को प्रकाशित किया और रामनाथ शास्त्री जी ने उसे उभरते कवियो व लेखकों में सर्वोत्तम कृति बताया। शास्त्रीजी की इस प्रशंसा से रणधीर गद्गद हो गये और चरन सिंह को बाकी सभी रचनाओं को शास्त्रीजी को देने को कहा। शास्त्रीजी तक रचनायें न पहुंचने पर बार–बार चरनसिंह से कहा , पर चरनसिंह ने कहा अभी शास्त्री जी के पास पढ़ने का समय नहीं है। बाद में शास्त्रीजी ने बतलाया कि किसी ने भी उन्हे यह सामग्री आज तिथि तक दी नहीं है। 1962 के दौरान श्री केहर सिंह ''मधुकर'' को कवितायें और ग़ज़ल भेजी, पर उनका उत्तर नहीं आया। 1965 में जब रणधीर सिहं जम्मू आये और चरण सिंह से मिले तो वह बोले कि वो रचनाओं में तो दीमक लगने से नष्ट हो गयी हैं। यह वाकया चरण सिंह और रणधीर की दोस्ती व डोगरी साहित्य के लिये एक झटका था। चरण सिंह को कुछ नहीं कहा पर रचनाओं की हानि आज तक रणधीर सिंह को कचोटती है। इस मुलाकात के दौरान चरण सिंह ने प्रोफेसर नीलांबरदेव शर्मा की पुस्तक "An introduction to Modern Dogri Literature" दी थी। प्राफेसर नीलांबरदेव शर्मा ने भी अपनी पुस्तक "An introduction to Modern Dogri Literature" में रणधीर को नये कवियों में सर्वोत्तम माना और वायुसेना में जाने पर भी साहित्य की सेवा लगातार करने का सुझाव दिया। पुस्तक

के परिशिष्ट में भी रणधीर के लेखन और सामाजिक अनुभूतियो की प्रशंसा की। यह रणधीर के लिये बहुत उत्साहवर्द्धक था। रणधीर द्वारा प्रकाशित रचनाओं जैसे भोली, आलड़ा, जालोखाला, हिरखा के गुंजल, मन मना दे मामले के बारे में कुछ नहीं लिखा, पर अप्रकाशित रचनाओं जैसे भंडारे/पिंडारे दा घर, फरिश्ता, का विस्तार में विश्लेषण किया। उपरोक्त दोनों कवितायें आज भी अनुपलब्ध है। श्री शर्मा ने बतलाया कि चरन सिंह ने उन्हे स्क्रिप्ट बतलाई थी और दूसरी कोई भी रचनायें नहीं बतलाई है। इस तरह रणधीर की रचनायें पुनः कभी वापस देखने को भी नहीं मिली जिसका दुःख उन्हे हमेशा सालता रहा। उसके बाद रणधीर जीवन की उलझनों में फंसे रहे और डोगरी की सेवा से वंचित रहे।

उपरोक्त घटना ने रणधीर को बहुत बड़ा आघात पहुँचाया। बाद में रणधीर ने चरन सिंह, ''मधुकर'' व शास्त्री जी को पत्र लिखे थे पर सिर्फ शास्त्रीजी ने उत्तर दिया, बाकी दोनों ने उत्तर नहीं दिया और इस घटना ने रणधीर को इस डोगरी साहित्य परिदृश्य से दूर कर दिया।

6. जीवन का दूसरा भाग आरंभ होने जा रहा था। एक तरह से ब्रह्मचर्य आश्रम अपने अन्तिम चरण में था और गृहस्थाश्रम आरंभ होने ही वाला था। जीवन, जीविकोपार्जन के लिये तत्पर था। जीवन के इस संधिकाल में मनुष्य को जीवन के प्रति जिम्मेदारी, आनंद और संपूर्णता की ओर अग्रसर होने का अवसर था। जिज्ञासा, परिपक्वता के विकास से जीवन की सार्थकता की ओर प्रयाण था। अपने घोंसले से बाहर आकाश के

विस्तार में अपने को खोजना था। जन्म से मिले मूल्य, संस्कार आदर्शों, इच्छाओं के प्रांगण में पौध को पनपाना था। आकांक्षाओं, अपेक्षाओं में सन्तुलन से अपेक्षित परिणामों को पाने का उद्यम करना था। कठोर परिश्रम काल था। उद्देश्य, उत्साह, ऊर्जा से जीवन की कठिन पथरीली पगडंडियों को सरल बनाना था, अस्त्र–शस्त्र के नाम पर था – बुद्धि, स्मृति, आत्मविश्वास, धैर्य, साहस, पुरुषार्थ, और जुनून। नये आगामी जीवन में शारीरिक शक्ति से अधिक महत्वपूर्ण है मानसिक शक्ति, मानसिक कौशल विन्यास। जीवन युद्ध कौन लड़ेगा? अस्तित्व का प्रतीक– शरीर, एक बलिष्ठ शरीर और मन। चरम प्रेम और चरम संतुष्टि के लिये आवश्यक है ''साक्षीभाव'', निरपेक्षता।

जीवन के इसी संधि काल के प्रवेश द्वार पर है–'' कुंवर रणधीर सिंह''।

स्वागत है! हे प्रिय कान्त!

7. 1962 में छुट्टियों में रणधीर सिंह घर आये हुए थे और पम्मी को पहली बार एक फंक्शन में देखा था। देखते ही लगा ,वह उसीसे शादी करेगें, और छानबीन करते, दीवानों के समान कालेज के चक्कर लगाकर सब पता किया और अपने माता–पिता को अपना निर्णय बतलाया पर उन्होने इतने बड़े घर की लड़की के यहां रिश्ता भेजने के लिए मना कर दिया। रणधीर को पसन्द आने वाली लड़की, जॉइन्ट कमिश्नर हीरा सिंह जाम्वाल की

सबसे छोटी पुत्री व प्रथम महावीरचक्र विजेता ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह जाम्वाल की भतीजी, प्रेम जाम्वाल थी,जिसे प्यार से पम्मी कहते थे। जो उस समय बी. ए. कर रही थी। उसके माता पिता दोनों की मृत्यु हो चुकी थी। तब रणधीर खुद ही उसके बड़े भाई से मिले, उन लोगों ने कुण्डली मिलाने को कहा। रणधीर की कोई कुंडली ही नहीं थी। बहुत कहने पर मां ने प्रेम की कुंडली मंगवाई और मिलान के लिए बात की। कुंडली आ गई। कुंडली मिल ही जावे इसके लिए रणधीर खुद ही कुंडली लेकर पंडित के पास गये बोले– ''मेरी कुडंली नही है, आप ऐसी कुंडली बनावें जो इस कुंडली से मिल जावे।'' थोड़े पैसे देने पर वह मान गया, और रणधीर की कुंडली बन गई। सारे गुण मिल गए। पंडित ने पम्मी की कुंडली की ही कॉपी करदी थी। सब आश्चर्यचकित थे पर मां सब समझ गई थी, अब किसी को भी मना करने का कोई कारण नहीं था और उनकी सगाई हो गई। मां–बेटे का संबंध सूत्र यहां और पक्का हो गया।

छोटे भाई ने टीचर की नौकरी शुरू की थी। 1963 में रणधीर ने छोटे भाई को सेना भर्ती का फार्म भरवाया और थोड़ी कोशिश से उसने 34IMA Course पास कर लिया। इस बीच चीनी युद्ध की आहट शुरू होने से उसे 1st Emergency Course of OTS Madras, Jan 1963 में मौका मिल गया और जून 1963 में कमीशन् मिल गया।1963 में ही रणधीर को भी मार्च 1963 मेंIAF में कमीशन् मिल गया।

पिता ने अपने जमाई को गबन के आरोप से बचाया था व सारा पैसा रणधीर की मां के गहने बेचकर चुका दिया था पर पुलिस इन्सपेक्टर के कर्तव्य के प्रति कोताही करने और खराब स्वास्थ्य के कारण निम्न पद पर रिटायर का दिया गया था। पिता को डायबिटीज, bleeding stomach के कारण बार–बार अस्पताल में भर्ती करना पड़ता था। बड़ी बहन पिताजी को इन्सुलिन देना सीख गई थी। माता–पिता ने बड़ी लड़की के लिये

क्लर्क स्तर का लड़का देखना शुरू किया था पर बात बन नहीं रही थी।

उस वक्त –रणधीर को मूल वेतल 475 + अलॉउंस 50 +फ्लाइंग बा. 250रू व कटौती– 100 इंश्योरेंस +250 मैस बिल + 250रू घर भेजना था। स्वंय के रोज के खर्च व यूनिफार्म के लिये केवल 175रू बचते थे। इस तरह महीने के आखिर में बचत शून्य होती थी।

छोटे भाई की पोस्टिंग पहाड़ी क्षेत्र में होने से.... मूल वेतन 450+ HILL allowance 50रू+ राशन फ्री था, घर पर 200रू भेजता था। स्वंय खर्चे के लिये 300रू रखता था। पिता, दोंनों के हिंसाब को समझ नहीं पा रहे थे और असंतुष्ट थे। कारण, 1963 में परिवार अच्छी स्थिति में नहीं था।.....

मां..... बीमार और पिता की देखभाल करती थीं
पिता..... बीमार और रिटार्यड थे।
सभ्यता.... बी.ए.(1)
ललिता .... 11 कक्षा
बलबीर..... 8 कक्षा
सरिता..... 6 कक्षा
जगबीर..... 2 कक्षा
मगधेश.....1.5 वर्ष

सौतेली बड़ी बहन अपनी लड़की के साथ पंजाब चली गई थी।1963 जुलाई में छोटा भाई लेह में था और रणधीर श्रीनगर, 19 स्क्वैड्रन में थे और छुट्टियों में जम्मू आये हुए थे। एक रात रणधीर नीचे आंगन में और पिता छत पर सोये थे। लगभग रात दस बजे जगबीर छत से नीचे गिर गया, माथे पर चोट आयी थी और खूब खून बह रहा था। रणधीर ने कपाल पर रूमाल बांधा और जगबीर को उठाकर लगभग 2 कि.मी. दूर अस्पताल ले गये। कोई सवारी नहीं थी। सर पर टांके लगे और घर आऐ पर

दूसरे दिन मालूम हुआ कि हाथ भी टूट गया है, प्लास्टर बंधवाया। 22जुलाई 1963 को नेविगेटर्स की कमी होने से रणधीर को डयूटी पर बुलाया गया। तीन अगस्त को पिताजी का तार आया कि 1000/—रू भेजो, कारण जगबीर का हाथ गलत जुड़ गया है। अमृतसर लेजाकर ऑपरेशन करवाना जरूरी है। रणधीर का कोई बैंक अकांउट नहीं था और कमीशंड नौकरी को अभी पांच महीने ही हुए थे। समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। पैसों की तुरंत आवश्यकता थी और जेब में पैसे नहीं थे। अपनी बेबसी और लाचारी पर रोना आ गया। एक साथी ने वह तार देखा और 1000/— उधार दिये। जीवन में कभी उधार नहीं लिया था, पर उस समय लिया और पिताजी को भेजा। नवम्बर 1963 में पिताजी कोमा में चले गये और उन्हे SGMC Hospital में रखा गया । दो दिन की छुट्टी पर पठानकोट आये और रक्तदान किया पर वापस लौटने में 8 घंटे की देर हो गई। जिसके लिये रणधीर को AWOLमाना गया और summary of Evidence का आरोप लगा और 18 wingको इसके लिये लगाया गया।Western Air CommandAVM PINTO(AOC-IN-C)ने सबूतों के कारण रणधीर को फारिग किया।

मुसीबत कभी अकेले नहीं आती, सच है। F/O चटर्जी को पैसे नहीं लौटा सके तो उसने C.O.को रिपार्ट कर दी।पर खुद के C.O. ने gave him adverse report for bad money management and refused to confirm him.इसकारण सारे कोर्स मेटमई 1964 में फ्लाइंग ऑफिसर बन गये और रणधीर पायलट ऑफिसर ही रह गये। रणधीर को बड़ा आधात लगा था। रणधीर की कहीं कोई गलती नहीं थी पर मजबूरी ने प्रमोशन रोक दिया था। दूसरे, उधार कभी लिया नहीं था, पर लेना पड़ा और उसे चुकाने के लिये पैसे भी नहीं थे।

रणधीर को उधार की बहुत बड़ी सजा भुगतनी पड़ी थी, तब रणधीर ने अपना उसूल बनाया था कि अब जीवन में कभी उधार नहीं लेंगे। कमी में रह लेगें पर उधार नहीं चलेगा। आदमी अपना मान–सम्मान, आत्मविश्वास तक दाव पर लगा देता है। उधार आदमी को गुलाम बना देता है।उन्होने लिखा...

a. Mistake---I was sad; went to woods.Described the sensations and feelings. Felt elated. But mundane world called me. Had to go back. Left some coins. No body will pick them up. Express gratitude. Better ways to pay but wanted to do something ordinary for a change Realised. The place to do ordinary things is the crowded world. Was too lazy to go back to pick up the coins.

b. <u>The slavery of Debt---</u>

It is a. Merciless Master
b. Fatal enemy of saving Habit

The man who is bound in the slavery of debt is just as helpless as the
slave, who is bound by ignorance or by actual chains.
The accumulation of debt is a habit.
No scarifice is too great to avoid the misery of Debt.
Two types of Debt---
Debt for luxuries—is a dead loss.
Debt – In course of business- converted into assets.

8. अपनी परिस्थितियों का विश्लेषण और संश्लेषण का समय था। पम्मी से सगाई को भी काफी समय हो गया था। उसका ग्रेजुएशन हो चुका था। इसलिये अपनी बिखरी जिन्दगी को फिर से संवारने की सोची और एक अगस्त 1965 को विवाह हो गया। हनीमून के लिये गवर्नर की तरफ से आवास आवंटित किया गया। वे लोग शाही मेहमान तो बने पर थे तो फक्कड़ ही। खैर वे दिन अविस्मरणीय रहे। मशोबरा, शिमला घूमे।

प्रेम, जम्मू में मां के पास ही रही। नयी बहू को पीढ़े पर बैठा कर मां काम करती जाती और बातें भी करती जाती थी। सुन्दर सी बहू को देख–देख रामदेई अघाती नहीं थी। वड्डे के लिये खुश थी। रामदेई के लिए एक कविता समर्पित की गई.....

अमरदेई..... vol. 7 156

अमरो (वनै सत्त पुत्री वुड्ड सुहागन ओ)
अमर देई कर उसगी बुड्ड सुहागन माता)
जन्दी दरवार निं ते नां रख दी नवराता
ना श्रदा ने करदी ऐ तेरा जगराता
अनडर अमर देई भी वोली ओ विदमाता
के लिखनी ऐ कैं खोले दा तूं ए खाता
वेहल मिली विन्द घरा च नैईं तां ए नी पुछदी
विदमाता नैं दिखेया उसगी सुनिऐ उसदी
वोली हर इक्क रूहा दा में हसाब लिखां नीं
ते वोली ओ माता में आं इन्नीं पापन
लफजें कन्नैं किश चाली में करना वर्णन
घर ग्रहस्थी अन्दर में ऐसी पलचोई
याद मिगी परमेसर दी औन्दी निं कोई
नं गऊमाता मेरे हत्थें पेड़ा खन्दी
ओर कुसा नै दित्ता ओगी जेड़ा खन्दी
विदमाता किश हस्सी फी सन्जीदा वोली
अमर देई तूं सच्चें मोईये किन्नी भोली
लिखत ओई दी के तुगी दस्सी निं सकदी

सखत मनाई कीती दी ब्रहमा नै इसदी
में दस्सी निं सकदी जे तेरे वरके पर
में आपें वी पड़ी पढ़ी करी ओई नशावर
टव्वर जैसी सुच्ची पूजा कोई निं पूजा
करम एदे शा उच्चा ओन्दा कोई वी दूजा
सैई जा रामा कन्नें ए वरदान ऐ मेरा
दुनिया अन्दर भकत कोई सानी निं तेरा
अन्ग अन्ग विच्च नीन्दर उस दै आन समाई
सुत्ती सुत्ती आप महारी गै मसकाई
अमर देई ओ आवै वुड्ड सुहागन माता
जां जन्दी निं दरवार तें नां रखदी नवराता
नां श्रदा नें करदी ऐ तेरा जगराता

सितंबर 1965 में चीनी युद्ध आरंभ हुआ तो स्क्वैड्रन आगरा से बरेली शिफ्ट हो गई। प्रेम, बहनों व दो छोटे भाइयों के साथ, प्रेम के भाई उन्हे शिमला ले गये, ललिता व बलबीर जम्मू ही रहे। युद्ध में वायुसेना नें मात्र transportation का काम ही किया। युद्ध समाप्ति पर सब घर आ गये। रणधीर , प्रेम को अपने साथ ले जाना चाहते थे, पर पिताजी ने मना किया कारण, सामाजिक परंपरानुसार बहू तो घर पर रहती और पति नौकरी पर जाता। पर रणधीर की इच्छा देख मां ने कहा – वह ले जाना चाहता है तो ले जाने दो, यहां भी क्या करेगी? और ये दोनों बरेली आ गये।

प्रेम, घर की सबसे छोटी लाडली लड़की थी। सुन्दर थी और सुन्दरता में वृद्धि के उपायों में बहुत रुची थी। पढ़ाई के साथ डांस, ड्रामा, एक्टिंग, पेंटिंग जैसी hobbies थी। घर सम्हालना और खाना बनाना छोड़ चाय बनाना भी नहीं आता था। बीस साल की लड़की के हीरोईन बनने के ख्वाब थे। रणधीर और प्रेम के घरेलू वातावरण, आर्थिक स्थिति में बहुत अन्तर था पर घरेलू संस्कारों के अनुसार पति ही परमेश्वर होता है, का भी ज्ञान था, पूजा–पाठ में आस्था थी। जम्मू की परंपराओं और

आधुनिकता की सम्मिश्रण थी। लड़कियों को एक सीमा तक आजादी होने की सोचती थी पर अन्दर से ठेठ पारंपरिक जम्मू की महिला ही थी।

रणधीर जैसा हैंडसम, विद्वान और मुग्ध पति पाकर निहाल थी। और रणधीर तो उसकी सुन्दरता, कोमलता, उपर से अभिजात्य भाव, गंभीरता और अन्दर से चुलबुलापन, हंसी पर मंत्रमुग्ध थे। नवोढ़ा के नशे का सरूर सालों तक बरकरार रहा। रणधीर का, प्रेम के प्रति पूर्ण स्वीकार्यता, प्रशंसा भाव, विश्वास और समर्पण अनोखा था।

विवाह के बाद मौज मस्ती के बाद बरेली आये तो वास्तविकता और जीवन की कठोर सच्चाइयों से पाला पड़ा। रणधीर को तो ज्यादा अन्तर नहीं पड़ा कारण, वो तो हमशा से मैस का खाना खाते थे। पर अब जब क्वार्टर लिया तो उसके अनुसार रहना भी था। घर से कुछ भी साथ नहीं लाये थे। एक चादर थी जिसे दिन को बिछाया जाता और रात को खिड़की का परदा बनाया जाता था। रोज बाहर की चाय और बाहर का खाना एक मुसीबत था। इस मुसीबत के बारे में रणधीर ने कभी कोई बात नहीं की पर प्रेम को समझ आने लगा था कि ऐसा कितने दिन चलेगा। सहज स्त्री स्वभाव अंकुरित, विकसित हो रहा था। ''मेरा घर'' का भाव उभर रहा था। हनीमून में संजोये घर का स्वप्न विचारों में जगह बना रहा था।

पहली बार रणधीर बत्तीवाला ब्राण्डेड स्टोव लाये और चाय बनाने के लिये भगोनी आदि लायी गई। फिर धीरे–धीरे खाना बनाने का सामान भी आता गया। सच है––''आटे–दाल का भाव मालूम होना''। रणधीर को खाना बनाने का कुछ अनुभव रहा था। इसी के सहारे गुरू–शिष्य जोड़ी सीखती गई। अपने हाथ की

जली रोटी भी भूख में अमृत लगती है। सबसे कठिन काम था, आटा गूंदना और रोटी बेलना। नित नये दुःसाहसी प्रयोगों और असफलताओं से सुधार होता गया। जंगल में मंगल मनाते समय बीतता जा रहा था।

नवम्बर 1965 में स्कवैड्रन बरेली से आगरा लौट आयी। रणधीर का प्रमोशन दिसंबर 1965 को फ्लाईंग ऑफिसर पर हुआ और मार्च 1966 को फिर से ACTG. Flt. Lt. प्रमोट हो गये। 14 अप्रेल 1966 को तार आया कि मां नहीं रहीं। रणधीर को लगा कि पिताजी को कुछ हुआ होगा। प्रेम तब expect कर रही थी। जम्मू जाकर मालूम हुआ कि मां ही नहीं रही है, टिटेनस से मृत्यु हो गई है। 24 अप्रेल 1966 को पूनम का जन्म हुआ। घर में छोटे बच्चों की तरफ घ्यान में कमी होगी सोचकर जगबीर और मगधेश को अपने साथ आगरा ले आये। अगस्त 1966 में ही पिताजी फिर कोमा में चले गये। तब जगबीर और मगधेश को वापस जम्मू लाये। पिताजी नही रहे। रणधीर पन्द्रह दिन जम्मू में ही रहे और सितंबर में वापस लौटे।

sep. 4, 1940 - sep. 16, 2015

कुवंर वियोगी
रणधीर सिंह
कर्नल साहब, वड्डा
GroupCapt. Randhir Singh

9. अगस्त 1966 में आगरा आकर रणधीर को मालूम हुआ कि क्या हो गया है। सारी दुनिया ही उलट–पलट गई है। मां चली गई, वह मां ही नहीं थी जो रणधीर की भावनात्मक आधार थी, संबल थी। बचपन से ही रणधीर loner थे, मात्र साथी मां थी। बचपन से unsaid, undefined वेदना, पीड़ा थी। सकून का कोना मात्र मां का आंचल था। मां के सानिध्य में मौन भी बात थी। मां के पास बैठ बतियाना, सहायता करना, बच्चों को सम्हालना अच्छा लगता था। मां को अपने पति की उम्र ओर बीमारी और इतने परिवार की चिंता हमेशा रहती थी जो अनजाने

में अपने जयेष्ठ पुत्र तक पहुंच जाती थी। बाल आयु में मां को सांत्वना देना व हमदर्दी अनुभव करना, बालमन के अवचेतन में पचती जा रही थीं।

कुंवर रणधीर सिंह/वड्डे मियां/मियां रणधीर सिंह अब परिवार के मुखिया थे। सामाजिक परिपाटियों के अनुसार पगड़ी कुंवर रणधीर सिंह ने पहनी थी। पगड़ी पहनने का अर्थ यह है कि माता–पिता के सारे सामाजिक, आर्थिक व अन्य दायित्वों को स्वीकार करना है। जयेष्ट पुत्र ही अब घर का कर्ता–धर्ता होगा। सहोदर भाई–बहनों ने परंपरा के अनुसार ज्येष्ठ पुत्रको ही कर्ता–धर्ता माना। कुछ महीनों तक तो पूर्व में स्थापित व्यवस्था ही चली पर रणधीर के लिये अब दो घर हो गये थे। एक जम्मू में और एक आगरा में, जहां नौकरी थी। दो घरों की देख भाल, खर्चा सभी को मैनेज करना था। डयूटी पर चाहे जब आगरा से जम्मू जाना नहीं हो सकता था। बहनों की पढ़ाई के साथ शादी भी करानी थी, बलबीर को भी टैस्ट के लिये तैयारी करवानी थी। नियमित देखभाल के साथ गाइडेंस भी आवश्यक था। NDA के लिये उम्र हो चुकी थी। CDSकी तैयारी करवानी थी। सबको आगरा लाकर साथ रहने का निश्चय किया। पर इसमें भी कठिनाई थी। बच्चों के लिये जैसा भी हो फत्तूचौगान, पिता का घर था और आगरा भाई के साथ रहना होगा। एक सत्ता से दूसरी सत्ता स्वीकारने जैसा था। मुखर रूप से तो किसी ने विरोध नहीं किया पर under current एक विरोधभाव, अनिश्चितता, असंतोष था, जो स्वभाविक भी था।

रोना–गाना, आशा–निराशा में सब आगरा आ गये। प्रेम एक अलग ही वातावरण से आयी थी, उसे घर चलाने का अनुभव नहीं था और आदत भी नहीं थी। प्रेम का अपने पति के प्रति समर्पण , प्रेम, विश्वास, आस्था और कोई degree of freedom न होने से परिस्थिति के सम्मुख नतमस्तक थी। कोई भी परेशानी या असंतोष होने पर कहना, मात्र रणधीर तक ही

सीमित था। रणधीर सब देख लेगें। रणधीर की प्राथमिकता अपने पिता का परिवार था। रणधीर बहुत ही कोमल , विनम्र और स्नेही स्वभाव के थे पर अन्दर से फौलादी material थे। प्रेम व सहोदरों में तालमेल बना रहे यही उस समय की परम आवश्यकता थी, पर दोनों पक्षों में विचार, रहन–सहन और वातावरण बिल्कुल विपरीत थे। रणधीर ने अपनी और से सख्त होकर प्रेम से कहा था–तुम चुप रहो, जो भी कहना है मुझे कहना। परिवार उनकी प्राथमिकता है। जो जैसा है उसे ही स्वीकारना होगा। प्रेम एक खुद्दार महिला थी, पति को छोड़ पीहर नहीं जा सकती थी इसमें उसकी हेठी होती और रणधीर जैसे समर्पित प्रेमी से वह प्यार करती थी इसलिये ''तथास्तु'' कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। रणधीर की बड़ी बहन ज्यादा अनुभवी और सामान्य परिस्थिति में रहने की आदी थी। प्रेम ने अपनी सत्ता अपनी ननद को सौंप दी। रणधीर की कुल इन्कम नौकरी से ही थी। इन्कम का कोई अन्य स्रोत नहीं था। रणधीर जो भी वेतन मिलता प्रेम के हाथ में रख देते ओर उसी समय प्रेम , बहन को सौंप देती थी। इस वेतन में ही खाना, पढ़ाई और रोजाना का खर्चा चलाना होता था। जिसे जो भी चाहिये वह बड़ी बहन ही निश्चित करती थी, इससे अनावश्यक विवाद से सब बच जाते थे। महीने के आखिर तक सब ठीक से चलना चाहिये इसका भी ध्यान रखती थी। भाई बहनों को क्या दिलाना है, क्या अगले महीने दिलाना है, का ध्यान भी रखना होता था। इससे दो फायदे हुए। बहन द्वारा आवश्यकताओं में कमी–बेसी करने पर भाई–बहनों को कम अखरता था बनिस्बत भाभी के कमी–बेसी करने पर असंतोष होता।

When I took over the family it had nothing but poverty, superstitions, faithlessness, inferiority complex- poverty-low moral-a past filled with defeat and frustration and fear of defeat and deprivation in the very vital of every

individual's heart-- except my own .I have a very amorous nature but I have never been able to be flesh only.

परिवार के सब सदस्यों के लिये यह समय एक परिवर्तन काल था। इस turning point पर हरएक से संतुलन बनाये रखने की अपेक्षा थी। रणधीर भाग्यशाली रहे कि इस परिवर्तन काल से सबको खींच लाये। अपने आप के धैर्य, शान्ति और आत्मविश्वास से अपने आत्मीयजनों में ऊर्जा का संचार किया, उत्साह और संतोष का वातावरण बनाया जो सबके व्यक्तित्व विकास के लिये आवश्यक था। वायुसेना की बस्ती और फत्तुचौगान के वातावरण में बहुत अन्तर था। नये वातावरण में समायोजित होने में समय लगा पर बड़े भाई की छत्रछाया में नये वातावरण को स्वीकारना थोड़ा आसान हुआ। पूर्वानुभव, आस्था, विश्वास नये वातावरण में ढलने में बाधक बन रहे थे पर आखिर उबर ही आये।

There is a house that is no more a home
If you are lost enough to find yourself
The play things in the play house of the children
Think of the little things that gladden us

किशोरावस्था व वयस्कता के कगार पर खड़े बच्चे खुले आकाश की ओर आकर्षित हुए रहने, सोचने और जीने के तरीके में अन्तर आया था। नये आकाश में उड़ने के नये–नये प्रयोगों, अपने को सिद्ध करने और विकासशील होने के अनबूझे अवसरों को भुनाने का बिलकुल सही समय था। व्यक्तित्व विकास की नई आजादी के उपभोग की आर्थिक सीमायें थीं। उपलब्ध वेतन में ही सभी को जीना और आगे बढ़ना था। कर्ता की दिनरात यही उधेड़बुन

रहती थी। चादर छोटी थी, एक को ढांकते तो दूसरा उघड़ जाता था पर जैसे तैसे चल रहा था।

Poverty—stricken-what an apt phase.
How to Master Fear of Poverty---
a. Stop buying on credit
b. Gradually pay off debts
c. Save a package even if it is a penny a day
How much should we save?----
Saving account--- 20%
Living- clothes, Food, Shelter—50%
Education----10%
Recreation---- 10%
Life Insurance--- 10%
Total---------- 100%

वायुसेना की चमचमाती, स्मार्ट पोशाक घिसती जा रही थी, बदलने के लिये दस बार सोचना पड़ रहा था। " call on"को सीमित किया गया, उसमें भी खर्चा होता है। न आप जायेगें न कोई आपके यहां आयेगा। गिफ्ट लेने–देने का व्यवहार भी बंद कर दिया गया। पार्टियों में जाना बंद कर दिया था। कारण, ऐसी पाटिर्यों का खर्चा क्षमता से बाहर था। सभी सहकर्मियों के पास कार, स्कूटर थे, पर रणधीर साइकिल पर ही ऑफिस जाते थे। कुछ रणधीर को समझते और आदर भाव रखते और कुछ मजाक उड़ाते थे। रणधीर, दिये गये काम को अच्छे से अच्छा करते थे। पर चमचागीरी नहीं करते थे। कुछ ऑफिसर इसे ठीक मानते, आदर से देखते, कुछ अपनी हेटी मानते थे और परेशान करने , घुटनों पर लाने का प्रयास भी करते थे, पर नाकाम होते थे। एक कहानी –" The Ante Room" में देखी जा सकती है। बड़ी बहन के विवाह के लिये माता–पिता क्लर्क टाइप लड़के देख रहे थे जो रणधीर को पसन्द नहीं थे। मां, रणधीर को अफसर बनाना चाहती

थी, रणधीर के अवचेतन में भी शायद यही भाव था। इसीलिए अपने भाई बहनों को एक सम्मानजनक स्थिति तक पहुंचाना चाहते थे। पर बात बन नहीं रही थी। अच्छी शादी करने की सुविधा नहीं थी, दहेज देने की स्थिति में नहीं थे।

- Happiness of a family completely depends on the happiness of its man, because when the head aches, all the ...

पैसों की किल्लत, आपसी झगड़े, बहन की शादी न होना– अच्छा ऑफिसर लड़का ढूंढने में देरी, कई जमीनों के कोर्ट के झगड़े सभी परेशान करने वाले थे। कोई रास्ता दिख नहीं रहा था।

अपने इस तप और यज्ञ में मिलने वाली कठिनाइयों, चुनौतियों को जानकर , उनसे जूझने की क्षमता को विकसित करना होता है। यह सब अपने तप व यज्ञ के ईमानदार जुनून पर निर्भर करता है। चुनौतियों से रुकावटों के मूलतक जाना जरूरी होता है, साथ ही अपनी क्षमताओं का आकलन कर समाधान की आवश्यकता होती है। हर समस्या के कई विकल्प होते हैं, कई समाधान होते हैं। एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरे कई दरवाजे खुल जाते हैं। अपने वर्तमान को नियंत्रित करना होता है। अपनी सोच को बदलना या नई दिशा देनी होती है। यह सब करने के लिये व्यक्ति को अपनी समस्याओं / चुनौतियों को एक दर्शक के समान देखना चाहिये। उस विशेष वातावरण से हटकर देखना–जानना जरूरी है।

जीवन में आपको अपनी इच्छाओं व महत्वाकांक्षाओं के आधार पर समाधान करना होता है। कठिन परिस्थितियों से हताश होने की जगह साक्षीभाव से सोचना व समाधान निकालना आवश्यक है। रणधीर इसके लिये घर पर बिना बतलाये tracking पर चले जाते थे। जहां रणधीर अपने हर मानसिक हर्बे को जांचते परखते और धार पैनी करते। इसबार भी बगैर बतलाये रणधीर tracking पर चले गये। घर से दूर, निर्जन में अपनी

परेशानियों ,असफलताओ, समस्याओं को अपने पूरे आकार में देखने, परखने , संश्लेषण और विश्लेषण का मौका मिलता है, आदमी साक्षीभाव से सब देख–समझ सकता है। जीवन के इस हाहाकार में, जहां आदमी अपने क्षुद्र स्वार्थों के वशीभूत ,हैरान है परेशान है, वहीं एकान्त संजीवनी है। अन्तर्दृष्टि जागृत होती है, ज्ञानचक्षु जागृत हो जाते हैं।

अकेलापन दो तरह का होता है। एक–अकेलापन एक नकारात्मकता होती है। भीड़ में भी व्यक्ति अकेला होता है। अधूरेपन का एहसास, अपूर्णता की अनूभूति बैचेनी उत्पन्न करती है। अकेलेपन का प्रहार उसके निजी परिवेश पर होता है, जो वातावरण जीवन शक्ति देता था वह सिमट जाता है। बाह्य रूप से खुश पर आन्तरिक रूप से व्याकुल और बैचेनी होती है, मन के भावनात्मक पक्ष को बाधित करता है । आन्तरिक आनंद को बाधित करता है। भावों की अभिव्यक्ति बाधित होने से मन का कोमल व्यापार बंद हो जाता है। व्यक्ति शीर्ष पर होने पर या घर का मुखिया होने पर भी अपने मन के निजी कोमल भावों को अभिव्यक्त नहीं कर पाता है। यह घुटन मन को मथती है, जो व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती है। गुस्सा और चिड़चिड़ापन होता है, और इसे frustration का नाम देते हैं। गंभीर होने पर अवसाद मे परिवर्तित हो सकता है।

दूसरा–एकान्त में व्यक्ति अकेला होता है पर यह अकेलापन मन को सन्तुष्ट करने वाला होता है, यह सकारात्मक व constructive होता है। ध्यान में व्यक्ति लीन होता है तब एकान्त चाहता है, काम में तल्लीनता भी एकान्त मांगती है। एकान्त सृजनात्मक होता है। नये विचार प्रस्फुटित होते हैं, कई खोजों के कारण 'एकान्त' ही रहें हैं।

रणधीर जंगल में चार दिन रहे थे। वहां पर जीवन से असंतुष्ट, निराश, दुखी प्राणी से मुलाकात हुई।उससे पहचान हुई, जानकारियों का आदान–प्रदान हुआ। बहन के लिये एक सुराग मिला। रणधीर घर आये पर अचानक मिले सुराग से वह उस परिवार के मुखिया से मिले, उनके पुत्र के लिये बात की और अनायास ही बात बन गयी और बहन का एक आर्मी ऑफिसर से

विवाह तय हो गया। बहन की शादी के कुछ दिन पूर्व ही भाई की शादी भी करवायी। खर्चा किया सिर्फ 50 रूपये। आर्य समाज में शादी हुई, लड़की को मात्र एक जोड़े में ही लाया गया। एक आदर्श विवाह किया।

बहन की शादी में ससुराल पक्ष से तो कोई व्यवधान नहीं हुआ पर स्वंय के ऑफिसर की दुर्भावना से व्यवधान आया। रणधीर एक बहुत ही परिश्रमी, ईमानदार, वफादार अधिकारी थे पर कभी चाटुकार नहीं थे, आर्थिक तंगी जग जाहिर थी। कुछ अधिकारी तो उनके गुणों के प्रशंसक थे वहीं कुछ उनका मजाक बनाते और बुली(bully) करने का प्रयास करते थे। सभ्यता की शादी के समय ऐसा ही निम्न प्रवृति का एक ऑफिसर था जो रणधीर को घुटने के बल पर लाना चाहता था। हर वक्त अपमानित करना चाहता था, कुछ चाटुकर साथी भी साथ हो जाते थे। मैस के एक व्यक्तिको विशेष खाना बनाने के लिये हॉयर किया था पर शादी की रात वह गाायब था। रात को बड़ी मुश्किल से खाना बाहर से मंगवाया गया पर उसी रात लाइट भी बंद करदी गई थी। बहुत ही सहनशील ससुराल वालों के कारण जैसे–तैसे शादी सम्पन्न हुई। उस ऑफिसर ने पद की आड़ में जो किया वह बाद में सबको मालूम हुआ। पर यह अपमान, क्रोध रणधीर पी गये। थोड़े समय बाद सब अलग–अलग हो गये। कुछ साल बाद अचानक से मैस में वह आफिसर दिखा, पास आया, हालचाल पूछने लगा, बहन की शादी के बारे में पूछा, कैसी है?, इतने पर भी वह रुका नहीं , और ज्यादा बुली करने में उसे आनंद मिल रहा था। बोला..., तुम्हे मालूम है, मैने ही खानसामें को रोका था, मैने ही उस रात लाइट बंद करवायी थी, और हंसने लगा। वह भूल गया था कि बिल्ली भी कॉरनर करने पर झपट्टा मारती है। इतने दिनों से इकट्ठा गुस्सा अचानक बाहर आया। रम से भरी ग्लास उसके मुंह पर फेंक दी, शायद यह बहुत पहिले ही करना था।(story-THE ANTE ROOM)

If you are in Air Force and you are not ambitious; you do not mind a bit of humiliation – then your boss is powerless as far as you are concerned.

1970 में मझली बहन की एक इंजिनियर आर्मी आफिसर से शादी करवायी। शादी में खर्च के पैसे नहीं थे। प्रेम के जेवर बड़ी बहन को चढ़ा दिये थे। अब कैसे क्या करें? बहन की शादी तो आर्य समाज में नहीं कर सकते थे? सारा वेतन तो बच्चों की पढ़ाई, फीस, घरेलू खर्चों में खत्म हो जाती थी, बचत तो शून्य थी। माता पिता से तो कर्जा और जिम्मेदारी ही मिली थी। इस आर्थिक संकट से कैसे पार पायें तो नौकरी से उधार लिया और दिखाने के लिये कुछ जेवर दिये गये कि बहन जब लौट के आयेगी तब वो जेवर सुनार को वापस लौटा देगें। यह बात लड़के के पिता की जानकारी में ही होना था, पर उनसे बात हो नही पायी, बहन के लौटने पर सुनार को वह जेवर वापस दे दिये गये। पर रणधीर के लिये बहुत ही बड़ा दुख था। बहन के स्वसुर को बाद में सारी बात बतलायी और पुनः भविष्य में भर पाई करने की बात कही। पर रणधीर को मानसिक आघात लग चुका था। यह आघात रणधीर को जीवन भर सालता रहा।

रणधीर ने अपने जीवन में चार छल किये थे। पहला छल अपनी जन्म तारीख में करना चाहा था। दुसरा छल प्रेम से शादी के लिये नई कुंडली बनवाने का किया। तीसरा छल आर्थिक तंगी में सबसे छोटे भाई को एडमिशन हेतू किया था। पहिले तीन में किसी को काई नुकसान नहीं हुआ था पर मझली बहन की शादी में जेवर को लेकर जो छल किया उसका पछतावा रणधीर को जीवन पर्यन्त रहा, उसकी भरपाई करना चाहते थे। जीवनसंध्या में इसका जिम्मा अपनी पत्नि को दिया पर मझली ने अस्वीकार दिया।

10. सबसे छोटी बहन पढ़ने में तेज, बहुमुखी प्रतिभा की स्वामिनी थी। डिबेट आदि में भी खूब भाग लेती थी। नये वातावरण में रच–बस गयी थी। ग्रेजुएशन के बाद आसानी से आर्मी ऑफिसर से विवाह हो गया।

तीनों बहनों की पढ़ाई और अच्छे योग्य पात्रों से उनके विवाह से रणधीर का रोम–रोम तृप्त हुआ था। सबसे बड़ी जिम्मेदारी को पूरी क्षमता से मां–पिता की अपेक्षाओं से भी अधिक अच्छी तरह पूरा किया था। जम्मू से भाई–बहनों को अपने साथ लाने के प्रयास को नाते–रिश्तेदारों ने खूब कोसा था, हतोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। बच्चों के भविष्य से खेलना बतलाया था। बद दुआऐं दी थीं। पर अब जब भाई बहन धीरे–धीरे लाइन पर आ रहे थे तो उन लोगों के मन में प्रशंसा भाव आ रहे थे। इसलिए छोटी बहन की शादी मे आसानी हुई।

- He had broken all the fortresses of custom, tradition and rituals and was in the open. And very very vulnerable----------

बहनों की शादी के बाद मानसिक रूप से थोड़ी राहत मिली थी। पर आर्थिक रूप से अभी भी राहत नहीं थी। भाईयों को अभी पढ़ाना और नौकरी के लिये तैयार करना था। पिताजी के समय से चल रहे मुकदमें, जमीन के झगड़ों को आपसी बातचीत से settlement

किया, कारण रणधीर अपने ''हीरे तराशते''? नौकरी करते या पेशियों पर जाते? किसी तरह उन झगड़ों को कोर्ट के बाहर ही कम दाम पर निबटा दिया। दूसरा बहनों की शादी के लिये पैसों की जरूरत भी थी। इस सबके बीच एक दंश लगा अपने ही की तरफ से.....। क्या उसमें हमारा हिस्सा नहीं है? इतने बड़े परिवार को चलाने और योग्यतानुसार फलने–फूलने के अवसर प्रस्तुत करने, सीमित वेतन में एमने की टोपी मेमने को पहनाकर उन्हे उच्च शिक्षा देने, विवाह कराने और अफसर बनाने के जद्दोजहद में रणधीर अपना जीवन तो भूल ही गये थे। दिनरात मेहनत, मेहनत करते किसी तरह उबर रहे थे। महीने के खर्चे में ही सारा वेतन खत्म हो जाता था, विवाह के लिये अतिरिक्त पैसा कहां से आता? कहीं किसी से कोई सहायता नहीं थी। settlement में मिली अल्प राशि ही काम आयी थी। और.....

"Viyogi" keeps on toiling night and day,
And tells me why he toils at this rate?
He says, " I toil so that the world can say,
He is a man to watch and emulate.

A man to warm the cockles of the heart;
A man to melt the icicles of fear,
A man's man but a man apart word or pen,
An unprecedented man , without peer.

A man to hold against all the past defeat;
A man to take the present in his stride,
A man to get acquainted with and meet,
A man to follow as your future guide.

"My friend, I want the world to say of me,
Here is the man and such a man is he."

86 छेड़ो नेईं गल्ल ओह्कड़े अमुक्क बर्हे दी,
नाका–कशी जिस कीती ऐ जीने दे दर्रे दी।
नज़रें दी दुनाली चली ही मुद्धतां पहलें

आल्ली बी पीड़ बाकी प छरे–छरे दी।
पनछान करो जिंदगी दे ज़रे–ज़रे दी।
पीड़ै गी जिगरा आखदा –मौका निं खजायो,
तुस कस्सी लैओ मशक–मशक हुट्टे–हरे दीं।
जे जींदे–जी करगे, तुसें गी मंतका समझाग
केह् फायदा ऐ रीस करिए मोये–मरे दी।
'वियोगी' दी शखसीयत ऐ इक खुल्ली दी कताब
छपैल निं कुसा थमां बी खुट्टे–खरे दी।(vol 9 131)

आउट ऑफ कोर्ट सेटलमेंट से कम पैसा मिला , जिसपर एतराज किया गया, दुनियादार नहीं है का तमगा दिया गया। जीवन में यह सबसे बड़ा अपमान और धोखा अपनों द्वारा ही किया गया। पर रणधीर ने इस अपमान को पी लिया, किससे शिकायत करें? सब एक ही मां की सन्तान हैं परन्तु रणधीर पर मां का जो आरोपण हुआ दूसरे उससे वंचित रह गये। बच्चे बड़े योग्य होने पर,universalसत्य है कि वे अपने मां–बाप को कमतर समझने लगते हैं। यही रणधीर के चूजों के साथ हुआ। शायद यही कारण था कि रणधीर कभी भी किसी से कोई आर्थिक सहायता लेना पसन्द नहीं करते थे चाहे कितनी भी विपत्ति क्यों न हो?इसलिए.....

.

- He served them and quietly faded away from their lives

,

Till they needed him again.

- what I have done or tried to do or failed to do is here.

All

circumstantial evidence is present,

- It seems " how" of it is conspicuously absent.

- मिगी अपने आपै नैं नफरत होई गेई। अपनी सफेद पोश गरीबी कन्नैं नफरत होई गैई। पाई–पाई गिनने कन्नै नफरत होई गैई। जिंदगी दी खुत्तखानी कन्नै नफरत होई गैई। मेरा दिल बागी होई गेआ। मैं अपनी धीया दा पखपाती बनी गेआ। में ओहदै कन्नै सैहमत हा। हुन ओ वकत आई गेआ हा जेल्ले मेरी बच्ची

गी बी ओ चीजां थ्होन जेकड़यां मेरे गितै ते ऐशोआराम हियां अवो उदे गितै जरूरतां हियां।

- We will sup this meal with a spoon of sorrow
- Only staying with facts can lead one to any meaningful realisation of what is going on inside one's own self. When one stays with facts one is not gullible.

कामनाओं की पूर्ति न होना दुःख का कारण है। इससे विकल होना दुःख का प्रभाव है। दीन–हीन की तरह दुःख को सहना एक अभिशाप है। परन्तु उससे सचेत हो निवारण के लिये प्रस्तुत होना ही जीवन का वरदान है। विपदायें ही आदमी को अन्तर्मुखी चेष्टायें करने में प्रवृत्त होने में तत्पर करती हैं और अपने लक्ष्य को पाने के लिये अग्रसर करती है। नहीं तो साध्य अधूरा ही रह जायेगा।

विपत्ति हमेशा शिक्षाप्रद होती है, विपत्ति से उत्पन्न पीड़ा, आकुलता, छटपटाहट से सद्ज्ञान प्रकाशित हो सकता है। अपनी समस्या, विपत्ति को संपूर्णता में देखकर, जांचकर, विश्लेषण से समाधान खोजा जा सकता है। इसे पाने के लिये जिस साहस, सहनशीलता, धैर्य की आवश्यकता होती है, उसकी कसौटी मात्र दुःख है। विपत्तियों की तराजू पर जो अपनी सहनशीलता को तोलते है, वही अन्त में विजयी होते हैं। उन्हे ही इस संसार में सफलता मिलती है। यह दुःख का भाव जब सच्चे सुख की अनुभूति कराता है तो सुख लोलुपता मिट जाती है।

'' धरत–माता''

कैई बारी में कल्ला बैईऐ–सोचां सोची जन्नां
नैई लवदी कोई सेद न वेकल–नां अन्नां नां वन्नां
कैदी पीड़ ऐ, कैदी तृष्णा, जीवन सार ऐ के
जो जिन्दु पर भारू ओया कैसा भार ऐ के
जीन ऐ एसा वूटा, पीड़ां ए दियां हजारां पौड़ां
जिन्द ऐ धरती, पौड़ां तोसन ए दियां सगमी सौड़ा

बहनों की शादी के बाद रणधीर ने अपने जीवन का एक खाका(future-plan)बनाया जहां वे पहुंचना चाहते थे। जम्मू–कश्मीर की दुर्दशा से निजात पाने के लियेwild thoughtsआते थे। शायद कारगर हो जांये।

3 Chief aim- of the plan for achieving the main goals----

i. Study every thing available about J&K
ii. Study Indian history
iii. Study ancient Indian history
iv. Study Dogri texts
v. Write regularly in Dogri & English
vi. Write reviews
vii. Dr Karan Singh,Shaikh Abdulla, Mr. Charak, All Dogri writers, Bhim Singh,Syed Mir quasim, Shafi Kureshi, Tha. Baldev Singh
viii. Do LLB
ix. Save money-Live within means
x. Write to All India Radio Jammu about Dogri Programmes
xi. Gather material about my Thesis—
" A Case for Independent State of Jammu"

Xii. Keep Balbir, Jagbir, Magi on the high road of enthusiasm.

बलबीर की NDAकी उम्र निकल चुकी थी। अब अफसर बनने के लिये CDSपास करना जरूरी था। बलबीर मेधावी, स्वच्छंद प्रकृति औरshow-offमें विश्वास करने वालों में से था। घर की जैसी स्थिति थी, वह असंतोष ही पैदा करने वाली थी। रणधीर, अपने नाम के अनुरूप इस विकास युद्ध में धैर्य, स्नेह, कड़ाई और सतत अभ्यास, कठोर परिश्रम से दो बार के प्रयास से आखिर सफल हो गये। सेना में अफसर बना ही दिया। A dimond is a chunk of coal that made good under pressure,अनगढ़ पत्थर से हीरा तराश ही लिया। अपने स्वभाव के कारण बलबीर हमेशा

पैसे की तंगी में रहता था, जबकि परिवार का कोई दायित्व नहीं था। 1981 में उसका भी आर्यसमाज में विवाह कराया गया। उसकी पत्नी परिवार की सुन्दरतम महिलाओं में से एक है।काना– बंडा(vol.24- 96)

इस बीच रणधीर ने –

a. B.A.

b. Post Graduate Diploma in Business Management.

c. LLB. किया

B.Sc.(F)को नौकरी लगने से अधूरा ही छोड़ना पड़ा था, अतः आगे की पढ़ाई प्राइवेट ही की। पहलेB.A. किया फिर PGDMकिया।PGDM की शाम को क्लासेज लगती थीं पर व्यस्तता के कारण कभी –कभी ही जा पाते थे, साथ के लोग ईर्ष्या करते थे कि उन्हे यहrelaxationक्यों दिया जाता है। पर रणधीर के स्वभाव के अनुसार हमेशा से खूब पढ़ने से सामान्यज्ञान उच्च कोटि का था, साथ हीwhole to part observation and write every thing in pointsके कारण बहुत फायदा हुआ। और यूनीर्वसिटी में टॉप किया।LLB(labour law)भी किया। दोनों छोटे भाइयों के साथ बहुत ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी और वे बाद में सेना में ऑफिसर बने।

इस तरह एक **मिशन** पूरा हुआ। मिशन था PPLR याने पीछे–पीछे लगे रहो..... IAFमें प्रचलित वाक्य। मां से किया वादा पूरा हुआ, इस वादे को पूरे तन–मन से निभाने के लिये घोर तप किया और परिणाम में सब हीरे मोती बन निखरे, यही परम संतोष का विषय था।

तप

पसरें दें धने आन्गु चो ने जोगी ओई दी
अठ भ्रा ते भैना अस हे में सवने शा वड्डा

मात पिता जदूं सुरग सधारे अस हे ठिड म ठिड़ा
अस वेसमझे, ते वेसहारा सयाने निक्के निक्के
लोक ए आखन असें ते खाने जिन्दु अन्दर धिक्के
नां घर कोठा, धेला पैरगनां गै चारदिवारी
लिखी दी साड़ी किसमत अन्दर दर दर खज्जल खारी
पर दाते दी मरजी दुनिया नां समझै नां समझी
नां मेरी हठ धरमी समझी नां मेरी मनमरजी
मेरी नरम तबीयत अन्दर उने फौलाद नी दिक्खी
आखन करग लखारी के के ओ जानन नी मिक्की
पन्द्रह साल में तप जप कीता करिऐ उन्नी ईखी
अज्ज वने दे उऐ वच्चे अफसर घर गृहसती
ते पन्द्रह साल दै बाद में वैठा मगन नखिद्दी सोचे
इक्कलापन किश जीव पाये दा वड़ा पी जिद्दी सोचें

vol-8, 247

- SUCCESS---------
    1 you can do it if you believe you can.
    2 Humility is the fore runner of success

Success is development of power with which to get whatever

One wants in life without interfering with the rights of others.

Two great indicators of success are---

1 Habit of systematic saving of money
2 sexual urge

- Do not tell the world, what you can do---- show it.

The best compensation for doing things is the ability to do more.

- Any one can start, but only the thorough bred will finish.
- Life is made of timeless moments rather than moments of Time.
- Today was unborn yesterday and it will die tomorrow.
- Today is a bridge between Yesterday and Tomorrow.

- GOD asks no man whether he will accept life. That is not the choice. One must take it. The only choice is HOW?

11. 25 से 45 वर्ष की उम्र मनुष्य के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण होती है, युवा इस संसार में प्रवेश करता है, अगले पूरे जीवन का आधार , रूपरेखा और गति निश्चित होती है। नवयुवा के लिये जीवन के आनंद, उपभोग का यही समय होता है। बाद के जीवन में कितना ही धन क्यों न हो यह स्फूर्ति, ऊर्जा, उत्साह, उद्दाम वासनाओंका जन्म इसी उम्र में होता है। ऐसा नहीं है कि बाद में ये नहीं रहते, रहते हैं पर जीवन के अच्छे–बुरे अनुभव,(maturity)परिपक्वता इसके प्रचंड प्रवाह को सीमित कर देती है, ग्रहण लग जाता है। इन सबको छोड़कर यदि आदमी अपने किसी जुनून–उद्देश्य को पूरा करने लीन हो जावे तो यह... ''तप'' ही कहा जावेगा। इस ''तप'' से ही जीवन की कई धारायें प्रगतिपथ पर अग्रसर हुई और फली–फूली। रणधीर ने इन धाराओं को अनुशासित कर वांछित दिशा में गति दी, वांछित गन्तव्य तक पहुंचने तक। गन्तव्य पर पहुंचने के बाद बाह्य अनुशासन के स्थान पर आन्तरिक अनुशासन के लिये प्रेरित किया।

- The ocean of this life is bottomless,
  In victory or defeat, or stress
  Unmindful of our fear, strife or stress
  And if you want to cross it, Ply the boat
  Courage has no alternative, there may be defeat
  Never mind if there is no boat man.

1965 में प्रेम से विवाह हुआ और रणधीर का निजी परिवार भी आकार लेने लगा।

1. प्रेम .... जन्म..... 13–4–1944
2. पूनम.... '' .... 24–4–1966.... **विवाह..**
3. रश्मि.....'' 18–4–1968
4. शालू '' .. 15–9–1970 / 72

12. 1965 में जब रणधीर जम्मू आये तो बार–बार कहने पर चरनसिंह ने बतलाया कि उनकी रचनाओं को दीमक ने नष्ट कर दिया है। इनकी प्रति रणधीर ने नहीं रखी थी तो अब उपलब्ध नहीं है। रणधीर ने चरन सिंह को कुछ कहा नहीं पर अपनी रचनाओं की यह हानि उन्हें जिंदगी भर सालती रही। रणधीर ने उन रचनाओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया, पर असफल रहे। बाद में रणधीर ने श्री शास्त्रीजी, चरन सिंह और मधुकर को चिट्ठियां लिखीं पर केवल शास्त्रीजी ने ही उत्तर दिया। इन सब बातों ने रणधीर को बहुत ही असंतुष्ट कर दिया था। इस निराशाजनक अनुभव ने और घर–गृहस्थी के दबाव में रणधीर सुप्तावस्था में चले गये। इन 12–14 सालों में रणधीर किसी भी तरह के लेखन से दूर ही रहे। माता–पिता की मृत्यु और सारे घर की जिम्मेदारी, बच्चों को पढ़ाना और अपने पांव पर खड़ा करना, आर्थिक तंगी से निबटने में ही दिन के 24 घन्टे कम पड़ते थे। दिमाग हरवक्त जूझने में ही लगा रहता था। तब लेखन का विचार आना असंभव था।

लगभग 1964 से 1977 तक का समय रणधीर के जीवन का सबसे कष्टमय और मानसिक संतापों का समय था। परमात्मा वास्तव में रणधीर के धैर्य, आत्मविश्वास, परिवार के प्रति समर्पण

और जीवन स्तर को सम्माननीय स्तर पर लाने, जिंदा ताला–चाबियों का तिलिस्म, की परीक्षा ले रहा था। अपने इन्ही कठिन अनुभवों को याद करते इस काल में रणधीर का साहित्य सृजन लगभग नहीं के बराबर था। आम भाषा में इसेwriter's blockकहा जाता है।

1977 में जब उनकी परिस्थितियों में थोड़ा सुधार हुआ तो वे अपने को रोक नहीं पाये और श्री शास्त्रीजी के पास गये और अपनी डायरी, रजिस्टर उन्हे दिये। 1978 में उन्होने ओम गोस्वामी से परिचय करवाया। यह डोगरी साहित्य में फिर से प्रवेश हो सका था। शास्त्रीजी ने कोई रुचि नहीं दिखाई तो रणधीर ने निश्चय किया की उन्हे गीत, कविता, ग़ज़ल, सॉनेट लिखना अच्छा लगता है तो वो लिखते रहेंगें । अभी नही, पर अगली पीढ़ी उन्हे पहचानेगी। रणधीर ने अँग्रेजी और डोगरी मे लेखन चालू रखा। अँग्रेजी व डोगरी में लेख, कथा, उपन्यास, कविता, सॉनेट, रूबाई लिखते गये।

रणधीर मानते थे कि.....

- 1.Make your own nests
  2. Take care of your own problems
  3. Establish your own value systems,
  4. rules and conventions
- And if there had been mistakes of focus in the first stage, some diversions, well, they could have been useful, because we can learn from our mistakes.

13. 1978 तक उनके गृहस्थ जीवन का लेखा–जोखा तैयार हो गया था, भविष्य की रूपरेखा भी आकार लेने लगी थीं। भविष्य में घर बनाने की संभावनायें लगभग खत्म हो गयी थी। उन दिनों लोन भी आसानी से नहीं मिलता था, मिलता भी तो

ऊँची दरों पर मिलता था। उनका अपना कोई प्लाट या जमीन–जायदाद कुछ नहीं था। हनीमून के समय संजोये घर का सपना, सपना ही रहने वाला था। हर व्यक्ति अपना घर, चाहे छोटा ही हो, चाहता है। एक परमानेंट ''पता'' पाना और अपनी संतान को देना चाहता है। जीवन की कितनी भंयकर त्रासदी है कि आदमी का अपना पक्का ठीया न हो। रिटायरमेंट के बाद कहां रहना होगा? क्या किराये के मकान में ही रहना होगा? अब सपनों का घर सपने में ही होगा।

ऊर्जावान, उत्साही, आत्मविश्वास से भरपूर, हर समस्या का हल निकालने वाले व्यक्ति के सम्मुख यह सच्चाईयां मुंह बायें खड़ी थी। यह समझ, हार का आभास देने वाली थी। निसंदेह यह चिंता का कारण थी। घोर मानसिक संताप का निवारण होना जरूरी है। ऐसी परिस्थितियां, सकारात्मक सोच वाले आदमी को आध्यात्म की ओर मोड़ती है। चारदीवारी का मकान 'घर' न होकर वसुधैव कुटुम्बकम का विचार पुष्ट होने लगता है। निजी संपदा से विस्तार लेती संपूर्ण सृष्टि ही अपना संसार बन जाती है।

स्वगत शोक से विश्वशोक व स्वगतआनंद से विश्व आनंद की यात्रा अनायास ही हो जाती है। संवेदनशील कवि को बाह्यदुःख संसार के बंधन में बांधते हैं, वहीं देश–काल की सीमा में बंधी असीम चेतना का क्रदंन भी है। बाह्य व आंतरिक दुखों की अभिव्यक्ति गद्य में आसान होती है पर भाषा पर पकड़ से कवि ने पद्य में भी उतनी ही सरल. सहज अभिव्यक्तिकी है। अलंकारों का ज्ञान न होने पर भी कबीर की मानिंद उपमा, उपमेय, शब्द, अर्थों की भी अभिव्यक्ति अनुपम है। देश–काल का पुनः सर्जन, गोचर साक्ष्यों से अगोचर सत्यों तक पहुंचा देती है। इसी काल में वे कवि रणधीर सिंह से ''कुवंर वियोगी'' बन गये।

स्वंय के विस्तार से ''मै'' की जगह ''हम'' स्थापित होना आरंभ हो गया। सदा जूझते रहने, दुःख, पीड़ा ने वैराग्य को जन्म दिया।

उपनाम वियोगी.....

यह सोचने का विषय है कि रणधीर ने अपना उपनाम 'वियोगी' क्यों रखा? एक वायुसेना अधिकारी ने जो एक बड़े परिवार का मुखिया था, अपना नाम 'वियोगी' क्यों रखा?

He used this pen name "Viyogi" in 1975. Used the word "Viyogi" in the sonnets written in --1976. Basically he was a loner in a crowd. He liked his mother's company more than the company of other boys. At the age of 26 he became the head of a big family. He looked after his brothers and sisters whole heartedly like a father, with his full strength and capacity, to prove his words, said to his mother.

One, who is at the top of any institution, job, is always lonely. There is no one to share one's worldly difficulties, situations, problems, not even to one's spouse. In this type of situation a sakshi bhav to see the happenings, with detachment developed to see the things straight. For this, the key word is—VIYOGI.

VIYOGI.
The word ' Viyogi' means one who burns
In the fires of separation. Pseudonym
Is apt. What he gets, he returns
To condescending world. Synonym
To all he lacked in life is this world,
Befitting every moment, every clime,
When by your presence he is deeply stirred/
He burns for that denuded loveless time,
Which luckless moments gifted to construct.

Unchallenged claims of love. When alone
He longs to hold you closely and about
Your most fragrant person make his own.
'Viyogi' means a person who burns,
With you and without you , turn by turn.

इस आध्यात्मिकता का लाभ रणधीर को ही नहीं वरन् डोगरी साहित्य को भी भरपूर मिला। सर्वप्रथम विचारों का प्रकाशन रूबाइयों के माध्यम से हुआ। खलील जिब्रान की रूबाइयों को डोगरी में ट्रॉन्सलेट किया था और इसीसे प्रभावित हो विधा ''रूबाई'' उनके संप्रेषण का माध्यम बनी। विचारों का प्रचंड वेग 28–2–77 से 6–3–77 तक अनवरत 340 रूबाईयों के रूप में सामने आया। विचारों की गति इतनी प्रचंड थी कि एक बार शुरू करने पर अंत तक पहुंचना ही होता है। कृति का नाम है–''घर'', कब? कैसे? किसका? कौनसा? किस के लिये? –''घर''। यह अनोखी, अप्रतिम, अमूल्य कृति बेजोड़ है। घर.....

रणधीर द्वारा लिखित पुस्तक ''घर'' को बहुत सराहा गया था। ये मुझे समझाते थे कि 'घर' कैसे लिखी गई थी। उनको आइडिया कैसे आया? जब एक जोड़ा बनता है तो अपने घोंसले के बारे में सोचता है। अपने भावी परिवार के लिए सोचता है। घर कैसा होगा? एकान्तिक विचार और परिस्थितियां ऐसी बनी थीं कि भविष्य में अपना घर बनाने का सपना टूट गया। चालीस पार होने पर आदमी के पास इतनी उर्जा और शक्ति, धनार्जन की क्षमता नहीं बचती कि वह घर बना सके, कारण, अपनी तीन लड़कियों का भविष्य भी देखना था।

आदमी जब कठिनाइयों, आपदाओं से त्रस्त हो जाता है, तो वह आध्यात्मिकता की ओर मुड़ जाता है। आकांक्षाओं के बाधित होने से मन आत्मदर्शन की ओर झुकता है, जो है उसी

में संतोष कर मन को समझाता है। ''घर'' क्या है? चारदीवारी ? 'घर' नहीं है, तो घर क्या है?..... उत्तर है , पुस्तक ''घर''।

HOME

A home is like a temple, diocese
And from its bowels men are outward hurled
To tackle fangled fury of the world
And opportunities, made and seize
With witlessness or with skilful ease
Like unrestricted giggling flight of geese
Or sauntering doggedness of mighty horns
Who give and take the blows, as they please.
And bleeding, from ancient's girding lions
Return to waiting homesteads in the end
Where families, lick their wounds. give release
From vigilance and caution and extend.
Exhort them to for the moment cease
To delve in world affairs – live in ease.

घर, दरबदर होई जाने दे डरै दी देन ऐ,
डर ते–दर–बदर होने दा पर घरै दी देन ऐ।

रणधीर के शब्दों में.....वर्ष 1965, शिमला में हमारे हनीमून के समय हमने सोचा था कि हम जम्मू में एक घर बनायेंगे जिसमें ऐसा ही कुछ गवाक्ष होगा। पर अब 1978 में हम दोनों को मालूम है कि ऐसा नहीं हो सकता है। भविष्य के दूसरे कामों के बाद अब ऐसा सोचना असंभव सा है।

HOLY CASTLE

Under the same Gazebo , in 1965 A.D
We spent a few moments of our honeymoon baby.
And dreamt that in some future day in Jammu
We will build a house which shall have one such Gazebo.

And now in 1978A.D. my sweet baby
We sit and know that it can never be,
One moment was so heady and enthralled,
That castles thin built by both of us,
What castles were then built by both of us
The moment was so heady and enthralled
By future prospect but now in mute distress
We look at life time-ravaged and made bald
And lacking so completely the caress
Of love. And feeling and appalled.

कुवंर वियोगी के अनुसार.....तुमसे मेरा प्यार कुछ लेना नहीं, तुम्हे देना चाहता है और तुम्हारा प्यार भी मुझ से कुछ पाने की जगह देना चाहता है। प्यार में देना–पावना न होने से जब भी तुम्हे देखता हूं तो एक अग्नि भड़क उठती है। तुम नदी के समान बहती रहती हो, हमने आवश्यकता से अधिक पाया और एक दूसरे को दिया है, हमारी कोई अनोखी महत्वाक्षांयें भी नहीं है। इसलिए लगता है जीवन में सब ठीक ही है।
मै जानता हूं कि अब घर बन नहीं सकेगा, पर फिर मैंने अपनी पूरी शक्ति से कोशिश की, बार–बार कोशिश की पर कोई नतीजा नहीं निकला। मेरी सारी शक्ति चुक गई, मेरी मेहनत बेकार हुई। जानता हूं मेरा यह हार मानना ठीक नहीं है तो मैने हवाई महल बनाना शरू कर दिया। बच्चों ने भी पूछा –घर क्यों नहीं बनाते हो? जिसका उत्तर नहीं था।

BUILD MY CASTLES IN THE AIR

Once I tried to walk my dreams
And put my mind to only flesh and bone.
And overt physicality's of schemes,
But after a few steps, I fell down.

All my muscles, sinews, nerves and will,
Were powerless to put me on my feet,
I tried and tried and tried and tried but still,
I found myself squarely on my seat.

All my efforts, having all my sweat
Which I had pre-invested were futile
But I had learnt that frustration and fret
Are never helpful even for a while,

Hence I started dreaming then and there
And bent to build my castles in the air.

Makan (House)

But men labour under a mistake. By a unanimous consent for what is commonly called necessity. Somethings are really necessities in some circles which in others are luxuries merely and in yet others are absolutely unknown.They are employed in laying treasures which moth and rust will corrupt and this even break things and steal. They are digging the graves of the future relations between their heirs.
Like you should not tempt an employee by letting valuables lie around.
It is good to win disapproval by not providing them to provide fuel of fine discord among your children.
It is a fools' life, as they will find out when they get to the end of it, if not before.
House building involves without fail -lying, flattering, voting, contracting yourself in nutshells of civility, and almost always bribing. One makes oneself sick in trying to build something on a sick day.

1.Comparison of Houses
2. Examples of Defence officers
3. Example of Col. Katoch

4. Brothers asking me to buy- they are afraid, I may trespass
their property.

People do not aim at what is respectable but at what is respected.

My own family opposes my enterprise and my ideas. What keeps them throwing me out is their dependence on me. But What is the guarantee that they will not throw me out from the new house when they are no longer dependent on me.

14. पहली और अन्तिम बार 21–2–78 को बच्चों के लिये कवितायें लिखी जो कुछ इसतरह है।...

An effort to compose a poem for my daughter Poonam ,
which ended in confusion
With profusion—Randhir

a. Bees hum—violins trump,

I say mum_ quickly come,

Lizard's hiss -Mynas kiss,
I say miss- Look at this,
- Do not miss

Parrot Talks- peacock walks,
Leopard stalks- Fortune mocks,

Lovely cakes- Mama makes
Papa Bakes- And Rashmi talks

On the river- People shiver,
God is giver- God is giver,

Sparrows fly- High and high,
Some are lovely- cry and cry,

Flowers sigh- I am shy,
What a guy- I say fie,

Wasps sting- bugs cling,
Flies sing- Ring-O-ring,

Flowers Bloom-like a groom,
I am watching- from my room,
Take a broom- Fret and fumes. vol. 3, 39

15. short plans in …APRIL1978-….87

i.There is one thing in the world that gives a man real and enduring power, and that is character, Reputation, bear in minds, is not character.

Reputation is that which people are believed to be, character is that which people really are.

ii. All any one really requires as a capital on which to start a successful career, is a sound mind, a healthy body and a genuine desire to be of as much service as possible to as many people as possible.

1978 से जुलाई 1986 तक का समय शनैःशनैः, मानसिक तृप्ति, संतोष, ठहराव आने लगा। एक–एक पैसे का हिंसाब रखने के तनाव में भी कमी आने लगी। आर्थिक रूप से थोड़ा आराम आने लगा। नौकरी में भी अच्छा काम करने से आत्मविश्वास और आन्तरिक प्रसन्नता में वृद्धि हुई। इसका सीधा असर साहित्यिक सृजनात्मकता पर हुआ।

उपलब्ध रेकार्ड के अनुसार 5–2–77 से 1983 तक का रचनाकाल विभिन्न विधाओं में बहुत उर्वर रहा था। ऐसा लगता है जैसे सरस्वती ही उतर आयी हैं। अँग्रेजी में लेख, सॉनेट खूब लिखे गये। डोगरी में तो हर विधा– कविता, कुंडलियां, दोहे, रूबाइयां, सॉनेट, लेख, कहानियां, उपन्यास, फीचर, पुस्तक समीक्षा के द्वारा अभिव्यक्ति हुई है। गीता, रामायण, कबीर,Eight Fold Path of Buddha, Nachiketa ,बाइबिल, कुरान, गाँधी, मातावैष्णव देवी, परमात्मा के संदर्भ में बहुत लिखा है। रणधीर का दार्शनिक सोच धीरे–धीरे आध्यात्म की ओर प्रेरित हो रहा था।

''घर'' को रामनाथ शास्त्रीजी ने डोगरी संस्था द्वारा छपवाया और 1980 का साहित्य एकेडमी पुरस्कार मिला। इसी के साथ 200 सॉनेट की ''पहेलियां बांगां'' भी डोगरी संस्था द्वारा प्रकाशित हुई जो मील का पत्थर साबित हुई।

'घर' के क्रम में ही एक ओर उच्च कोटी की रचना ''सबक'' आयी जो रूबाई विधा में ही लिखी गई थी। यह अपने आप में एक अदभुत लंबी रचना है, मूल्यों को समर्पित है।

दोनों छोटे भाइयों के NDA में जाने और अनुशासित हो मेहनत करने से रणधीर को थोड़ी राहत मिली थी। अपने जीवन

को संवारने का मौका मिला। 1981 में पुरस्कार मिलने से उत्साह से परिपूर्ण थे। विंग कमान्डर प्रमोशन के साथ गांधीनगर गुजरात जाना पड़ा। वहां राडार की ऊँचाई कम होने से पश्चिम की तरफ से बाधा होती थी, राडार को थोड़ा ऊपर करना था। विभाग से कार्यवाही में समय लगता तो अपने आफिस के स्तर पर ही लोकल सहायता से , बिना विभागीय अनुमति के राडार को एक टीला बनवा कर ऊँचा करवा दिया। यह थोड़ा जोखिम का काम था पर रणधीर ने कर दिया । उच्चाधिकारी घबरा गये और नाराज भी हुए पर जांच में सही पाने पर प्रशंसा पदक मिला। जहां लाखों रूपये खर्च होते उसे मुफ्त ही में कर दिया।

गांधी नगर का कार्यकाल जीवन का अच्छा समय था। गृहस्थ जीवन का आनंद लेने वाला समय था। अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं के लेवल को कम कर दिया जाये तो खुशियां छलक पड़ती हैं। भगवान जीवन के चरम सुख का आस्वादन करवा कर तुरंत घोर दुख में डाल देता है। खुशियों में मतवाले इंसान को अचानक दुख–दर्द के गड्ढे में डाल देता है।

16. मई 1986 में रणधीर का स्थानांतरण नगरोटा, जम्मू हो गया। मई 1986 तक गांधीनगर में commander & controllar (IAF)रहे थे। तब तक सब ठीक था। मई '86' में नगरोटा, जम्मू आ गए थे। रणधीर बचपन से ही माता वैष्णव देवी के परम भक्त रहे हैं। पम्मी भी पूजा–पाठ वाली रहीं। उन्हे कभी बुखार तक नहीं आया था। सबसे छोटे देवर का passingout parade होने के थोड़े दिनों बाद मालूम हुआ कि पम्मी को रोग हुआ है। टैस्ट करवाए, विश्वास न होने पर अहमदाबाद तक जांचा गया। रणधीर का तो सारा संसार ही अनिश्चितता में डूब गया। अगस्त आखिर में पम्मी के भयानक रोग की सैकण्ड स्टेज

मालूम हुई थी। सबसे ज्यादा भरोसा माता का था और वही कमजोर कर रहीं थीं।

रणधीर ने लिखा–

16.10. 1986 को कैंसर हॉस्पिटल, अहमदाबाद आये। टैस्ट हुए, एक–एक पल निकालना कठिन हो रहा था। माता का ही सहारा था, चमत्कार हो और सब रिपोर्ट गलत आ जाऐं। जिस महिला को कभी सर भी नहीं दुखा उसे यह क्या हो गया? सारा दिन फारर्मेलिटी पूरी करते निकला, हम दोनों ऊपर से शान्त थे। रणधीर को तो विपत्तिकाल में शान्त रहने की आदत थी पर जब सब नींद के आगोश में थे, उनकी नींद उड़ हुई थी। समझ नहीं आ रहा था कि प्रेम को यह कैसे हो गया?

हॉस्पिटल में एडमिशन के साथ ही एक किट मिली जिसमें कैंसर के रोगी के केयरटेकर के लिए कुछinstructionsऔर सलाह थीं। एक कैसेट था जिसमें पहला वाक्य ही था... मतलब

'' कैंसर एक अवश्यंभावी मृत्यु का वारंट है।'' लंबी बीमारी में रोगी और केयरटेकर को उत्साह, मॉरेल, स्वास्थ्य को किस तरह बनाये रखना है।

रणधीर के मन में विचारों का भूचाल आया हुआ था। शायद अपने बुजुर्गों को याद कर रहे थे कि– चोट पर चोट कर मेरे धैर्य, साहस को अजमाया जा रहा है। हे 'बुजुर्गों! मेरी साफ स्लेट पर ये क्या लिख दिया है? संकड़े रास्ते पर चलना मुश्किल है पर समतल भी नावाकिफ होने पर कठिन है। हे ईश्वर, तुम्हारा व्यवहार मधुर था, पर अब पता नहीं क्यों नाराज हो। भाग्य ने हर बार करारी चोट दी है और भेदभाव किया। । सब कठिन है , पर मेरे इरादे बहुत मजबूत है। एक तो भाग्य नें मुँह मोड़ा और दुःख दिये, दूसरा यह सब कुछ सहन करने के लिए मुझे अकेला छोड़ दिया। लोगों को इश्क का सौदा घाटे का लगता है पर मुझे तो लाभ वाला ही लगता है। अपने कर्मों के लेखों को जोड़ता–घटाता रहता हूं। बड़ी हिम्मत से इस पीड़ा से लड़ रहा

हूं पर हर बार पीड़ा बढ़ती ही जाती है। दुनिया से संताप ही मिला है और हे ईश्वर, ये पीड़ा तुम्हीं ने दी। स्वर्ग की परिकल्पना जिसने भी की है, उसने मनुष्य की सीमायें भी बता दी है। **सृष्टि** के सूक्ष्म गूढ़ भाव व सहनशीलता को जानकर मै जानता हूं कि फैसला मेरे हक में ही आयेगा।

सच्चे इश्क की राह स्वर्ग की तरफ जाती है, सच्चे प्रेमियों को वह स्वर्गातीत आनंद मिलता हैं। देवता जब मेरे हक में फैसला देगें तब नया इतिहास लिखा जायेगा, 'मां', तू मेरी मंशा को साबित करना।

अहमदाबाद

17.10. 1986

आज अहमदाबाद हॉस्पिटल में दूसरा दिन है। मेरे दादाओं ने अपने परदादाओं की कमाई खाई और अगली नस्लों की जड़ें काट दी। किस्मत ने स्यापा दिया और फिर **कलपना** भी दिया। मेरे लिए यह पीड़ा सर्वव्यापी हो गई है। दुनिया ने बड़े संताप दिए, पर ईश्वर, तूने भी कम संताप नहीं दिए है।

किस्मत! आज मै दिल खोलकर तेरे भेद खोलना चाहता हूं। मुझसे अकेले मिलना चाहती है पर जिस रोज भी मुझे भाग्य से थोड़ा भी मौका मिला तो सारा ज़हान नापना चाहता हूं।पर तभी किस्मत बोली, अभी तो तुझे और रुलना(रुलाना) है।

18.10.86

कभी उसे नजर अंदाज न करो जो तुम्हारी बहुत परवाह करता हो, वरना किसी दिन तुम्हे अहसास होगा कि पत्थर जमा करते–करते तुमने हीरा गंवा दिया। किसी के प्रति यदि लेशमात्र भी अगर प्रेमभाव है तो उसे नजरअंदाज, अवहेलना या उपेक्षा मत करो। दिल चुराना कठिन नहीं है। प्रिय को गले लगा लेना श्रेयस्कर है। रुठे तो मना लो, ना को भी हामी में भर दो। वियोगी तो कृष्ण के भक्त हैं, अपना बनालो।।

ओ मुसीबतों! वियोगी बड़ा संत है उसे हर तरह से परख लो, उसे बहुत दूर जाना है, परख लो, उसे मौत का डर है या नहीं, परख लो,

जीवन की अमुक साल की बात करो, जिंदगी के जर्रे–जर्रे की पहचान करो। पीड़ा भरा मन बोला– बात करने का यह मौका नहीं है। तुम कैसे थकान भरी मशक–मशक की बात करते हो। जिन्होने तुझे जीते जी मरा समझा तो उनपर रोष करने से क्या होगा? मेरा व्यक्तित्व एक खुली किताब के समान है, उसमें कोई भी अच्छी–बुरी बात छुपी नहीं है।

गरीब थकना क्या जाने? अर्थात गरीब को थकने का अधिकार नहीं है। वैसे ही सुखी लोग लुटना क्या जाने? पीडा के जख्मी मुसाफिर क्या जाने? मेरी फूटी किस्मत फूटना क्या जाने? मै पाताल की थाह पहले ही पा गया था इसलिए जिंदगी को सूतना क्या?

तू मुझे छोड़कर कहां जा रही है? मैं भी तेरे साथ ही चलूंगा, जहां तू नहीं वहां मुझे नहीं रहना है। तू मेरे मरुस्थली जीवन का नखलिस्तान है। लोगों की भीड़ भरे जंगल में मुझे नहीं रहना है।

हे ईश्वर! तूने मुझे थोड़े दिनों की खुशी देकर किश्तों में बेहिसाब पीड़ा दी है। पर वियोगी तो पीड़ा भोगकर भी इश्क करेगा।

सोचता हूं मेरी कहानी पचतंत्र के उस तोते की कहानी है जो पेड़ की ऊँची डाली पर बैठकर टें–टें करता है। खुद एक पारस के समान है , जिससे जो भी छूता है सोना बन जाता है पर खुद तो पत्थर ही है। बाहर से सारा बहुत खूबसूरत और आनंद दायक लगता है पर अन्दर तो खिजां ही खिजां है।

जिंदगी में मुझे हमेंशा पीड़ा, रंजिशें, घाटा ही घाटा मिला है। समाज में, रिश्तों में , यारी में, हमेशा नुकसान ही उठाया है, कहीं कोई खुशी नहीं मिली है, पर एकमात्र इश्क ही है जहां थोड़ा

सकून मिला है, जहां मुझे स्वीकृति मिली है, अपने होने का भान हुआ है। रिश्ते, यार सभी मेरे पास आकर 'सोना' हो गए पर मै तो पत्थर ही रह गया, सिर्फ मां या इश्क ने ही मुझे सुख–शान्ति दी है पर अब ये क्षति याने इस बीमारी से बहुत बड़ा नुकसान है। तेरा नुकसान, मेरा भी नुकसान है।

अहमदाबाद

19. 10. 86

हे ईश्वर! मैं खूबसुरत दुनिया देखना चाहता हूं, मैं कैंसर ग्रस्त श्रीमती को स्वस्थ देखना चाहता हूं , मैं इस कैंसर की पीड़ा की जगह हंसी–खुशी देखना चाहता हूं, मै साथी के साथ सभी भोग चाहता हूं, अपने घर को सही सलामत देखना चाहता हूं, में अपनी त्याग, तपस्या से इस सती को फिर देखना चाहता हूं।

जीवित चाबियों से सारे ताले खोले जा सकतें है वैसे ही जिंदा तालों को किसी भी चाबी से खोला जा सकता है। ऐसे यार से मिलन पूरा आनंद देने वाला सच्चा प्यार होता है। सच्ची मोहब्बत में तन मिलना ही मन मिलना नहीं है वरन रुह मिलना ही मोहब्बत की चरम सीमा है।

अहमदाबाद

20.10.86

सप्तपदी– सात वचनों के निर्वाह की अक्षमता, पुरुषार्थ को लगी ठेस, मनुष्य को कितना व्याकुल, असहाय कर देती है, अपनी मर्दानगी पर भी शंका होती है। इक्कीस सालों का साथ ,एक संबल बनता है पर वही दुःख का कारण भी बन जाता हैं। जिसका मै मुहताज था आज वही मेरी मुहताज बनी है।

नमर्दगी

(श्रीमत दे कैंसरी रोगै दै सामनै)

1.

तेरा जिसम–तेरा जिसम

तेरी कसम–तेरा जिसम
श्रीमते–अकीमते
नमुल्लिये
ओ जिंदगी दी नेह्मते
जनानिये–मन–भानिये
असीमते
अल्लाह् दी मेहरबानिये!
तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
पंगोई आ–डंगोई आ
में केह करां ?
जेह्दा मुहताज आऊँ हा,
मेरा मुहताज होई आ।
तूं कदें ब्हौंदी निही
तूं कदें सौंदी निही
न चिल्लड़ी रौंहदी निही
मंगो तां थ्होंदी निही
ते टब्बरै ते टैंटें शा बेह्ली कदें होंदी निही
तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
पंगोई आ–डंगोई आ
में के करां
जेहदा मुहताज अऊँ हा
मेरा मुहताज होई आ।
कैंसरी रीड़ें दी भीड़
रीड़ा च भीड़े दी भीड़
भीड़ा दी नीड़ें दी भीड़
पीड़े गै पीड़ें दी भीड़
सिनका आंगू कैंसरी कीड़ें दी भीड़–
जिसमा विच
तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम

5.

तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम

ओ जंगिये–ओ जुंविये
कदी मिये
ओ जिदगी दी संगिये
अदीमिये
'वियोगी' दी मूंह–मंगिये
तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
पंगोई आ–डगोई ओ
में के करां
जेहदा मुहताज अऊँ हा
मेरा मुहताज होई आ
तेरी निडर सपुर्दगी
चेतै ऐ तेरे मर्दगी
हमदर्द गी–हमदर्द गी
लेकन उदी नमर्दगी
करी नेंई सकदी दूरी तेरे एस धोगड़ दरद गी
नमर्दगी–नमर्दगी–नमर्दगी–नमर्दगी

अच्छी पत्नी गृहस्थी की आत्मा होती है। पत्नी हमेशा कूलतारिणी होती है और भवतारिणी होती है। वहीं पति संसारतारणहार होता है।

हिरखा दा इक तरल तोपा ऐसा किरया आनियै,
जीवन सागरै दी सारी कौड़तन पीन्दा गया।

सरके सरके सर से चुनरिया
लाज भरी अक्खियनें मे,
नैनो में निंदियां
निंदियां में सपने
सपनों में साजन जब से बसा
बहार आई जीवन में
नई शद्दत है तनम न में
इक रूप बसा है अक्खियों में।–कुंवर वियोगी

अकेले बैठे रणधीर को रंजिशें घेर लेती हैं, वे सोचते थे की ये रंजिशें थक कर सो गई है पर उन्हे अकेले पा उन्होने फिर अपना फन उठा लिया है। भाई, बहन, नाते–रिश्तेदार, दोस्त और बिरादरी वाले कहते हैं, मुझे दुनियादारी नहीं आती हैं। पर मुझे जो ठीक लगा मैंने किया, अपने को नगण्य मानकर जीवन में अथक जूझता रहा, न मानो तो जांच लो...ओ बहनों , मैने पूरी ताकत से तुम्हे योग्य बनाने की कोशिश की, भाइयों, तुम्हारे पोतड़े धोने से लेकर अफसर बनाने की अपने तरीके से कोशिश की, दोस्तों, तुम्हारे साथ पूरी दोस्ती निभाई और हे बिरादरी वालों, तुम्हारी कमरतोड़ परंपराओं को मैने नहीं माना। आज तुम बड़े लोग हो गये हो, अब तो मेरे योगदान की छीछालेदारी मत करो, मैंने अपने जीने के साथ भले ही बेईमानी की पर तुम्हारे साथ अपने अनुसार अच्छा ही किया। पर यह तुम नहीं समझोगे। मै अकेला था, अकेला ही हूं पर अपने में सक्षम हूं। तुम अपने शहर में खुश रहो, तुम्हारा चारों तरफ यश फैले और मुझे अपने अनुसार जीने दो। मेरे कर्मों का मै ही जिम्मेदार हूं। मेरी कोई देनदारी नहीं है।

18.10.86

छेड़ो नेईं गल्ल ओह्कड़े अमुक्क बर्हे दी,
नाका–कशी जिस कीती ऐ जीने दे दर्रे दी।
नज़रें दी दुनाली चली ही मुद्धतां पहलें
आल्ली बी पीड़ बाकी प छरे–छरे दी।
पनछान करो जिंदगी दे ज़रे–ज़रे दी।
पीड़ै गी जिगरा आखदा –मौका निं खजायो,
तुस कस्सी लैओ मशक–मशक हुट्टे–हरे दीं।
जे जींदे–जी करगे, तुसें गी ठीक रसतै लग
केह् फायदा ऐ रीस करिए मोये–मरे दी।
'वियोगी' दी शखसीयत ऐ इक खुल्ली दी कताब
छपैल निं कुसा थमां बी खुट्टे–खरे दी।(vol 9 131)

28.10.86

जवाबदारी

मिरे, भैहनो, भ्राओ , दोसतो, बरादरी–दारो
तुस जे आखा दे ओ ठीक गै तां आखा दे होगे

चलो मन्नी लेआ मीं जाच हैन्नी दुनियांदारी दी
चलो मन्नी ले आ जे मेरी कारी, ने हैन्नी कारी दी
चलो मन्नी ले आ, मेरे च त्रान, जोश हैन्नी सो
चलो मन्नी ले आ मीं जीने दी बी होश हैन्नी सो
तुस बालग ओ, सयाने ओ, बाल–बच्चें आले ओ

ओ भैहनो, मापे हे असें गी जेल्ले कल्ले छोड़ी गे
जदूं तंगी नै मेरी हसतिया दे हड्ड ठोले हे
जदूं मेरे शरीरा आसतै फट्टे दे टल्ले हे
जदूं मेरी सगीरी पर हे हसदे लोक म्हल्ले दे
तुसेंगी मैहंगें ते नेईं–छैल पर टल्ले लो आये हे
तुसाड़े वेश–वूशा पैहलें शा वेहतर वनाये हे
तुसाड़े लगन कीते खंदे ते पीदे घरें अंदर
तुसेई मान–मरयादा मिले जंदे घरें अंदर
में तुंदा मां–बब्ब हा,, में तुंदा बड्डा भाई हा
रवैईया मेरा, उस बेल्लै वी भैहनो पारसाई हा
हुन मेरी दुनियां दारी च ऐ कियां– खुट्टं आई आ

भ्राओ निक्के होंदे लै तुसाड़े नक्क बगदे हे
पजामें विच हे तुस मूतर दे, कच्छे च हगदे हे
तुसाड़े पोतड़े में अपने गै हत्थें नै धो दां हा
तुसे गी एहदी जाच दस्सने च नंद औंदा हा
तुसाड़े सुखने गी में संडिऐ बसीह कीता हा
तुसें गी बड्डी हीखियें हवालै फी कीता हा
ते हून, सारे तुस साहबे–जदैद–आऽला अफसर ओ
मुहताज नेईं कुसै दे, नां कुसै उप्पर मुनन्स्सर ओ
में तुंदा दोस्त ते फिलासफर ते–तुंदा राखा हा

ओह् मेरे दोसतो, इन्ना तुसेंगी याद गै होना
जे मेरी हीखी ही कवत्ता दे खुल्ले गासें च भौना
मीं लफजें दी परी नै अपने बस्सा बिच्च हा कीते दा
मिगी हा तोबरा चाढ़े दा उस सनी सलीते दे

मिरे बरादरीदारो तुस इन्ने तौले भुल्ली गे
में कियां तुंदी रूहे चा समाजी भोगड़ कडढे हे
ते कियां त्रोड़ेआ हा में कमर–त्रोड़ रसमें गी
आजाद इंदे शा कीता हा कियां तुंदी रूहें गी

मिरे, भनो, भराओ, दोस्तो, बरादरी–दारो
में तुंदा देनदार हैन्नी सो मेरे सुखी यारो
में पैह्लें बी छड़ा दित्ता ते हून मंगा दा किश निं
मिरे देने दे उप्पर हून बी लग्गे दा अंकुश निं
मिरी मरजी ऐ, तुस फुल्लो फलो धरिस्तियें अंदर
तुंदा यश फैली जा दुरेडी बसतियें अंदर
चिंता नेईं करो में, तुंदी बस्समें च नेई रौह्ना
में अपनी हसती गी नकारियै फक्कड़ निसो होना
तुसाड़ी सोझें शा परेडे कर्म–जोग न मेरे
रूहानी गुद्धे चेचे चिंतनी सजोंग न मेरे
'वियोगी' आं ते डाडे–डाडे सब 'वियोग' न मेरे

चलो मन्नी लेआ, मीं जीने दी बी होश हैन्नी सो
अवो बनो नां जडज, नां खडेरो मीं कटैहरे च
जद में आं अपनी बस्समां च तुस ओ अपने शैह्रें च
तुसें नां समझेआ, नां समझादे, नां समझना मिक्की
प बारै सोचियै तबीयत करेआं नेईं फिक्की
में आपूं–अपने आपैं तैं–अते आपें तै काफी आं
में जो किश आं ओ अपने होनी दी चेची तलाफी आं
छड़े चिंतमनी बनने दे तुस रवाजें गी भुल्लो
फिकरमंद मेरे तांईं रूहे दी बुआजें गी भुल्लो
तुस बालग ओ स्याने ओ बाल बच्चें आल्ले ओ
मिरे भैना, भराओ, दोसता–बरादरी दारो
रिजक मंगा, रिजक बदलै, बारीदार हैन्नी सो
में अपने कर्में तैं तुंदा जवावदार हैन्नी सो
जे औगे तुस तां सिर मत्थै–जे नेईं औगे तां ओ जाने

17. हमारी आत्मा चोला बदलती है। जन्म होता है, शरीर फलता फूलता है, अपना संसार बसाता है और समय आने पर पल–पल में क्षय होते अंततः शरीर छोड़ना पड़ता है और त्रिआयामी संसार से बहुआयामी संसार में प्रवेश करना होता है। एक जगह से दूसरी जगह जाना हरएक की नियति होती है। रेलयात्रा, जीवनयात्रा, नौकरी में एक स्थान से दूसरे स्थानांतरण– चाहे अल्पकालीन हों या दीर्घकालीन हों, जाना होता है। बनाये मधुर संबधों को छोड़ नये के मध्य पुनः स्थापित करना होता है। तबादले का आदेश मिलते ही बेचैनी, विचलन और व्याकुलता घेर लेती है। फिर से बिस्तर बांघना कठिन, दुस्तर होता है। ऐसा क्यों? सर्वस्व लुटते देखना आसान नहीं होता है। इसे स्वीकारना ही कठिन परीक्षा है, एक बार स्वीकार करते ही परिदृश्य बदल जाता हैं उस अवश्यम्भावी को थोड़ा आसान बनाने में जुटना होता है। कैंसर का आभास होने की शंका सबसे कठिन घड़ियां होती हैं।
आशा–निराशा, होना ना होना के संदेह, टैस्ट रिपोर्ट का इंतजार, सबसे भयावह समय होता है। अनचाहे, क्रूर शत्रु से आंख मिलाने में डर लगता है, आंख बचाने का ही मन करता है। पॉजिटिव रिपार्ट आते ही आंखों के सामने अंधेरा हो जाता है, निर्जीव से हो जाते हैं, ज्ञानशून्य हो जाते हैं। कहीं कुछ गलत है। विश्वास नहीं होता है। कैंसर रिर्पोट अस्सी–नब्बे दशक में उस अवश्यम्भवी का फरमान होता था। तबादला आदेश आ गया है , उसे रोका नहीं जा सकता

है, हां, थोड़ा टाला जा सकता हैं। कैसंर के लिये शिक्षित करने वालों टेपों में पहला वाक्य ही होता था.... मृत्यु का फरमान।

रणधीर ने लिखा है.....

सृष्टि जैसी है वैसी ही रहेगी, उसका आधार बदलता नहीं है। न ग्रह बदलेगें न ग्रहपथ बदलेगें, न धरती की धुरी बदलेगीं। इसका केन्द्रबिंदु बनने की इच्छा हमेशा मनुष्य में बनी रहती है। समय के साथ दुनिया चलती रहती है, संसार रूकता नहीं, आना जाना लगा रहता है।

धरती सूर्य का चक्कर लगाती है और चंद्रमा धरती का चक्कर लगाता है। सूरज की रोशनी ले चंद्रमा, धरती को रोशन करता है और धरती पर चांदनी का सृजन होता है। ऐसे ही सच्चे प्रेम की रोशनी से मै तुम्हे चांदनी देता हूं। मेरा सारा संसार तो तेरे इर्द–गिर्द ही घूमता है, तू ही मेरी धुरी है, तेरी ही रोशनी से मैं चमकता हूं। तू मेरी धरती मैं तेरा चांद हूं।

जीवन की परीक्षायें यात्री को संबल देती है कुछ पाने का अहसास कराती है। हर कठिनाई ऊँचे पहाड़ की चढ़ाई नजर आती है, हर चढ़ाई दुनिया की सबसे ऊँची चढ़ाई लगती है पर चोटी पर पहुंचने पर लगता है नीचें खाई है, पर अभी तो ओर ऊँची चढ़ाई पार करनी है। कोई भी सफलता/असफलता आखिरी नहीं होती है, उसके बाद भी बहुत कुछ है, जिससे पार पाना है। कैंसर की लड़ाई भी ऐसी ही है, कभी लगता है ठीक हो रहा है कभी फिर खाई में लुढ़क जाते हैं।

हे भगवान! मेरी जिन्दगी के हर सफे पर पीड़ा के धब्बे क्यों हैं? तबादले के फरमान के बाद धीरे धीरे लोग उस आघात के धक्के से सम्भलते हैं । समय के साथ सत्य का परिचय होता है और हर हालत में उसे पचाने की अनजाने ही कोशिश शुरू हो जाती है । देवी–देवता से **प्रश्नोत्तर** होते हैं, अपनी गलतियों , कमियों को परखने का प्रयास होता है, सर्वशक्तिमान से शिकायतें होती

हैं। धमकी दी जाती है ,मनुहार की जाती है आखिर में समर्पण कर उसी पर सब छोड़ दिया जाता है।

31—12—1986

कैलेंडर, काल का हरबा है, ग्रह—पथ का लेखा है। अपने जीवन में इस कैलेंडर की कुछ तिथियों को यादकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव करतें है, वहीं कुछ को हम जानना भी नहीं चाहते हैं। एक अगस्त को पम्मी और मेरा गठबंधन हुआ था उसके बाद लगभग पन्द्रह दिन शिमला में हनीमून मनाया था और मेरा घर बसा था। उसके बाद छब्बीस सितंबर आता है जो एक त्योंहार स्वरूप है कारण वह पम्मी का जन्मदिन होता है। एक दिन और, प्यारा दिन है—चार सितंबर, यह मेरा जन्मदिन हैं। 31 दिसंबर 86 की रात तारीख बदलने वाली है, नया साल आने वाला है, इसका स्वागत सारा संसार कर रहा है पर रणधीर के अशान्त मन में साल बदलने का स्वागत नहीं वरन् रोकने का भरसक मानसिक प्रयत्न हो रहा था। घड़ी की सुई को रोकने का मन हो रहा था, बस चले तो सुइयों की घूमने की दिशा बदल दे। सन् 1986 को ही अस्तित्वहीन कर दे। इस कैलेंडर को ही फाड़ दे। बिल्ली को सामने देख चूहा आंख बंदकर सोचे कि बिल्ली चली गई। कैंसर काल के हरबे, कैलेंड़र को ही रणधीर फाड़ डालना चाहते थे।

प्रेयसी का दर्शन सुखकर होता है, देख—देख कर मन भरता ही नहीं। स्पर्श इतना सुखकर, सुकून देने वाला होता है कि संसार की व्यथा—कथा काफूर होती है।

पम्मी सोचती है कि हे बाबुल! मलंग वियोगी से मेरा ब्याह कराया जो बेपरवाह, नादान है पर मुझे लाड़ से गले लगाया, उसे परखा तो वही मेरे जीवन का आधार बन गया है।

मेरी शादी एक मलंग से करवा दी, जिसे दुनियावी चीजों की परवाह नहीं है तो मुझे भी इस दुनियावी चीजों की जरूरत नहीं है। जैसे धरती—आकाश का जुड़ना है वैसा ही मेरा उसकी

फकीरी पर फिदा होना है। उसे अपने को सौंपकर अब मुझे किसी दौलत की जरूरत नहीं है।

प्रेम में भीगे ,सारी दुनिया एकमात्र साथी तक सीमित होने से जंगल में भी मंगल होता है, महल हो या झोपड़ी हो, कोई फर्क नहीं पड़ता है।

प्रेम, प्यार, मोहब्बत, लव, असली प्रीति, प्रणय, पसंद, इश्क, सबका मतलब प्रेम है, पर क्या ये प्रेम के पर्यायवाची हैं? प्रेम के, कई रूप हैं, अपने उदात्त रूप में प्रेम सिर्फ देना जानता है, कुछ पाना नहीं। प्रेम करना कठिन है। अपने सर्वोत्तम रूप में हर प्रेम कहानी में देह, नगण्य हो जाती है और भावना प्रधान होती है।

कबीर के अनुसार प्रेमी में एकाकार हो जाना ही प्रेम की पराकाष्ठा है। प्रेम क्या त्याग मांगता है? या अपने आपको भूल जाना? क्या प्रेम में देना ही देना है? या कुछ पाने की उम्मीद करना प्रेम का अनादर है? प्रेम में एकाकार होना ही प्रेम की चरम सीमा है।

प्रेम में हमेशा रस ही नहीं बरसता है, मान–मुनौवल, रूसा–रूसी भी होती है पर ये सब ऊपरी सतह पर ही होता हैं । नीचे के तल हमेशा शान्त–गंभीर ही रहते हैं कोई हलचल नहीं होती है।

हम मिले, साथी बने, प्रेमी बने, गृहस्थ बने, ''घर'' बनाया जहां अधिकतर समस्याए सुलझाई जाती थीं, सब बड़ा अनोखा, आश्चर्यजनकरूप से सफल लगा। सोचने लगा भविष्य में जो भी विपदा, अड़चन आयेंगी सबसे निबट लूंगा। पम्मी को भी मुझ पर पूरा विश्वास होने से सोचता था , मैं भाग्य बदल भी सकता हूं। पर भाग्य ने एक ही वार में ऐसी ताड़ना दी कि होश फाख्ता हो गए। और हमें अलग कर दिया, बिछुड़ने पर मजबूर कर दिया। उस तक पहुंचने का कोई तरीका भी नहीं है।

कई बार रूढ़ियों–परंपराओं के बहाने व्यक्ति को, समाज के लोग बाध्य करते हैं परंपराऐं निभाने के लिए, पर मै इसके

लिए प्रस्तुत नहीं हूं । आप मेरे जीवन को हांक नहीं सकते हो। मैं अपने अनुसार ही कर्म करूंगा।

आदमी के जीवन में जन्म से मृत्यु तक एक औरत का बहुत बड़ा योगदान होता है। मां की छत्रछाया में सुरक्षित बड़ा होता है , बड़ा होने पर पत्नी के आंचल में फलता–फूलता है। पुरूष का किसी नारी द्वारा स्वीकारा जाना और पूर्ण समर्पण, दुनिया की सबसे अमूल्य घटना होती है। और पुरूष नारी का जरखरीद गुलाम हो जाता है।

नींद में मैने कुछ सुना और हड़बड़ाकर उठ बैठा, दिल जोरों से धड़क रहा था, बेचैनी हो गई थी। कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी, पम्मी और बच्चे सुखपूर्वक सो रहे थे, फिर ये आवाज कैसी थी? शायद मेरे अवचेतन मन ने मुझे किसी घटना का आभास दिया है। (1978–79)

पम्मी, तुम्हारा आंतरिक सौंदर्य बाह्य सौंदर्य से अधिक है, तुम एक अच्छी पत्नी होने के साथ कला प्रेमी भी हो। अभिनय करना शौक था, हर सांस्कृतिक कामों में भाग लेती थीं। बहुत साड़ियां न होने पर भी उन्हे ठीक से रखने और सलीके से पहनना का कौशल था, लगता था नयी ही पहनी है। सबके सामने धीर–गंभीर रहती थी पर एकान्त में हरएक की नकल कर बतलाती थी। बच्चों को दुनिया की तेरी–मेरी से दूर रखा था। उसके साथ समय की गति तीव्र हो जाती थी।

कई बार अहमदाबाद गए, कीमोथेरेपी कष्टमय होती है, किसी कारण से तारीख टल जाती थी तो पम्मी को राहत मिलती थी । डॉक्टरों की सलाह से पेन किलर दिए जाते थे जिससे कम से कम दर्द महसूस होवे। पर रोग शरीर को ही नहीं मन में भी झंझावात ला रहा था। इलाज में कोई भी कमी नहीं होने देना चाहता था। पर पैसों का ध्यान रखना पड़ रहा था। जीवन के कठिनतम अवसरों पर भी उन्होने किसी से सहायता नहीं ली थी। आर्थिक सहायता भी नहीं ली। नौकरी से जितना भी लोन आदि उठा सकता था उठा रहे थे । उधार लेना कभी पसन्द नहीं किया।

खर्च कम से कम हो तो अकेले ही पम्मी के साथ हर जगह जाते थे। किसी को भी दूसरे शहर आने से मना किया था, कारण, वो पम्मी का ध्यान रखें या मेहमानो का ख्याल रखें? जो समय और अर्थ दोनो मांगता है। पम्मी बहुत खुद्दार थी, अपने घर की अपने धनी–ओह्देदार बहनों व भाई को कभी भी कुछ बतलाती नहीं थी। अपने बच्चों को भी जाने नहीं देती थी। पर वह अपने पूरे परिवार में सबसे ज्यादा सुखी थी। एक दीवाना, समर्पित पति जो साथ था। रणधीर ने उसे देवी के समान पूजा और केयर की थी। पम्मी दवाई भी रणधीर के हाथ से लेती थी। हॉस्पिटल में नर्सों के हाथ से भी नहीं। नर्सें दोनों के इस प्रेममय व्यवहार को देखकर बोलती थीं, आपके पति आपसे बहुत प्यार करते हैं। सुनकर खूब खुश होती थी ओर खुश हो रणधीर को ही नहीं दूसरों को भी बतलाती थी। स्थिति कठिनतर होती जा रही थी। जीवन की इस आपाधापी में अब और नौकरी करने की इच्छा नही है। शुरू से में नौकरी करना नहीं चाहता था। मैं अंग्रेजी का प्रोफेसर बनना चाहता था और बस लिखना चाहता था। अपने लिखने के कौशल को आजमाना चाहता हूं। बस अब पेंशन ले लेना चाहता हूं।

सुनना दरकिनार सिर्फ दुखड़े बारै सोचियै,
दिल बगीचा सुक्कियै करादी ऐ के करचै।

Pammi's treatment-------

When I look back on that bubbly, cherubic, aquiline nasal dove eyed picture of good health- I think illness will not attack someone like her. But it did. Dry-eyed and dignified as ever. A social dynamo became a recluse overnight. Characteristic refusal to be cowed down. Alchemies disaster with infectious hopefulness.

दोनों एक दूसरे को ढ़ाढ़स देते थे। घर की कठिनाइयां कम हो इसलिए एक लड़की को होस्टल में रखा। इस बीच बड़ी लड़की के लिए रिश्ता आया बहुत सोच समझकर हां करदी और फरवरी '88' में शादी करवाई। पम्मी शादी में भी ज्यादा देर बैठ नही सकी तो घर भिजवा दिया। हालत दिन पर दिन खराब हो रहीं थी। तभी प्रमोशन भी हो गया। पम्मी सब समझ रही थी, अपना लुटता संसार देख रहीं थी, मन में विश्वास था, आखिर तक रणधीर बचा ही लेगा। अपनी इस अक्षमता निरीहपन पर, कोई जोर नहीं था। बस रणधीर को देखती रहती थी। रणधीर को उसका इसतरह देखना बहुत ही मर्मान्तक लगता था, उसे बचा नहीं पाने की, उसे नीरोगी करने की, खुश करने की कोई विधि नहीं थी । कोई उपाय होता तो रण्धीर अपनी प्रियतमा के लिए जान भी कुर्बान कर देता, पर एक नपुंसक क्रोध, अक्षमता, अपने तुच्छ होने का अहसास बार बार हो रहा था। पम्मी शारीरिक पीड़ा के साथ मानसिकरुप से भी पीड़ा भोग रही थी । यह तड़पना देखा नहीं जा रहा

था। मेरी गोद में सर रखे तू मेरी तरफ फटी आखें से देखती है, विश्वास करती है कि मैं कोई करिश्मा कर तुझे बचा लूंगा पर में कोई जादूगर नहीं हूं। तू जानती है कि तू अब बच नहीं पायेगी कैंसर से, मृत्यु से ही छुटकारा मिलेगा। पर हमारे प्रेम और अपनी गृहस्थी से अलग होने के सोच से ही तू व्याकुल है, तेरी छाती पर कैंसर का आदमखोर बूटा लगा है, जिसके सामने तेरा प्रेमी अक्षम है, तुझे घोर कष्टों से मैं छुटकारा नहीं दिला सकता हूं। कैंसर से मात्र घोर शारीरिक कष्ट ही नहीं है , उससे भी बड़ा मानसिक त्रास है। हर वक्त अपनों के बीच रहते भी उन्हे खोने का डर, हाथ से छूटते जीवन स्रोतों को पकड़े रहने की कोशिश कितनी त्रासद है यह भुक्तभोगी ही समझ सकता है। पम्मी, बतला, मै तुझे इस दर्द से कैसे आराम दिलाऊँ , शारीरिक दर्द से तो डॉक्टरों की मदद से थोड़ा आराम होता है , यही मेरे हाथ में है। पर बिछुड़ने की मर्मान्तक पीड़ा, इस व्यथा का कोई

उपचार नहीं है इसमें हम दोनों डूबते जा रहें हैं। पर संतोष रख कि हमारा प्रेम सातवें आसमान जितना ऊँचा है, शरीर का बिछुड़ना कुछ अर्थ नहीं रखता है। मैं तेरे साथ प्राण दे सकता हूं पर तू ही मुझे रोक रही है। इस विपत्ति का निवारण यमराज ही कर सकते हैं। तुझे सौगन्ध है , अब तू अपने कष्ट निवारण के लिए अपने प्राण छोड़ दे।

ओ मेरी गोदै विच्च रक्खियै सिर सैह्कदी कलिये,
ए तेरे फेफड़े पर कैन्सरा नै मल्ल पाई दी,
ओ मेरी जिन्दगानियां च मैह्को मैह्कदी कलिये,
ब्हाऊ थ्हार आदमखोर इक बूटी उगाई दी।

ओ मेरी जिन्दगी दी मखमली मजूदगिये तूं,
मिरे गल्ल फट्टी–फट्टी नजरें कन्नै दिक्खा करनी ऐं,
'वियोगी' गी तूं म्हेशां समझदी आई एं परसानूं,
उदे शा अज्ज ता तूं कोई करिशमां हिक्खा करनीं एं।

प तेरा आशक तेरे आंगर गै मासा दा,
बड़ा मजबूर ऐ, वे–युगत ऐ ते प्रारथना–गो ऐ,
भैंकर कैंसर जमराजा–ए–ला–इलाज हुतला ऐ,
एह्दे सामनै 'वियोगी' इक बे–सोध परतो ऐ,

तुगी सगन्ध ऐ मेरे प अपना मान त्यागी दे,
अपने कश्टै दे नवारण तांई प्राण त्यागी दे।

पुरोह्त आखदा सुहागन मौत, मौत–ऐ उत्तम
पिछले जनमें दे करमें दा उत्तम फल ऐ 'वियोगी'।
सुआह्नी दे मरी जाने दा कैह्ल्ली करनां एं मातम,
कैह्ल्ली जिन्दगी च पाए दा खलल ऐ 'वियोगी'।

पन्त आखदा मनिशियें ऐ निशचत कीते दा,
सहागन–मौत मरदियां न सिर्फ देवियां नारां,
उन्दी सदगती दा रस्ता ए स्थापत कीते दा,
सुहागन मरदियां न सिर्फ जन्नत–जेवियां नारां।

ससज्जत गैहनें कन्नै लोथ दिक्खनां तां सेही होन्दा,

क जियां चीथड़ें प कड्डे दा चमकीला गोट्टा ऐ,
मिरे शा फलसफा मनीशियें दा समझने नेंईं होन्दा,
की जे मेरा ए होना होये दा टोट–टोटा ऐ।

ओ लोको आखो देवते गी मेरी 'पम्मी' परताओ,
नितां कलपन देओ मीं ते मिरा फाता पढ़ी जाओ।

''वियोगी'' दी त्रीमत पुछदी ऐ– दस्सयां मिगी सज्जनन
इस मारू रोगा नै मेरी गै कैल्ली चोन कीती ऐ
मेरा पूजा–पाठी ते सतीत्व बैसमा जीवन .....

पता निं

इक पीड़त प्रीतमै दी मौती दी आपूं दुआऽ करना,
अनुपम चुन्न होन्दा ऐ जां घोर पाप होन्दा एं?
नांह उस थाह्रै मरी सकना, नांह पीड़ेगी सरी सकना,
इनें दौन्नी नमरदगिएं दा पशचाताप होन्दा ऐ।

अनुपम पुन्न कीता ऐ जी घोर पाप कीता ऐ?
मलूक सज्जना, निं फैसला करी सकदा में।
नांह मेरे कोला खुलदा पच्छोताएं दा पलीता ऐ
ते नांह् गै जीन्दे रेही सकदा, नां मरी सकदा में।

तेरी सदगती तैं पानी चाढ़दे में सोचै नां–
तिरी असैह्मती पीड़ें गी दूर जे खुदाऽ करदा;
में अपने हड्डें दे अनुकनें तिक्कर मसूसै नां;
में ओह्दा नास्तक होन्दे होई बी भ्राुक्रिया करदा!

पता निं अल्लाह् नैं मेरी दुआऽ कबूल कीती ही?
जां जियां होनी ही होनी, ओह् उन्नै होन दित्ती ही?

18. नगरोटा
01.04.1988

" भगवान तुम्हेजिंदगी से लड़ते देख रहा था और कोई इलाज संभव नहीं था तो उसने सुझाया–''मेरे पास आ जाओ।''

– ते मसीहा कोई नेईं–

1.

ते मसीहा कोई नी तेरा मसीहा कोई नी
जीवन अन्दर छाई किश ऐसी कुलैनी मान्दगी
दिल दलौचै पीड़ा कन्नें–दरद किन्नी वे थवी
वेबसी कच्ची मनान्दी हेली हेली इन्नी पी
जी कश दा रिशते नाते छोड़ां–छोड़ां जिन्द वी
घोर काले गुप्प नेरे थोन्दा दियां कोई नी
ते मसीहा कोई नी तेरा मसीहा कोई नी (पूरने..3) *KV*

मार्च में रणधीर का प्रमोशन व ट्रासंफर जोधपुर हो गया जो अहमदाबाद के पास किया था। 2 अप्रेल 88 को जोधपुर के लिए रिजर्वेशन हो गया, charge handover किया जा रहा था, पैकिंग हो गयी थी। बसेरा छोड़ने की पूरी तैयारी थी। एक अप्रेल '88' को सुबह ऑफिस गए, अन्तिम फार्मेलिटी पूरी करनी थी, घर पर सब सामान्य था। थोड़ी देर में फोन आया, पापा जल्दी आओ! मम्मी को क्या हो रहा है? तुरन्त घर पहुंचा तो देखा पम्मी,sinkकर रही थी या शायद sinkकर चुकी थी। तुरतं CPR किया, पर कुछ नहीं हुआ तो mouth to mouth resuscitation किया तो ढेर सारा पानी रणधीर के मुंह में आ गया, फेफड़ों में पानी भर गया था। यह प्रयास भी विफल हुआ। सब खत्म हो गया। विपत्ति में वायुसैनिक अधिकारी के धैर्य की परीक्षा होती है।

यंत्रवत् सारे आवश्यक कार्य किए। बच्चों को साथ नहीं ले गए, अपने परिवार वालों के पास थोड़े समय के लिए छोड़ा। अकेले ही ड्यूटी पर जोधपुर आए

Randhir believed in-----

O! Priests, What is on Fire ?

1- All things, O, priests are on fire-
But what are these things which are on fire?
The eye O prists is on fire
Forms are on fire
Impressions are on fire
Eye consciousnessis on fire
Whatever sensation (pleasant or unpleasant, or indifferent)
Originates in dependence on impresions received
by the fire, is on fire.

2. And with what are these on fire?
With the fire of passion,I say.
With the fire of hatred.
With the fire of Infatunation.
With birth
With old age
With death
With sorrow
With temptation
With misery
With grief
And with grief are these on fire

3 The ear is on fire
The tongue is on fire
Tastes are on fire
The body is on fire
Things Tangible are on fore
The mind is on fire

Ideas are on fire
Mind- consciousness is on fire
Impressions received by the mind are on fire Whatever sensation (pleasant or unpleasant, or indtfferent)
Originates in dependence on impressions received by the
Mind that also is on fire.
4 And with what are these on fire?

5 Perceiving this O priests the learned on noble disciple
Conceives an aversion for the eye
Conceives an aversion for the forms
Conceives an aversion for the eye consciousness
Conceives an aversion for impressions received by the eye. And whatever sensation (pleasant or unpleasant, or indtfferent)
Originates in dependence on impressions received from that also he conceives an aversion
Conceives an aversion for the ear
Conceives an aversion for the nose
Conceives an aversion for the odour
Conceives an aversion for the tougue
Conceives an aversion for the tastes
Conceives an aversion for the body
Conceives an aversion for the thing tangible
Conceives an aversion for the mind
Conceives an aversion for the ideas
Conceives an aversion for the mind-consciousness
Conceives an aversion for impressions received by the mind

6 And in conceiving this aversion he becomes divested of passion
And by the absence of passion he becomes free
And when he is free, he becomes aware that he is free
And he knows that rebirth is exhausted
That he has lived a holy life

That he has done what it behooved him to do
And that he is no more for the world.

शरीर थक्की आ मेरी ते रूह भी हुट्टी आ मेरा
ए सुखना दिख्खा करना में जे सुखना टुट्टी आ मेरा

जद पखेरू उड़ान बदलदा ऐ,
उसलै अपना शमान बदलदा ऐ।
हत्थ रक्खिऐ धरम पोथी पर,
माह्नु किन्ने ब्यान बदलदा ऐ?
टटैने दै स्हारै सूरजा दा,
कुन भला खानदान बदलदा ऐ?
नेईं खुंजने आह्ले तीरें तगरा,
तबका–तबका कमान बदलदा ऐ।
मशूक सूरत ते बदलदा नेईं,
गल्ला–गल्ला पर जुबान बदलदा ऐ।
चहरें–मोहरें गी बदलने तांईं,
न्हक माह्नु मकान बदलना ऐ।
''वियोगी'' आपूं गै अज गोआचे दा–
आखदा हा ओह् ज्हान बदलदा ऐ।

में रोया करलाया लेकन फिकर कुसा नै नेईं कीता।
मेरा सुनियै, कट्ट मनै दा गुबर कुसा नै नेईं कीता।।
शिवजी दे विषपान दा किस्सा लिखया पुरखें वेदें च
में कीता बिषपान तां ओदा ज़िकर कुसा नै नेईं कीता।

जिन्नां जैदै तंग, मीं मेरी अन्तरात्मा करदी ऐ
मेरै उप्पर इन्नां जैदै जबर कुसा नै नेईं कीता।
दिला दे तौर हे डिरगे फी बी साथ नभाया रूहा नै
बोली– तेरे माफक इरखी "हुनर" कुसा नै नेईं कीता।

मेरै बरोबर बौह्ने दी पामें ही मरजी सारे दी
मेरै आन्गर पर रत्ता भी–सबर कुसा नै नेईं कीता।
"गालब" दी गज़लें इच खूबी ऐ लफजें ते मैह्नें दी
ओह्दे आंगर गज़लगोई गी अमर कुसा नै नेईं कीता।

जेल्लै लोकें मिगी पुच्छेआ –कारण मेरी शोह्रत दा

जैहर प्याला दिक्खियै अग्गें अधर कुसा नै नेंईं कीता।

–झड़प्प–

माह्नु नैं परमातमा गी आखया–
''जिन्दगी च छाई दी ऐ लागरी।''
परमातमा नैं माह्नु गी दित्ता जवाब–
''एंट छैंट बोलने दी लोड़ निं–
बस्स मीं दस्सी दे इन्नी गल्ल तूं–
मेरा खैड़ा तूं कदूं ऐ छोड़ना?''
माह्नु नैं खंगूरिऐ फ्ही आखया–
''में तुगी दस्सा ना अपना हाल–शाल–
कीजे तूं ऐं हा बनाये दा मिगी–
ते मठोन्दे लै तूं मेरै अंग–सगं
इक छौरा मेरा दुआ तेरा ।
खुशिएं–हास्सें–खेड़ें च रलियै सदा,
ढारसां, मसारखां बी दित्तियां।
छौरे आंगर विचरदा चलदा रेहा,
लेकन जेल्लै मुशकलें मीं घेरया–
मतलबी यारें जन गैब होई आ।
बिन तेरे छौरे दै अऊं गरसाल आं–
परमातमा नैं माह्नु गी फटकारया–
मुशकलें च में तुगी चुक्की लेआ।
दौऊं छौरे इक्क–मिक्क होई गए।
तूं मेरे कनाड़े उप्पर हा सुआर।
इसकरी गै जीन्दा–पौन्दा तूं रेहा।''
माह्नु नै सुनिऐ एह् गल्ल आखया–
'' में जीन्दा आं ते ठीक आं परमातमा–''?
परमातमा नै माह्नु गी दित्ता जवाब–
''तूं जीन्दा एं ते ठीक एं में केह् करां?
परमातमा मसरूफ ऐ अपनी जगह!
ते अपनै थ्हार चित्थमचित्था आदमी!

ओ शिकारी(मौत)! क्या तुम नहीं जानते कि क्रौंच जोड़े में यदि एक भी मर जाता है तो दूसरा भी अपने प्राण दे देता है? दो तीर की जगह एक तीर से ही दो का शिकार किया जा सकता है?

शकारी

कुंजे दे शकारियो तुम सरफा मौती शा सिक्खो;
तङाणे मैहन्गे कारतूस जाया करदे ओ कैल्ली
जोड़ा कूंजे दा लब्बै तां इक्क मारियै दिक्खो
जे कियां दुई मरदी ऐ, मोई दी दिक्खियै पैहली
असल शकारियें गी हुतली काहली शोभा नि दिन्दी
असल शकारियें दा सवर ते डूगी उवर होन्दा
शकार विध्या विलकुल सम्पूरण होन्दी ऐ इन्दी
सवर शकारी विशेषज्ञें दागै असली सवर होन्दा
"वियोगी" कूजंड़े गी दिक्खो जोहदी "प्रेम" कूंजा गी
शकारी मौती नै इक बार करियै मारया ते फी
लगी बलगन उदी जकीनमी वियोग मौता गी
कूंजा दे बछोड़ें मारया फौरन वियोगी बी
इक्क बार करियै दो पखेरू जियां इस मारे
इदे कोला शकारियो शकार सिक्खयो सारे

19. जिंदगी , परिवर्तन का दूसरा नाम है। जिंदगी में कोई भी संबध स्थायी नहीं होता , जो संबध बनता है वह खत्म भी होता है। जन्म और मरण का साथ है। सृजन से विसर्जन, creation to destruction नित्य नियम है। जिंदगी क्या चीज है इसके बारे में कोई भी नहीं जानता है।

He believes in----Nothing is permanent except Change

हर कुसा दी बत्त होन्दी ऐ जुदा,
कोई भी रिश्ता नैईं रौंह्दा सदा।
कोई नि दस्सी सकै केह् ठीक ऐ,
गलत मुलत हर कोई ऐ सोचदा ।
अलविदा यारा, अगर म्हेशां लेई,
तां फिरी म्हेशां लेई गै अलविदा।
जिन्दड़ी दी बत्ता उप्पर में ते तूं,

गामज़न रौह्गे अगर मन्नग खुदा।

रूप बे–फौन्दे प जान इक्क ही,

इक्कबारी गै मड़ो होन्दी फिदा।

के "वियोगी"? जिन्दड़ी के चीज ऐ?

कोई भी निं कोई भी निं जानदा।KV

20. जोधपुर

10 अप्रैल 1988

जोधपुर आकर 4-tech के OfficerCommander पद पर जॉइन किया। किन्हीं भिन्न स्थितियों में यह उत्सव मनाने का अवसर होता। लोग उच्चपद पर प्रमोशन celebrate करते हैं। पर रणधीर के लिए यह महज एक रुटिन की आवश्यक क्रिया मात्र थी। यत्रंवत् नौकरी की ड्यूटी थी। लगन और ईमानदारी से योग्यता का पुरस्कार था। वायुसेना पहले दो बार VRS के लिये मना कर चुकी थी, पर अब मान लिया गया था। अगले 13 सालों की बची नौकरी में बहुत उज्जवल भविष्य था। 48 वर्ष की उम्र में मनुष्य अपनी सफलताओं का रसास्वादन करता है। आदमी यह सब अपनों के लिए करता है, एक सुखद भविष्य के लिए करता है। पर सुखद भविष्य को तो पंचतत्व में अर्पित कर आए थे। उम्र के इस पड़ाव पर जहां मनुष्य अपने पुरुषार्थ से घर परिवार के लिए जूझते हुए कुछ सकारात्मक फलों की अपेक्षा करता है,उन फलों को भोगने का अवसर आता है तभी नियति एक ही वार में सब छीन लेती है। मन का सुख चैन काफूर हो गया। भविष्य घोर अधंकारमय, अनिश्चित, कड़वा हो गया था। जीवन का प्रेम, विश्वास, आधार, आस्था सभी एकसाथ धुआं–धुआं हो गए थे। प्रेम, पम्मी, मात्र पत्नी ही नहीं थी, जीवन की धुरी थी। रणधीर के लिए वह सामान्य जन की पत्नी नहीं थी। बचपन से बेनामी पीड़ा, मां के बिछोह के बाद, घोर अकेलेपन की साथी थी। अन्दर से अकेलापन, अपरिभाषितअभाव, अक्षमता से जूझते जीवन में मिली एक साथी थी

। वह प्रेम–पम्मी न होकर कोई ओर भी होती जो रणधीर को भावनात्मक सहारा देती, तो वह भी उतनी ही कीमती, अनमोल रत्न होती। एक पुरूष का बचपन से मां के साथ आत्मिक संबध, संसार से बेगानापन, निपट अकेले होने का अहसास, विलक्षण बुद्धि, ईमानदार जीवन के उच्च मूल्यों का स्वामी जब किसी आकर्षक ''स्त्री'' से मिलता है तो वह संबध, सामान्य पति–पत्नी का न होकर , एक दैविक, पवित्र, आस्था की पूजा का प्रतीक बन जाता है। दैहिक सबंधों से उपर आत्मिक परमानंद का प्रतीक होता है। ऐसे में ''वह स्त्री'', जीवन का आधार बन जाती है। वही सर्वस्व होती है। जीवन की, दुनिया की, सारी धुरी होती है, ऐसे में पम्मी–पम्मी शब्द ही, जीवन मंत्र हो जाता है।

- जिस रोज तूं बनी मिरी शरीक जिन्दगी,
  उस रोजा थमां होई ठीक मेरी जिन्दगी।

- बदकिस्मती ने पहले मेरी जान तो लेली
  लेकन परेशानी में अब भटके है अकेली
  इतराती थी दिखला के जिन लकीरों को पहले,
  छिपा के बन्द मुट्ठि अब में रखती है हथेली ।

अभी तलक जीने के लिये कहती है हमको
लड़कपने में हम ने इक सूधीं थी चमेली
चूंके हम समझते हैं जिन्दगी को सहेली
हर बात इसकी इसलिये खुशी खुशी झेली

किस्मत ने अजीयत जो मुझे देनी थी दे ली,
बदकिस्मती ने अबके मेरी जान ही ले ली।
होकर जुदा मुझ से वो अब भटकेगी अकेली,
बदकिस्मती ने गरचे जान ही ले ली।

मुझको गंवा कर वो भी तो भटकेगी अकेली,
बदकिस्मती ने अबके मेरी जान ही ले ली।

रणधीर कहते हैं कि 'प्रेम' ने उन्हे वह दिया है जो शायद जन्नत में भी नसीब न हो। कारण, जब जन्नत ही उन पर मुस्कुरा दे तो सब तरफ खुशबू ही खूशबू फैली है।

जनैन्त जे कोई मुस्कादी ऐ

मैथुन मोसम च मस्त साह्न मुश्का सिंगियै भामें,
गमां गरमोई दीआं तुप्पियै हुल्लड़ मचान्दे न,
मोर मोरनिएं दी मरजिएं गी समझियै भामें,
भोगै तांई मनवाने गितै गै पालां पान्दे न।

मिगी जनैन्त कोई दिक्खियै जे मुस्करान्दी ऐ।
मिरी हस्ती दै उप्पर खुशगवारी हावी होन्दी ऐ।
नादीदा व्हाऽ जियां चानचक्क पत्तर ल्हान्दी ऐ,
खुरम ख्यालें दी मनै च आवा–जावी होन्दी ऐ।

खलूसी झुनक लगदी ऐ, अवो कुसै बी किसमै दी,
हवस जां वासना दी जिसमै बिच्च अग्ग लगदी निं,
ते बन्ना त्रोड़ियै सतीसर झील सील जिसमै दी,
त्रारे ग्रैह्न करियै, जेह्लमा दै आंगर बगदी निं।

अवो मीं दिक्खियै जनैंन्त जे कोई मुस्करादी ऐ,
मिरी हस्ती खशबोई गै खशबोई फैलान्दी ऐ।

पुरूष के जीवन में ऐसी स्त्री का थोड़ा भी कष्ट, परेशान करने वाला होता है। उस स्त्री को यदि महारोग ''कैंसर'' हो जाए तो स्थिति शोचनीय हो जाएगी। पुरूष, ऐसे में अपनी पत्नी को रोगमुक्त करने के लिए कुछ भी कर सकता है। रणधीर अपने तन, मन, धन, सारी क्षमताओं के साथ रोग के सम्मुख चट्टान के समान खड़े रहे। अपनी परम् मां वैष्णव दैवी, को जो हरवक्त साथ रहती है को बहुत मिन्नत की, हर मन्दिर, spiritual healing सबको नमन किया। मन में आता था कि ''मैने ऐसा क्या किया जा मेरे साथ ऐसा हो रहा है?''

पम्मी को कभी कोई रोग नहीं हुआ, तो यह महारोग क्यों हो गया? हमेशा पूजा–पाठ किया, सतीत्व पर कायम रही, तो ऐसा क्यों हो रहा है?

कैसंर के इस भूकम्प नें रणधीर का सारा जीवन नेस्तनाबूद कर दिया। सब खत्म हो गया। फिर यह प्रमोशन क्या अर्थ रखता है।

तड़फदिएं मच्छिएं आंगर

पूरे बाई साल गुज़रे प्रीत जप्फा लाए दे,
अवो, इयां ब झोन्दा हा, अखें अस कल्ल व्होए आं।
अजें इक म्हीना बी निं लग्गेआ तुगी गुआए दे,
फिरी बी लगदा एं जे सदियां होईआं न खंडोए दे।

पता निं वक्तै नैं अपनी गति गी बदली लैता ऐ
जां ढगं मेचने दा बदलेआ, मनै दे फीते नै?
जां दर्द दित्ते दा तेरी जुदाई दा असैह्ता ऐ,
ते वक्तै गी खडेरी रक्खे दा कनीते नैं?

शशोपंजें ते जक्को–तक्कें बिच्च मुब्तला होईऐ,
मेरी सोच डौर–भौर, लूरो–लूर फिरदी ऐ।
ते सुज्झ–बुज्झझक्कें–शक्कें बिच मुब्तला होईऐ,
तिरी मजूदगी दे बेल्ले दी गति सिमरदी ऐ।

ते जिन्दगानी ऐ गंजलोई दीयें लच्छियें आंह्गर;
बगैर पानिया दै तड़फदियें मच्छिएं आंह्गर। *XV*

प्रेम में पागल रणधीर , प्यार को पाने के लिये वे कुछ भी करने को तैयार हैं। गिरते घर से निकलना पड़ रहा है पर वे तो वापस उसी अपने घर जाने की जिद करते हैं।

मैं नहीं बोला तो अन्दर से मर जाऊँगा

और अगर बोला तो बाहर से मर जाऊँगा
मुशकलतरीं राहगुजरों से भी गुज़र जाऊँगा
जिस सिममत प्यार से भेजोगे उधर जाऊँगा
अभी हूं गोतागू जीवन के समुन्दर में चाहे
मुझे यकीन है इस गहराई से उबर जाऊँगा
दुनियादारी ओ अकल लाख मुझे रोकें–टोकें
तै शुदा वफा के रस्तों पर ही मगर जाऊँगा
कुंवर 'वियोगी'गिरते हुए घर से निकाला तो
सब से कहता है मुझे छोड़ो मैं घर जाऊंगा।
मेरी सादालूह वफा पर गर गौर करो
सोचों के जीने से दिल में उतर जाऊँगा
गलाया हिरदे नै अकला गी, ''ओ अकले समझदारे''
में मन्ना जां जे तेरा पल्ल होन्दा भारी ऐ।

रणधीर के जीवन में, उनकी इच्छा से विवाह और फिर जीवन में आये झंझावातों, जलजले, सुनामियों में बगैर थके जीवन साथी हमेंशा सामाजिक और मानसिक रूप से बराबरी से सहयोग में तत्पर रहनें से , ''प्रेम'' मात्र पत्नी ही नहीं, एक अनमोल पत्नी बनी, जिसने रणधीर को अन्दर तक छू लिया था।

भौतिक अस्तित्व न रहने पर भी दिल दिमाग पर छाई रही।.....

कल रात कुछ देखा जो दिव्य रूप से रोचक, मनभावना, मन प्रसन्न करने वाला था। पर उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, सिर्फ आत्मिकरूप से अनुभव किया जा सकता है। पम्मी! मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मन में इस सृष्टि का मानवीकरण हो गया है और मेरा शरीर खाली–खाली लग रहा है।

बे उनवान–1
त्रीमत मोई तां ऐसा मिगी मैह्सूस होन्दा हा,
जे श्रृष्टि दे खले दा मानवीकरण ऐ मन मेरा।
मीं अपना आप सारा बिलकुल सक्खना ब झोन्दा हा,

ते खाल्ली लगदा हा आला–दोआल तन–बदन मेरा।

तेरे मरने के बाद तेरे से मिलने के लिए किताबों से जानना चाहा पर कोई जवाब नहीं है। मनमरजी से जीना, नसीहतें या शराब में डूबकरजीया नहीं जा सकता है। मर्दानगी के जोर से दुनिया में इच्छा पूरी करने के तरीकें हैं पर तेरे बगैर कुछ भी ठीक नहीं है। तेरे बिना जीना नहीं है।

जब सारा संसार चुप है,
सोया है,पर आंखें नम और गला सूखा है,
तुम रोना चाहते हो,
श्वांस और नहीं लेना चाहते,
ओर जानते हो,
तुम्हारा प्रिय अब चला गया है।
–कुंवर वियोगी

रोज शाम को खाली कमरे में कुर्सी पर बैठ तेरी फोटो के आगे जोर–जोर से रोना है, शुक्र है कमरे में अकेला हूं। मेरे से अलग करना ही था तो भगवान ने मिलाया ही क्यों? रात को दवाई या दारू पीके सोने, सपने में तुझे देख बिलख– बिलखकर रोता हूं। पहले एकान्त वासी था, तुझसे मिलने के बाद आबाद हुआ पर तेरे जाने ने अकेला कर दिया है।

- Men and women who come into your line of vision from nowhere And vanish into nowhere

रोनी

रोजाना सञ औन्दी, ऐ रोजाना सञ औन्दे गै,
में अपने सक्खने कमरे च आईऐ कुर्सी प बौह्न्नां,
ते तेरे फोटू उप्पर सरसरी जन नज़र पौन्दे गै,
में आगा–पीछा भुल्ली जन्ना, फट्टि–फट्टियै रोन्ना।

दवा– दारू दा स्हारा लेईऐ जेल्लै रात्तीं लै सौन्नां,
तुगी सुखनें च दीक्खियै में बि'लकी–बि'ल्कियै रोन्नां।

मिरी दिनचर्या

तिरे परतोने तगरा बलगने तांई जे बड्डेलै,
मिरी मरजी करै तां रोन्नां पैह्ली बारी जीऽ भरियै।
ते दुईबारी रोन्नां डुसकी–डुस्कियै में उस बेल्लै,
जेल्लै तुं निं परतोन्दी पराजत मौतै गी करियै।
फ्ही रातीं लै में रोन्नां खीरली बारी मिरी जिन्दे,
मिरी दिनचर्या ऐ रोनी लगातारी मिरी जिन्दे।

मेरा, तुझे मांगना प्रेमीपना था और तेरा, मेरा होना तेरा अपने से बेगानापन था। परमात्मा का अचानक तुझे बुलाना बेवक्त–बेइन्साफी थी। जैसे अचानक हम मिले उसी तरहा अचानक बिछड़ भी गऐ।

- If you are thinking this then think again
  This thinking moment you may never gain
  That life is full of pain and pain and pain.

- जीवन,आत्मा और शरीर का मिश्रित संगीत है।

''वियोगी'' आतमा गी मोये दे अरसा होआ ऐ पर ,
जिसम बट्टा समें दी ढाला मूजब रिढ़का करदा ऐ।

भीड़ में भी व्यक्ति अकेला होता है। अधूरेपन का एहसास, अपूर्णता की अनुभूति बैचेनी उत्पन्न करती है। अकेलेपन का प्रहार उसके निजी परिवेश पर होता है, जो वातावरण जीवन शक्ति देता था, वह सिमट जाता है। बाह्य रूप से खुश पर आन्तरिक रूप से व्याकुलता और बैचेनी होती है, मन के भावनात्मक पक्ष को बाधित करता है । आन्तरिक आनंद को बाधित करता है। भावों की अभिव्यक्ति बाधित होने से मन का कोमल व्यापार बंद हो जाता है। व्यक्ति शीर्ष पर या घर का मुखिया होने पर भी अपने मन के निजी कोमल भावों को अभिव्यक्त नहीं कर पाता है। यह घुटन मन को

मथती है, जो व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती है। और इसेfrustrationका नाम देते हैं। गंभीर होने पर अवसाद मे परिवर्तित हो सकता है।

मूक, पूरा मूक खाली कमरे के एकान्त को सन्नाटे की खामोशी ने भर दिया है। चिंताग्रस्त, चुप, बेकरार, बेसब्र वियोगी को अकेलेपन ने घेरा हुआ है। लोहे की कुर्सी टेबल है जिसपर किताबें फैली पड़ी हैं।अन्दरूनी तड़प, मसानी इच्छायें, मसान हो रहीं है। पैन, पेन्सिल, एकान्त, अकेलापन सब बस खत्म होने के इंतजार में है।

मेरे वामांग में तुम हो,
तुम मेरी गुप्त शक्ति हो,
कितनी ही लंबी छलांग लगा सकता हूं,
अपने लक्ष्य को भेद सकता हूं,
अपनी जिम्मेदारियां निभा सकता हूं,
जब सिर्फ तुम मेरे साथ हो,

तुम्हारी सलाह, तुम्हारी बातें,
तुम्हारी आवाज, तुम्हारी हिरणी सी आंखें,
तुम्हे हंसता देखना चाहता हूं,
तुम्हारा आलिंगन,
तुम्हारा स्पर्श फिर चाहता हूं।

चुप्पी, निःशब्दता, निस्तब्धता, नीरवता, मौन, शब्दाभाव, शान्ति, सन्नाटा, खामोशी सभीsilence के पर्यायवाची हैं। घर आने पर जहां क्वार्टर थे सब जगह निःशब्दता थी। अन्दर के भयानक शोर को बाहर की खामोशी, चुप्पी और नीरवता हरा नहीं पाती थी, बल्कि ओर उत्तेजित करती थी। ध्यान बंटाने वाला कोई नहीं होता था जो उन्हे उस wishcircleसे बाहर निकाल सके ।

अखीरी इन्तजारी

मूक, बिलकुल मूक, बिलकुल मूक, सक्खना कमरा;

अकांतै ते सन्नाटे ते खमोशी नैं भरोचे दा।
'वियोगी' निम्मोझान, चुप्प, बेकरार, बेसबरा;
इक्कलताई दे प्रेतै फगड़ियै दबोचे दा!

मंज्झा झिक्कम–झिक्का, इक्क कुर्सी, टेबल लोहे दा;
कताबां खिल्लरियां दरजनां, खलार पाए दा।
कुसै मसानी जुस्तजुऐ च मसान होए दा,
कुसै अन्दरूनी तड़फनै दै मूजब बित्तोताए दा।

पैन्न,पैन्सलां, कागद ते सोचां पेचान्दर–पेचा,
ते गुन्गी जीभ, सुज्झै–बुज्झै दी खड़ोत मनटुक्कू।
संतापी चौबिएं घैंटें पलेच पाए दा चेचा–
अकांत, इक्कलताई, मूकता ते वक्त अनमुक्कू।

एह् इक्कै खेड़ा दे हिस्से न ते इक्कै खडारी ऐ,
ते सबने गी एह् खेड मुक्कने दी इन्तजारी ऐ।

प्रेम! तुम्हारे रिश्तेदार यह चर्चा करते हैं कि तुम मेरे साथ तगंदस्ती (अभावों)में रहती हो, यह इनामशुदा फौजी तेरा हुक्म का गुलाम है। पर तूने इस वियोगी का कण–कण प्रसन्नता से भर उसे धन्य कर दिया है।

नजरिए

तिरी पेठा दे रिश्तेदार जिन्दे करदे हे चरचे
जे व्होईऐ मेरै कन्नें रेही तुं म्हेशां तन्गदस्ती च।
मिगी हा तेरै कन्नें वालेहाना इश्क अगरचे
प फ्ही बी तूं दुखी रेही ही मेरी सरपरस्ती च ।

मिरी भेठा दे रिशतेदारें दा जकीन हा पक्का,
जे एह् तगमा–शुदा फौजी कवि गुलाम हा तेरा,
ते तेरी कुंग्घली हस्ती च हा मशगूल बेझक्का,
इदे कनै–कनै प हुकमरान काम हा तेरा।

तिरी सपुर्दगी लेकन मिगी जवाब दिन्दी ही,
जे तुक्की मेरै छुट्ट बाकी दुनियां दी फिकर हैन्नी।

तूं जि'यां मेरै बिच्च आपा छोड़ियै समीन्दी ही,
उदे शा नन्ददार कोई संभोगी शिखर हैन्नी।

'कुवंर वियोगी' दा जीना तूं जिन्दे धन्न कीता हा,
ते कैन्तर–कैन्तर ओह्दे होने गी प्रसन्न कीता हा।

रणधीर जानते थे कि वक्त, किसी भी जख्म, सदमें के लिए एक औषधि है, पर यह वक्त काटना भी एक सदमे से कम नहीं है। यह स्वंय का अनुभव है।

वक्तै दा हरबा
सरासर गल्त–ब्यानी, झूठ, धोखा, बरगलावा ऐ,
जे वक्त डूंह्गे शा डूंह्गे जखम बी ऐ भरी दिन्दा।
झूठै दा सचाई गिर्द साह्–घोटू कलावा ऐ,
जे वक्त सदमें दा कसरीपुना राज़ी करी दिन्दा।

ते सदमें ते जखम छपैलना वक्तै दा हरबा ऐ,
'वियोगी' गी पता ऐ, एह् उदा निजी तजर्बा ऐ।

लोग अपने किए वादे अक्सर भूल जाते हैं, तेरे पास आने के लिए मैं खुदकशी करूं पर डर लगता है कहीं भूत–प्रेत बना तो? दुनिया त्यागकर भी तेरी मौजूदगी महसूस की जा सकती है। इसलिए अपना वादा भूल न जाऊँ तो लिख देना चाहता हूं।

इस करियै लिखा करनां
जुबानी वा'यदे करियै लोक अकसर भूल्ली जन्दे ना,
में अपने कीते दे वा'यदे गी इस करियै लिखा करनां।
तिरे मरने परैन्त जीवन दे जेह्ड़े चकन्धे न,
उन्दे चा निकलने दे तरीकें गी मिथा करनां।

जे में खुदकशी करियै मरी जाने दी सोचां तां,
मीं भूत बनियै दर–दर भटकने थमां ऐ डर लगदा।
जे ढेरी ढाईऐ आपा बिस्सरी जाने दी सोचां तां,
मी अपनी इन्द्रियें दे भड़कने थमां ऐ डर लगदा।

मन आखे पांडुएं आंह्गर बिजन जिस्म त्यागे दे,
त्यागी ओड़ां दुनियां गी ते तेरै कोल आई पुज्जां,
लाने लान्दे रौह्न्नां अज्जकल एह् गै सुत्ते जागे दे,
जे तेरी मखमली मजूदगी कियां करीं बुज्झां?

लुकाई आखै निं 'वियोगी' नैं पूरा निहो करना,
में अपने कीते दे वा'यदे गी इस करियै लिखा करना।

ओ प्रेम! मरने की जगह जीने की भट्टी में गमगीन होना, काम में तुझे भुलाने, अपने दर्द की आवाज को अनसुना कर जीना चुना है। इसलिए मुझे बेवफा मत समझना।

ओ मेरी माशूका आ, मै माचिस की तीली और तू चन्दन की अगरबत्ती है, हम एक दूसरे के पूरक हैं पर बड़ा अन्तर है। मै अपनी पीड़ा के कूड़े को जलाता हूं जो रोशन हो भस्म हो जाता है पर तू जलती है तो हरतरफ खुशबू फैलाती है। पर तूजलती, मेरी पीड़ा से ही है। मेरी पीड़ा पर तू खुशबू का परदा डाल सकती है तो क्या जुदाई का इलाज ऐसा तिलस्म हो सकता है?

अथर्ववेद में चकवा–चकवी के जोड़े का विशेष वर्णन है। इन जीवों की जोड़ी को निष्ठा व अप्रतिम प्रेम के प्रतीक माने गए हैं। प्राचीनकाल से ही कवियों द्वारा इन्हें वियोग और संयोग के प्रतिबिबं के रूप में लिया जाता हैं। माना जाता है कि दिन में इनका जोड़ा साथ में रहता है पर रात को बिछुड़ जाता है और रात भर चकवा, चकवी को पुकारता रहता है। प्यासे चकवे की चीत्कार स्वाति नक्षत्र की एक बूँद के लिए भी होती है। स्वाति नक्षत्र में गिरी पानी की बूँद यदि सीप में गिरती है तो मोती बनती है, यदि सांप के मुंह मे गिरती है तो जहर बनती है पर अगर चकवे के मुंह में गिरती है तो उसको तृप्त करती है। मेरा चित्त चकवे के समान स्वाति नक्षत्र की अमृत की बूँद की तलाश मे भटकता है। चकवी के मिलते ही दुनिया स्वर्ग के सागर

के समान लगती है। पर चकवी का स्वाद चखने पर यह सागर भी खाली लगता है। तेरी तलाश में यह चकवा **चश्में का चक्कर लगाता रहेगा, न मिलने पर मर मिटेगा।**

गमों का अन्त नहीं है पर सुखों का स्रोत भी कभी सूखता नहीं है। यार दोस्त इस गम से बाहर आने को कहते है , जिन्दगी कभी फीकी नहीं रहती है। पर मै तेरी याद भुला नहीं सकता हूं, तेरे बिना जीवन मौत से भी बदतर होगा।
तेरे बगैर जीने की मैने कोशिश की, जितनी में कर सकता था। तू जहां भी है, जैसी भी है, मेरी 'मिश्री' सुन–शरीर थकने लगा है।
हे ईश्वर! पहले तो उस हूर को मुझसे मिलाया, फिर अचानक उसे दूर कर दिया। तूने मुझे लिखने का हुनर दिया है कि मै दुःखों के गीत लिखता रहूं और तेरे इस निर्दयी मातम में कैद रहूं । असहनीय पीड़ा दी, संगीन गम दिए, बतला क्या मैने कभी बगावत की? तू ही सजा देता ह, तू ही फैसला देता है पर अब अगर तू यह समझे कि मै सहमा–सहमा सब सहता रहूंगा तो यह तेरी गलतफहमी है।

ओ गहरे सागर बता तुझ में कितना पानी है?, ओ आकाश, बता तुझमें में कितने तूफान हैं?, ओ मन! तुझ में कितनी सोच हैं? ओ आत्मा तू क्यों इस शरीर में आयी? तुझे किसकी तलाश है? हे ईश्वर, तूने मनुष्य क्यों बनाया? नर–मादा क्यों बनाये? बनाया तो बिछुड़ा क्यों दिया? सारा तहस–नहस क्यों किया? वियोगी, तू ही **प्रश्न** करता है, तू ही जवाब देता है।

ओ चिड़िया! ये जानते हुए भी कि चिड़े खुदगर्ज होते हैं, तू अपने चूजों को उसके भरोसे छोड़ गई। ऐसा अनर्थ क्यों किया? वे भूखे हैं। कहीं बाज शिकारी उनसे अपनी भूख न मिटा ले। वियोगी तो अपने गम में लीन है, तेरे बगैर पंखहीन चूजें शिकार होगें या भूख से न मर जायेगें?

मैं अपने को खाली बोरी सा अनुभव करता हूं। तेरे होने से मै कीमती था पर अब तेरे न होने से बोरी ढ़िली हो गई है। तेरे आने से पहले मै मामूली था।

तेरे निधन के बाद तेरी सारी चिट्ठियां एकबार पढ़कर जला दी, कि कहीं दूसरा पढ़ न ले, ये नितान्त निजी हैं। ये प्रेमकोट है।

ध्रुव तारा स्थायित्व, नित्यता, स्थिरता, अचलता, अनन्तता का प्रतीक है। वियोगी जी ने व्यक्ति को, स्वयं का ध्रुवतारा बनने को कहा है। जब व्यक्ति स्वयं का ध्रुव तारा बनता है, अर्थात स्वयं की आत्मा को पहचानता है, तब वह आत्मा ही उसकी ध्रुव तारा बन जाती है। आत्मज्ञान या आघ्यात्म का ज्ञान होने से संसार में कुछ भी नहीं बचता है। कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता, आत्मसहारा होने पर किसी बाह्य सहारे की जरूरत नहीं होती, किस्मत पर आधारित न होकर खुद ही अपनी किस्मत बनाता है, होनी उसकी चाकरी करती है, देवता–दानव के प्रभावों से दूर रहता है। मनुष्य के डर, शक, भूत–भविष्य के कर्म सभी अप्रभावी हो जाते हैं। आकाश में चमकते धुवतारे के समान मनुष्य का आत्मज्ञान ही जीवन की धुरी, स्थिरता, अचलता, अनन्तता और नित्यता हैं इसलिए मनुष्य को स्वंय का ध्रुव तारा बनना चाहिए। (लगता है इस तरह के विचारों का प्रस्फुटन वियोगी जी की जीवन धारा को उनके वर्तमान फेज (phase) से निकलने का इशारा हो सकता है)

सुबह उठकर तैयार हो नौकरी पर जाना ,वहां से आकर मैस का खाना, खाना। सूने कमरे में फिर वही अकेलापन, निर्जन एकान्त, कब तक किताबें पढ़ी जा सकती है? टीवी देखा जा सकता है? बीच में कभी ऑफिस का काम होता, शाम–रात का ऊबाने वाला सन्नाटा, न कोई संगी न साथी, यूनिट के लोगों से

मेल–मिलाप सीमित ही होता है। मन कितना ही दुखी क्यों न हो पर करीबी लोगो से संवाद ,मन को हलका करता है। परिवार के सदस्य यदि अपनी सुविधानुसार बारी बारी साथ रहते तो शायद स्थिति इतनी भयानक नहीं होती। परिवार के करीबी सभी स्वतंत्र व आत्मनिर्भर हो चुके थे, रणधीर के लाख मना करने पर भी अकेला नहीं छोड़ना था। प्रश्न उठता है कि क्या आज्ञाकारी, आलोचक भी हो सकते हैं? अवसाद में आदमी कुछ भी कर सकता है। पत्नी की मृत्यु के चंद दिनों बाद ही निपट एकान्त/सन्नाटा/घर का तितर–बितर होना/उम्र के इस पड़ाव पर सारे रास्ते बंद होना/अनिश्चित भविष्य, किसी भी व्यक्ति को पागल होने या खुदकुशी करने को प्रेरित करता है। ऐसे में आदमी खुद भी निकलने की कोशिश करे तो स्वंय का मन ही कचोटता है। मन के ये दो विपरीत भाव आदमी को विचलित करते हैं। यह स्वंय को ऐसे वातावरण में कैद करना है। कहीं सुना था....

कल खो दिया आज के लिये
आज खो दिया कल के लिये
कभी जी न सके हम आज
आज के लिये
बीत रही है जिन्दगी,
कल आज और कल के लिये

लोग पूछते हैं कि तेरा चक्काजाम क्यों है? मैं बोलता हूं कि मेरा जीवन एकतरह से लकवा ग्रस्त है। मेरा जीवन एक मायूसी की गिरफ्त में है। मेरे जीवन के कलपुरजे गड़बड़ा गये हैं। जीवन समुद्र की गन्दगी, मायूसी किसी तरह न बाहर निकलती है न पिघलती है मैं इसमें उलझ गया हूं इसकारण चक्काजाम है।

प्रसिद्ध पचतंत्र की कहानी है... लालच का सातवां घड़ा, जो कभी नहीं भरता। इच्छाओं के सभी घड़े भर जाते हैं पर लोभ का घड़ा कभी नहीं भरता है। कारण, एक इच्छा पूरी होते ही दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। इसतरह अनंत इच्छायें एक के बाद एक पूरी होने पर मन कभी भरता ही नहीं। आदमी सारी मान मर्यादा, धर्म–कर्म, को तिलांजली दे देने पर भी अपने लालच को पूरा नहीं कर पाता है। ऐसे ही पम्मी तू मेरे लिए सातवां घड़ा बन गई है इसको भरने का मेरे पास साधन कोई नहीं है। तेरी आकांक्षा कभी पूरी नहीं होती है।

वियोगी कहते हैं कि उनकी गृहस्थी पांच चीजों से बनी माला थी। उनकी श्रीमती एक धागा थी, तीन हीरे जैसी पुत्रियां थीं और स्वयं बट्टा था जिसने सबको संगठित रखा था। गृहस्थी में हंसी–खुशी का आलम था, आनंद अपने चरम पर था, तभी अचानक सुनामी का जलजला आया और ''पंजवसतमी'' माला नष्ट हो गई। धागा भस्म हो गया, अपनी काया ही बदल ली और धागे के नष्ट होते ही सब बिखर गऐ।। हीरे माला से बिछुड़ गये। बट्टा मरसिये लिखता रह गया।

तेरे मरने के बाद दोस्त मिलकर समझाते हैं कि जिंदगी को अकेले काटना ठीक नहीं है। आंसू बहाते, अपने जख्मों को जिंदगी का नासूर बनाते ,जीने का कोइ अर्थ नहीं है । एक की मृत्यु होने से सुखों के स्रोत सूखते नहीं है।

प्रेम तेरे साथ मरने से ज्यादा दुःख तेरे बिना ऐसे जीने में है।

तुम्हे भुलाने की कितनी ही कोशिश की है, जो तुमसे छुपा नहीं है, पर भुला नहीं पाया हूं। तुझे चाहने की इच्छा अभी भी मन की गहराईयों में कहीं रोशन है। पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता हूं। मै, जिंदा ही तेरा इन्तजार करता हूं। जानता हूं मेरी खुशी के लिए यह जहर है।

21. जोधपुर

12..9..88

गमों के अधंकार में उम्मीद की किरण नजर आती है। रोशनी की किरण को कोई भी रोक नहीं सकता है। इश्क की आग, पीड़ा की हूक और प्रकाश की किरण को जमाना रोक नहीं सकता है, किसी न किसी छिद्र से प्रवेश कर ही जाती हैं। गम और खुशी का अटल सबंध है, इनका चक्र है। गम के बाद खुशी आती है। अपने गमों से बाहर आने के प्रयास में ,वियोगी अपने को थोड़ा बेवफा अनुभव करते हैं। अपने ध्यान को दूसरी तरफ मोड़ने पर उन्हे लगता है कहीं ये गलत तो नहीं? हरवक्त गम में डूबे रहने, हर समय आंसू बहाने की दिनचर्या से उबरने की कोशिश में ,उन्हे लगता है कि ये उसे अपने से दूर कर रहें हैं। व्यापार में हानि को हरवक्त रोने से काम नहीं चलता है, उससे उबरने के प्रयास करने पड़ते हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति , जलजले के बाद फिर अपने आपको जीवन में पुनर्स्थापित करता है, इसमें उसकी मूल्य–मान्यताऐं–संस्कार उसकी सहायता करते हैं। पत्नी बिछोह के गम से बाहर आने के प्रयास में वियोगी जी अपने से

ही खफा होते हैं, कई जगह उन्होने अपने हृदय के मांस को खाना बतलाया है। बार–बार अपने जख्मों को हरा किया है, इस मानसिकता में दुख से उबरना भी खुदगर्जी लगती है। पर बारबार उबरने के इस प्रयास में उन्हे सफलता मिलती है और तैर कर किनारे पर आना चाहते हैं।अपनी पत्नी से, अपने को कृतघ्न नहीं मानने को कहते हैं।

उसे एकटक निहारना, उससे स्वर्गीय आनंद भोगना, उसका मेरे अंश–अंश को स्वीकारना, यही जीवन था। इस अल्पकाल के बाद असामयिक मृत्यु ने जीवन रोक दिया। धर्मसूत्र कहते है– यह विधि का विधान है, यह किस्मत में लिखा था। मैने तो कुछ अधर्म नहीं किया फिर ऐसा क्यों हुआ? हे गुरुजनों!, हे मित्रों! हे धर्म में विश्वास रखने वालों! बताओ, मै जिंदगी कैसे बिताऊँ?

कियां कट्टै जिन्दगानी?
लड़ी दिक्खी करी में , मोतिए दी, ओह्दे जूड़े इच,
उसी दिखदा रेहा टऊ होईऐ, होठ खोली निं सकेआ।
मिरा सब गालड़ूपन गुम्मी आ लाखै दे चूड़े इच,
ते जो किश बोलना चाह्न्दा हा, ओह् में बोली निं सकेआ।

अवो, किश बोलने दी लोड़ बी हैन्नी ही बिलकुल गै,
की जे मेरे अंशै–अंशै हा स्वीकारेआ उसगी।
बहिश्ती काम–नन्द लैता हा लेकन घड़ी पल गै,
जदूं बेवक्ती मौतै नैं हा आईऐ मारेआ उसगी।

धर्म–सूतरें अनुसार ऐ एह् करनी किसमत दी,
मिरी समझा च नेईं औन्दा जे सूतरें गी केह् आखां?
काम–कांड मौकै सिफ्त सौ करदा में जिन्दी,
उनें गी कोह्कै मूंह् कूड़ा–मकूड़ा, भक्ख, खेह् आखां?

ओ मेरे दोस्तो, शरदालुओ, गुरूजनो दस्सो,
'वियोगी' कियां कट्टै जिन्दगानी सज्जनो दस्सो।

ज़िंदगी बीतनी थी, बीत गई, मौत ने भी काम कर दिया, गहन दुख सेसराबोर भी किया। स्यापा भी हार गया, जीवन फिर जीत गया। खुशी–ग़म का चक्र चलता रहता है। ग़मों के अंधेरे बादलों में खुशी की किरण ने प्रवेश किया

बीतनी ही जिन्दगी– बीती गई,
मौत बाजी खीरली जित्ती गई।
माढ़ी करनियें ए ऐ चेचगी,
मूहां जो आखी सदा कीती गई।
स्यानपें दी सीलमा हारी गई,
इशकें दी दीवान गी जित्ती गई।
गल्ल ए होई तुसाड़ै सामनै,
गल्ल निं साढ़े थमा कीती गई।

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मै अपने आने वाले सारे कल के बदले पिछले कल को पा लूं? मै अब ओर जीना नहीं चाहता हूं, मेरी सारी उम्र ले लो पर फिर ''वे'' ही दिन दे दो।

" Could one make a deal like that,
Trade all one's tomorrows for a single yesterday".

मन अपनी इन्द्रियों से सुख–दुःख अनुभव करता है, मन के दो साधन हैं– शरीर और बुद्धि। मन का विस्तार होता है–भावनाओं ओर विचार से। भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति से मन को, मनुष्य को आनंद, तृप्ति, संतोष मिलता है। यही दोस्त, परिवार,समाज बनाता है। संतुष्टि के बिना धन, यश, पद कोई अर्थ नहीं रखता है। मूलरुप से मनुष्य अपनी बात, क्रिया, कर्म की स्वीकृति, अपनों से पाने पर ही संतुष्ट होता है। अपने निजी सुखों–दुःखों को भी अपनों के साथ शेयर करना चाहता है। मन की बात कहने–सुनने वाला न हो तो आन्तरिकरुप से असंतुष्टि होती है। विचारों को प्रभावी होने, न होने के पीछे भावनायें ही होती हैं। जीवन के लगभग सभी कार्य भावनाओं पर आधारित होते हैं । तर्क और बुद्धि से निर्णय भी होते हैं। भावनाओं की दो

मुख्य श्रेणियां है– डर और इच्छा। किसी भी चीज की इच्छा करने या डरने से मनुष्य उतना ही ज्यादा आकर्षित होता है और उस विचार या परिस्थिति का जीवन पर उतना ही ज्यादा असर होता है। किसी सकारात्मक या नकारात्मक विचार के साथ डर या इच्छा जुड़ी है तो अवश्य ही मन को आकर्षित कर सकती है।

ओ दोस्तों! तुम्हारी सलाह ठीक नहीं है, कारण, अपने जीवन साथी को गंवाकर कोई कैसे जिंदा रह सकता है? इसपर बहुत लिखा गया है। पर किताबें मेरे अकेलेपन का इलाज नहीं है। नये रिश्ते जोड़ना याने दूसरे रिश्ते को भूलना है, यह भूलना ही तो बिसराना है। दोस्तो, तुम्हारा शुक्रिया।

आश्वासन निं देओ यारो
तुन्दा फर्ज़ ऐ, तुस आश्वासन ओ मिगी दिन्दे,
ते तुन्दा दोश निं जे तुन्दे आश्वासन थोथे न।

रणधीर, दिल–दिमाग से अपने अकेलेपन से निबटने के कई रास्ते खुलने की बाट जोह रहे थे पर उन रास्तों के दरवाजे खोलने की सोचकर भी खोल नहीं पा रहे थे। कोई भी रास्ता खोलने का अर्थ बिछुड़ी साथिन से अलगाव, बेवफाई, दूरी बनाना कहीं मेरे लिए शर्मिंदगी का सबब तो नहीं होगा? यह डर अपने आपको परखना, जांचना और निश्चित करना कि क्या नया रिश्ता ठीक होगा?

छोटे भाई की शादी जोधपुर में ही करदी थी। बहू के रिश्तेदार रणधीर के लिए match-making कर रहे थे। दो रिश्ते भी आये। पर रणधीर दूसरी तरफ भी सोचने लगे थे।

डर दा ऐ मन मेरा

इक्कलताई च अजब खेआल उज्जै करदे न;
ओह् रस्ता फगड़ने दे, जेह्ड़ा में अपनाया निं आहली।
दमागै चा, दिलै बिच्च आईऐ लफ्ज गूंजै करदे न;

ओह् द्वार खोह्लने दे, जो में खोह्ल्ली पाया निं हाल्ली।

मीं डर ऐ इक्क भेठा, बिच्छड़ी दी साथनै कन्नें,
करियै बेवफाई आप कोखू शर्मनाकी दा
ते दुआ डर ऐ मीं– नवीन रिश्ते गंडुने कन्नें–
अगामी रिश्तें दे सेआदें दी मारू सफाकी दा।

नमें रिश्ते बनाने दा करै करदा ऐ मन मेरा,
प शर्मनाकी ते सफाकी शा डरदा ऐ मन मेरा।

22. जोधपुर

23...11..88

वियोगी की खुशी का वास्ता है, ओ दोस्तों कुछ तो सहायता करो। मुझे सहारा दो, अपनी सच्ची दोस्ती से मुझे राहत दो, कुछ आराम दो।

गैरें निं करना गौर पर तुस ते करो यारो
दिन्नां खुदा दा वासता किश ते करो यारो
हिरखा दा निग्घा मूंढा, मेरी ठंडें गी देईऐ
कूले फुल्ला पर दा त्रिक्खे कंठें गी देईऐ

जोधपुर

9--12-88

वियोगीजी को उनकी साथिन मिलने का अहसास हुआ तो मन में कुछ अपेक्षा की कि उस स्त्री का मन भी प्रेम से भर दे,कोई मुझे बेवफा भी कहे तो ध्यान मत देना।

मशवरा

मिगी आखन लगी मरदे लै, ''बलमा! इक कम्म करेआं;

कुसै जनानी कन्ने जोड़ेआ संग जे मिरे मगरा,
उसी बी मेरै आंह्गर गै लबालब हिरखै नें भरेआं–
ओह्दी हस्ती दी शरूआतै शा लेईऐ इती तगरा।

कोई जे बेवफा आखग तां बिलकुल ध्यान निं धरेआं।
कैम रक्खेआं अपना तुं खालस, चोनमां जिगरा।
जे ऐसा करनें तैं मरना पवै, तां बालमा मरेआं,
अवो निं जरकेआ रत्ती तुं मेरी दस्सी दी डगरा।

तिरी सगंध ऐ मिक्की, तुगी एह् मशवरा दिन्दे;
मेरी हस्ती उप्पर मेरी खुदगर्जी दा गलावा ऐ।
कुसै दुई जनैन्तै दे जे सोके कारगा तु थिन्दे,
तां उ'न्नैं सोचना ऐ; मिरा जकीनी दाह्वा ऐ–

बड़ी गै भागशाली ही उदी साकन, तिरी प्रेमी,
तुगी ऐ मशवरा एह्का देआ दी तां करी प्रेमी।''

मिथून मरजी दमागा च जनम लैन्दी ते मरदी ऐ,
शरीरिक मरजीयें कन्नैं सदा खिलवाड़ करदी ऐ।

ओ सप्त–ऋषियों , जैसे तुम गुरूत्वाकर्षण से ध्रुवतारे के आसपास घूमते हो उसी तरह मेरा जीवन भी मेरे ध्रुवतारे के आसपास घूमता है। पर जिस दिन मेरा ध्रुवतारा भस्म हो गया तब मेरी दिशा बेमानी हो गई। हे सप्त ऋषियों, सुबह होने से पहले मेरा मार्गदर्शन करो।

सप्त–रिशियो मिगी सद्दो, मिगी पकड़ो? मिगी साम्भो,
दशा–दरशत करो तुस मेरे ध्रुव मरकज दी मेरे तैं
मेरी सर्वव्यापी इक्कलताई पासै तुस हांभो
गुरूत्वाकर्षन मरकज दस्सो मीं तुस मेरे घेरे तैं

में पुरकशश मरकज दै, गिर्द घुम्मा करदा हा
ओ मरकज जिस दिना कोला गुआचे दा खतम होया

मेरा जिन जिस दे कारण नच्चा–झुम्मा करदा हा
आहे् मरकज जिस दिन कोला हिसली आ, भसम होया

ऐन उस दिना कोला मिगी बत्तें दी थौ हैन्नी
ऐन उस दिना कोला मिरा जीना बे मकसद ऐ
जदूं शा मेरी जिन्दगानियां च शामल ओ हैन्नी
रोजमर्रा दी जीना मिगी लगदा, तरद्दद ऐ

सप्त रिशयो मिगी दस्सो अगर तुस दस्सी सकदे ओ
सवेरा होने शा पह्लें डगर तुस दस्सी सकदे ओ।

जब भी मैने किसी को चाहा तो तेरी याद आयी, कभी खुश हुआ तो तेरी याद आयी, किसी को अपना कहा तो याद आयी, अकेले बैठे मन घबराया तो तेरी याद आयी, सब जगह, सब समय तेरी याद आयी।

उपरोक्त परिवार और उनके जीवन में कैंसर के कारण आयी सुनामी से परिवार तितर–बीतर हो गया था। मानसिक और आर्थिक रुप से गहरा आघात लगा था। सबके अपने–अपने अकेलेपन थे। सबको सींचने वाली जड़ सूख गयी थी। मनुष्य के जीवन में मां और पत्नी, नारी के के वे रूप हैं जो उसको कायम रखने के लिए धूरी होते हैं। घर की रूह होते हैं।अगर किसी तरह मिल जायें तो उन्हे फिर से जाने नहीं दूगां।

आए तां वापस जान निं देना में ऐ गति,
कोई बहान्ना–शान्ना लान निं देना में ऐ गती।
दित्ती दी चिज वापस लैना पाप ऐ चन्ना,
दित्ते दा दिल परतान निं देना में ऐ गती।

रणधीर अपने दुःखों, वेदना से व्यथित थे, पर उनके स्वाभाविक आत्मविश्वास, धैर्य, साहस और जिजीविषा ने उनका साथ नहीं छोड़ा था। जब इच्छाऐं थीं तब साधन नहीं थे और जब साधन हैं तो इच्छाऐं मुरझा गई हैं। पर तब भी वे हैं, वो जीवित हैं।

कितनी ही विपदायें आयें, प्रलय हो पर सृष्टि का प्रवाह अनवरत बहता ही रहता है। समय बदलता है, स्थितियां बदलती हैं, मनोदशा भी बदलती है, जीवन में जूझता आदमी छटपटाता है और अपने को बनाये रखने के लिए प्रयास करता है। यह प्रयास सायास नहीं होते, एकतरह से reflectionsहोते हैं। इस सब के लिए सिर्फ एक लम्हा चाहिए, एक क्षण में ही सब बदल जाता है।

MOMENTS

You came to me on tiptoe, unannounced,
The fleeting Time was frozen in its tracks
The beauty of that lovely, perfect moment.
(That neither had a future, nor, no past,
Which rustled like a dream in its ferment;
And like a dream was, in a moment, lost),
Has lived with me forever, ever lingers,
And probs my senses with its velvet fingers.

रणधीर सोचते हैं... कि आधा जीवन बीत चुका है, शतरंज की बाजी जम गई है। भविष्य की रूपरेखा बन गई है। अंधकार ही अंधकार है। जीवन की योजनाओं के आधार तक बने नहीं है। इन घोर ऊँचे पहाड़ो के पार शायद मनभावने हरे–भरे मैदान हों।

TENUOUS HOPE

My forty springs are gone; half my life
Is buried and entombed in the past,

And tunes emanating from my life,
Are shallow like my breathing, fading fast.

Ah! I have come to understand, at last,
My chances have been taken, choices made-
And for this every die has been cast.
And time has come to sing the serenade.

And future seems a puppet on parade.
Connected with the past, and pre-empted
Are all my great ambitions. Every raid,
Which I had planned for this is unattempted.

But just beyond this grey and towering hill,
New vistas may be waiting for me still.

जीवन के हर स्तर पर अपने अपने भावों, अपेक्षाओं के भंडार होते हैं। अपने प्रारब्ध के अनुसार हर व्यक्ति जीवन जीता है। उस प्रारब्ध को बदला नहीं जा सकता पर थोड़ा परिवर्तन किया जा सकता है। व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से या अपनी आध्यात्मिक आस्थाओं के संबल से अपने प्रयोजन को सार्थक कर सकता है।

अधिकतर हम सब अपने भूतकाल को वर्तमान से, खूब बढ़ा–चढ़ाकर सोचते और बतलाते हैं। वर्तमान को कमतर मानते हैं। इसतरह वर्तमान का मूल्यवान समय व परिपेक्ष्य को भूतकाल पर न्यौछावर कर देते हैं। हाथ में न वर्तमान आता है न भूत ही रहता है।

SHADOWS OF PAST
Sometimes I think, the past is glorified,
Unjustly, its importance is inflated.

And present is unjustly denigrated
Mysteriously berated and decried.
Or is it possible we reminiscence
With pleasure battles joined fears won
To appreciate their hidden excellence
And tend to forget pains and done
And this way are then able to retreat,
To shawdows of the past- bitter sweet.

मनुष्य , भूत और भविष्य के साये में वर्तमान में जीना भूल जाता है। जब कि सबसे महत्वपूर्ण आज में जीना है। रणधीर भी जाने–अनजाने अपने भूत की यादों को अपने वर्तमान पर छाते देख रहे थे।

IN PRAISE OF PRESENT

Let future come, O! as it might.
In darkness hidden or with dazzling light,
And let the past remain buried deep,
Below the dormant hope's rising heap.

And let no past or future touch your brow,
And all connections with them disavow,
And live in present moment unsubdued,
And never on the past or future brood.

O! if you, with your present rightly cope,
And do not in the past or future grope,
Then unobstructed you will make a name,
For caution doesn't ever win the game.

And only those who plunge in raging waves,
Can live like kings and not like cowering slaves.

23.नवम्बर 1988 में हम संपर्क में आये और 2 दिसंबर को हम कुछ देर के लिए पहली बार मिले। अगले दिन फिर मिले, अच्छा लगा और रणधीर ने प्रपोज किया। 21/12/88 को कुछ एसा ही महसूस किया था। इन्होने अपनी डायरी में लिखा.....

Something there is about a withheld tear,
Something much important yet unsaid,
Some message undefined and unclear,
Some urgent missive unheeded, unread.

Something there is about a tear unshed,
A vibrant sentiment unexpressed,
Or like a lethal wound which has bled
And filled the ins though outs are neatly dressed.

Or feeling inexpressible by words,
A saber which has not been yet unsheathed;
An acid playing havoc with innards
Like toxic air inhaled and unbreathed.

There is something about an unshed tear,
Which may be full of promise or of fear.

18-12-88

Ah! There is something magical, divine,
In the crystal, first born, star-kissed dew.
The night is done but dawn has not yet dawned.
The day is in but sun has not yet risen.
The leaves are all dew-laden, newly spawned.
The time is like ethereal plantain vision.
Soon the sun will rise and drops of dew,
Will turn into a leafy rivulet.
And this process without much ado.

The surface of the Earth will be wet.
Something there is, I often find in you
The fragile virginity of newborn dew

24 दिसंबर को रणधीर को जयपुर जीजी, फूफाजी से मिलने आना था। पर आये नहीं। 28 दिसंबर को एक कार्ड और पत्र मिला। जम्मू से लौटते समय कार एक्सिडेंट हो गया था, इसलिये नहीं आ पाये थे।

दिसंबर अन्त में हम फिर मिले, तब तक संकोच थोड़ा कम हो गया था, काफी बातें हुई। हमारे मन में शंकाओं, अनिश्चितता, विश्वास का धमासान मचा था। बहुत सारे किन्तु–परन्तुथे। व्यक्ति के पूर्व अनुभव सबसे बड़े बाधक होते हैं।

10–1–89 को एक ही दिन में उन्होने आठ पत्र लिखे, आठों में पत्र सॉनेट के माध्यम से ही लिखे गये थे। उनके विचार भी लय–ताल में आते थे, 14 पंक्तियों के छंद में लिखते चले जाते थे। उनको जोड़ना या बुनना नहीं पड़ता था। और उस दिन शाम को स्वंय ही आ गए, अपना जवाब लेने के लिए।

10-1-89

When you with downcast eyes sit and think
I plead with you to raise your head and see
The truth into the eyes and slowly drink-
The Love's nectar, outpouring from me.

I lift your chin and make you raise your head
And make you see into my loving eyes.
A quickening, quickly, weary Time's tread;
Astirring dead emotions, dormant sighs.

You look at me with fear and confusion,
And ask me why you should and why you must
Believe in faithless world. Your confusion
Is based on jilted faith and cheated trust.

I think, my dearest Sudha that I should
Repeat that love is great and life is good.

10-1-89

I just talked to you on phone
And heard your ringing, singing, lovely voice
And wished to, in your charms, dive and drown,
Because for me, there is no other choice.

The laughter in your voice was loud and clear;
Inflexions of your words were intimate;
I wished that you were near me, my dear,
And see me when I strongly reiterate

That I was lonely, lovely, sorely hampered,
When you were brought to me by happenstance,
When I was, by your bubbling person, conquered-
When due to you, inhibitions stood no chance.

When in a fleeting, blissful single day
You stole me from myself and had your say.

10.1.89

I don't belong to the breed of men who just
Indulge in casual sex for fleeting pleasure.
And I must tell you this. I must, I must.
They cheapen Love and empty love's treasure.

My dearest Sudha, you must understand
That men like me are slow but are forever,
And they are not the least, great and grand.
Nor worldly-wise, nor practical, nor clever

But they are constant in their word and deed
And when they take their mates in their arms,
They satisfy their partners' every need
By giving endless love in lien of charms.

"Viyogi" therefore says, "become my wife".
"And let me, with my love, engulf your life".

10.1.89

Today I am brimming with confusions.
My mind is full of hapless, hopeless dread.
And when I see your psyche's ill illusions,
An undefined fear fills my head.

When you are next to me, to warm my life
I suddenly remember, you are far,
I want a real home, a real wife.
But fear to leave my hearts' door ajar.

You dwell on past rejections more and more,
When I propose to make a Home with you.
I can not fully open hearts' door
For fear of human nature's feckless loo,

Which sears and impairs and encumbers,
The future "Home" on past's glowing embers.

10-1-89

My darling, when I wrote to you to-day
My words outpoured from me in dizzy state
But then I wondered, what I want to say
Will reach you on some future far off date.

This thought was entertained and doubt was hosted.
With every word I wrote, it grew and grew-
My letter was completed, sealed and posted
But I remained unhappy. This I knew.

And in this sorry state of mind, I erred,
In wondering, what to think and what to do?
Because, because of this my need bestirred,
And due to this I rushed and came to you.

With love, I knew, my letter will be read
But it was good to reach you in its stead.

तेरे औने मूजवी घटना वचित्तर होई गयी,
सारी दी सारी नमोशी तित्तर–वित्तर होई गयी।

RIGHT TIME

I agree, road of life is long and rough,
And full of humiliations and travails,
Enough is when enough of it entails,
For us to say enough is now enough.
Is facing hurdles as they come to pass,

And crosses bridges when they come across.

काश ए होऐ जे मेरा भूत–काल नेईं रवै,
भविक्खा उप्पर वर्तमान दा जवाब नेईं रवै,

24- हमारे जीवन के गहरे सागर में एक तूफान आ गया था। ठीक से फैसला लेने की मेरी क्षमता तो गायब हो गई थी।एक वायुसेना अधिकारी जो संकट में आकाश में धीर, गंभीर और त्वरित निर्णयशक्ति (quick decision power) वाला, ईमानदार, वफादार पति, विद्वान, संवेदनशील प्रसिद्ध पुरस्कार प्राप्त कवि था,शायद अच्छा दोस्त हो सके। अकेलेपन और दिमाग में उठते जलजले से छुटकारा पाना चाहती थी। अतः सब भगवान पर छोड़ दिया। इनके शब्दों में.....

"when the bridge will come , we will cross it"

18फरवरी को हमारी शादि हो गयी और मेरिज रजीस्ट्रार ने 18 मार्च89 को मुहर लगा दी। इसने हमारी हर उथपुथल को सामयिक तोर पर शान्त कर दिया। नव जीवन का उदय हुआ।

18 मार्च89 को हमारी शादी हो गयी। रणधीर का 31 मार्च 89 को (VRS) रिटायरमेंट हो गया। हम अजमेर आ गये जहां मै नौकरी कर रही थी। सब ठीक था, पर विचारों के एकान्त में अपनी पूर्व पत्नी पम्मी को याद करते और लिखते थे, मन में कहीं बैचेनी थी।

शादी के बाद लगभग 5–6 महिनों तक लगा मै किसी दूसरे ही संसार में आ गयी हूं। मेरा अतिरिक्त ध्यान रखना मुझे असहज कर रहा था। सबसे पहिले मेरा पूरा check up करवाया।मेराघर तो चिकित्सकों से भरा पड़ा था , सब हंसते थे कि अब पकड़ में आयी है। पूरा overhaulingहो रहा था। रणधीर

, मेरे किसी नाखून में भी दर्द नहीं चाहते थे। पर एक फायदा तो हुआ कि माइग्रेन जैसे दर्द से छुटकारा मिल गया था।

उन दिनों कई बार रात को नींद खुल जाती थी तो देखती ये जागे हुऐ हैं ओर एकटक मुझे देख रहें हैं। पूछती, क्या हुआ है? बोलते, नींद नहीं आ रही है। ये सब मुझे परेशान करता था। जानती थी कि ये मुझे देखते हुए भी मुझे नहीं देख रहें है। किसी ओर को ही देख रहें हैं।

जब भी कोई टेंशन होता या उलझन होती है तो सबसे पहले अपने साथी को बगैर कहे ही मालूम हो जाती है, दोस्ती पक्की हो तो आप यदि हां कि जगह ना कह रहे हो तो दोस्त को मालूम रहता है कि हां ही कह रहे हो, कैसे? शायद ऐसे.... .....

वो मुझें उत्तरवाहिनी कहते थे ..... इतनी असमानताओं के बाद भी हम दोनों का मूल स्वभाव समान था। ईमानदारी, वफा, साफगोई, परिवार के लिए कुछ भी कर गुजरना, ख्याल रखना, सादगी के साथ जीवन जीने की इच्छा। अच्छी चीज के लिए परंपराओं के विरूद्ध कार्य करने में झिझकना नहीं और सकारात्मकता के लिए किसी की परवाह न करना जो समाज में अधिक प्रशंसनीय कार्य नहीं है।

TOGETHER WE CAN REALLY GO TO TOWN

When all adjoining rivulets are flowing
According to the gradient of the plain,
To worth, What is the Utterbehni doing
By flowing north against the common grain?

But if like me it knows where it is going,
There, I will let and leave it on its own,
For as the urban settlements are growing,
I am on my way out of the town.

Perhaps, the Uttarbehni doesn't know

That like it, I am also, all alone,
Against the common grain I also flow
Together we can really go to town.

For I will make a hut upon its shore
And neither will be lonely any more.

हम दोनों के दिल दिमाग में अपने सद्य–दुःखों के जलजले थे, उनसे पार पाने के लिए जीवनधारा को मोड़ना चाह रहे थे पर प्रचंड धारा को मोड़ना इतना आसान नहीं होता है।

SUUDS

Are we ONE my love, if not, then why?
Oh! Why the holding back of total love?
Believe me when I think of this, I cry,
My witnesses are the sky and God above.

Why not complete acceptance, total giving?
Why not loving acceptance of the faults?
Why not the blissful, blessed, lovely LIVING?
Why not the facing of necessary halts?

Why dwell on fantasies and long past hurts?
Why live on falsehoods and false appearance?
My love when True Love Truly Exerts
With giving, patience, fortitude, forbearance

Then only the miracle of love happens
And only then the joy of life sharpens.

शादी के बाद मुझे महसूस हुआ कि इनके घाव अभी हरे हैं। हम में चाहत है, स्वीकार्यता है, अपने घोर अकेलेपन और एक

ईमानदार साथी की इच्छा ने हमें मिलाया है। जरूरत से ज्यादा केयर करने को हम प्यार नहीं कह सकते है। हमारी उपस्थिति/सान्निध्य एक दूसरे के लिए बहुत ही रुचिकर था। एक भावनात्मक लगाव था पर घाव अभी हरा था। मुझे लगा इनके पत्नी–'प्रेम'–पम्मी के बारे में बहुत बातें करनी चाहिए जिससे मन की इच्छा व यादें मन में ही न घुटें, सब बाहर आयें। इस बीच हमने श्री महेश योगी का देहली मेंTrancedental Meditationका 15 दिनों का कोर्स किया था। इसका जिक्र गीता में भी है। मनोवैज्ञानिक सत्य है कि परेशान करनेवाले सभी विचार जब बारबार सतह पर आते हैं तो वे प्रभावहीन होते जाते हैं। जैसा में मानती थी कि हम अपने साथी को कभी भी भूल नहीं सकतें हैं तो उसे भुलाने का सजग प्रयास अर्थहीन है। अगर साथी से सच्चा गंभीर प्यार रहा है तो इस संसार में वही तो ऐसा व्यक्तित्व है जो हमें सच्ची प्रसन्नता देता था। तो उसकी यादों से हमें दुःख क्यों हो? उसकी मधुर यादें तो जीवन का संबल होनी चाहिए। उसे भूलने का प्रयास क्यों? उसे तो हरवक्त हमारे साथ होना चाहिए। हमारे जीवन में होने वाले सभी कार्य कलापों में उसकी याद तो खुश करने वाली होनी चाहिए।

यहां प्रेम का एक पक्ष और है, एक ओर नजरिया भी है। कोई मनुष्य, चीज, वातावरण, दृश्य हमें बहुत अच्छा लगता है उससे बहुत आनंद मिलता है हम उसे पाना चाहते हैं,उसका सान्निध्य पाना चाहते हैं। प्रयत्न करने पर पा भी लेते हैं तो अपार आनंद मिलता है। मेडिटेशन में सफल होने पर भी अपार आनंद की अनुभूति होती है। क्यों? सामान्य अवस्था में हमारे मन में अच्छे–बुरे विचार होते हैं, पर मेडिटेशन के वक्त विचार शान्त होते हैं, मन गौण हो जाता है, ऐसे मे आनंदानुभूति होती है। कोई पति

या पत्नी एक–दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं अर्थात एक–दूसरे से आनंदानुभूति होती है, कारण, खराब विचार अनुपस्थित हो जाते हैं। व्यक्ति का दूसरे में विस्तार का अनुभव ही प्रेम है। पर जब दूसरा अनुपस्थित हो जाये तो फिर पाने की तड़प उठती है। यहीं अगर आलंबन बदल जाये तो पुनः प्रेम स्थापित हो सकता है।

साथी की, जीवन की अच्छी–बुरी यादों, नितांत निजी यादों को व्यक्ति अपने पति या पत्नी से नहीं कहेगा तो किससे कहेगा? अपने पति या पत्नी से अपनी निजी बातों की चर्चा, एक स्वस्थ दापंत्य जीवन का परिचायक है। अगर इसमें जरा भी ईर्ष्या–द्वेष आये तो आपसी संबघों में खतरे की घंटी है। इस सोच की चर्चा और अमल ने हमें और नजदीक ला दिया, हम पति–पत्नी से ज्यादा एकदूसरे के दोस्त बन गए।

TRUE FRIEND

One who from friends in adversity recoils?
The greatest ornament of love impairs
When friends are down and out, in a bind,-
He quickly comes and on their side appears-
And stands up to be counted. All unkind,
Resentful humiliations with them bears.
Without a word of pity uttered, said-
He with his very gift of presence shares
Their grief in mute defiance, of the dead
And hopeless hopes and fearful woes and oars.
That flow like molten lead, through his heart,
A true friend this way plays his humble part.

एक दूसरे के साथ किसी भी अवसर पर कोई भी अच्छी–बुरी याद को, याद करना उस अवसर की मधुरता को बढाता ही है। साथी के, समाज, परिवार के दिए जख्मों को भी हम अनजाने में

सहला लेते थे। परिवार, समाज के दिये जख्म कई रंजिशों को जन्म देते हैं। बातें पुरानी होने पर लगता है हम उन्हे भूल गए हैं पर वैसा ही कुछ देखने–सुनने पर वो फिर याद आ जातीं हैं।

जीवन में में बड़े उतार–चढ़ाव के बाद अक्सर सारा संसार निरर्थक लगता है। जन्म–मरण, सुख–दुःख, अपना–पराया, सब कुछ तथ्यहीन लगता है। यह सब झूठा है, सपना है। यह वैराग्य अल्पकालीन और दीर्घकालीन हो सकता है। अल्पकालीन वैराग्य को अक्सर श्मशान वैराग्य कहतें है।

सपना

हमें स्वंय अपने जीवन से
घृणा नहीं तो स्नेह भी नहीं
मन तो क्या अपने बस में तो
कुछ भी नहीं यह देह भी नहीं
अपना–आप भुला कर बैठे
जग को भी पहचाना नां
कोई ठिकाना, कोई घरौंदा
अपना ना, बेगाना ना
अपनापन अपना कर देखो
अपना क्या–बेगाना क्या
सच्च के खोजू–सच्च मिले तो
सच्च समझ घबराना क्या
मरुस्थल की मृगतृष्णा जैसा
सब–बेगाना अपना है।
दुःख को भूल जाये जो समझे
यह जीवन तो सपना है।

जिंदगी का सफर , है ये कैसा सफर? बड़ा अनोखा है, इसे कोई समझ नहीं सकता है। तो क्यों न हम इस जीवन को जियें? खुशी–खुशी जियें?

आओ जी लै चै

जिंदगी दे पैन्डे न औखे वड़े
जिंदगी दै पैन्डे न औख वड़े

साथ रहते बहुत सारे परिवर्तनों को मै खुशी–खुशी स्वीकार करना सीख रही थी पर इस वातावरण में दबाव भी बढ़ता जा रहा था। दैनिक प्रहार चोट कर रहे थे और इनसे बचाव के लिये जो किया वह और हानिकारक हुआ।

पम्मी ने इनके परिवार को असमय ही सम्हालने में मदद की थी, पूरे तन–मन से सहायता की थी, अभावों को प्रसन्नता से स्वीकार किया था। मकान को घर बनाने में ईंट–चूना, पत्थर और पानी दिया, एक विश्वास का वातावरण दिया, बगैर रंजिशों के स्वस्थ वातावरण दिया। इस सबके लिए अनुपम सहनशक्तिकी जरूरत होती है। उस महिला के लिए मै अन्दर से आदर अनुभव करती हूं । पम्मी से मुझे कभी ईर्ष्या–द्वेष नही हुआ। सिर्फ आदर भाव ही रहा। उनके विवाह की वर्षगांठ एक अगस्त थी।

IN TIME WITH 2 AUG.

I often think and hope in hopeless hope
For some forgotten tunnels to escape,
In darkened corridors of mind, I grope
For, freedom, from the life's perpetual rape.
When, no escape I find from cruel strife
Which so remorseless hammers at my guts,
I come to understand that this is life,
And quietly check my useless ifs and buts.
I make amends for all my gutless days
By firm decision. Hope to end all this
And spend my after – life in peaceful days
Where rule the gentle waves, eternal bliss.
But if have even then no peace of mind
What method of escape then shall I find?

Medal and Recognition

File:Kunwar Viyogi received a Gold Medal.jpg

A multifaceted personality like him made mark in every field he entered. Below is a list of his awards and recognitions.

1. Gold Medal for best fighter controller in 1966
2. SahityaAkademi Award for his long poem Gharin 1980
3. Commendation of Chief of Air Force in 1985
4.SahityaRatan Award by the Nami Dogri Sanstha in 2001

25- मंझली लड़की के विवाह के लिये अखबार में विज्ञापन दिया। एक प्रपोजल था, लड़का नेवी में लेफ्टिनैंट था व पिता हाईकोर्ट के जज थे। एक रविवार को जजसाहब व उनकी पत्नी बगैर सूचना के अजमेर आये , उस रोज मुझे भंयकर माईग्रेन का दर्द था। जैसा मैं हमेशा दर्द को भुलाने के लिये काम में व्यस्त हो जाती थी, उनकी खातिरदारी में लगी रही, खाना बनाया और नार्मल रहने की कोशिश की, पांच–छः घन्टे रहे। रणधीर और उन लोगों ने खूब बातें की, वो लोग आडंबरहीन, शालीन, सज्जन और निरभिमानी लगे। कुछ दिनों के बाद पत्र व्यवहार के बाद लड़का छुट्टियों में आया था और लड़के–लड़की मिलें, तो जम्मू आने को तैयार हो गये। जून 89' में हम दोनों जम्मू गये। लड़का आया, अच्छा था, रणधीर को खूब पसन्द आया। पर वह थोड़े पक्के रंग का था। गोरे डोगरा राजपूतों में पक्के राजस्थानी राजपूत का संबध हो सकता था। पर हमारी शादी और लड़की के विवाह की बात, लड़की को दबाव में डाल सकते थे, जो मैं नहीं चाहती थी।

सन् '90' में हम इन्दौर गये थे। मझली लड़की के लिये जम्मू के ही एक लड़के का रिश्ता आया था, आर्मी में था और महू में कोई कोर्स कर रहा था। वह मिलने इन्दौर आया, खूब हैंडसम था पर उसकी भूरी आंखें डरावनी थी, रणधीर को बहुत अच्छा लगा था। रणधीर जब बात पक्की करने जम्मू गये तो लड़के के माता–पिता से मिले और वहां के वातावरण में थोड़ा असहज हो गये और फिर मेरा अनुभव याद आया। कुल मिलाकर वहां मना कर दिया गया। कुछ सालों बाद जो मालूम हुआ उससे लगा भगवान जो करता है अच्छा ही करता है।

26. रणधीर को जम्मू रहना पड़ा था। मैं रणधीर को सरप्राइज देने के लिये बगैर सूचना के ही जम्मू गई। आरक्षण के कारण देहली में ट्रेन रोक दी गयी थीं और देहली स्टेशन पर शाम तक इतंजार करना पड़ा। ट्रेन में चढ़ते वक्त मेरा पर्स चोरी हो गया, मेरे पास न टिकट था न पैसे थे। कुछ देर पहले ही पर्स से टिकिट निकाल कुली को सीट और बोगी नबंर बतलाया था। कुली भी सकते में था कि पर्स कहां गया? कुली को पैसे नहीं दे पायी, वह भी स्थिति समझ रहा था, मेरे पास कोई रास्ता भी नहीं था। टीटी को सब बतलाया, रिजर्वेशन स्लिप पर मेरा नाम था। जम्मू स्टेशन के बाहर भी उसीने किया। टैक्सी ली, सोचकर कि घर पहुंचकर पैसे दे दूंगी। घर पहुंचकर , घंटी बजाने पर जो आदमी सामने आया वह रणधीर नहीं थे पर वैसे ही दिख रहे थे। जिन्दगी में कभी इतनी हैरान परेशान कभी नहीं हुई। रणधीर को यह क्या हो गया है? अगले ने कुछ पूछा– बोली– रणधीर। तब तक रणधीर बाहर आ गये थे। देखकर जान में जान आयी। थोड़ी देर देखा, पुकारा रणधीर! और रोना आ गया। सरप्राइज देते खुद ही तमाशा बन गयी। बोली टैक्सीवाले को ..... पैसे दो।

27. इन्होने जम्मू में बसने की सोची और वहां जॉब भी मिल गई, मैने भी नौकरी छोड़ने हेतु लिखा पर इजाजत नहीं मिली। हमने सोचा कि ट्रांसफर होने पर भी तो अलग रहना होता है। 1992 के मार्च में रणधीर ने कश्मीर टाइम्स जॉइन किया।

1992 से अंग्रेजी पत्रकारिता, कश्मीर टाइम्स से शुरू की और साथ ही पूरी शक्ति , डोगरी टाइम्स को स्थापित करने मे झोंक दी। प्रारंभ में एक पेज के डोगरी अखबार में जिज्ञासा, सार्थक रुचिकर बनाने के लिये सामग्री का नितांत अभाव था। साहित्य जगत के लोगों से रचनायें बार बार मांगनी पड़ती थी। स्टाफ भी नहीं था। सामग्री एकत्रित करने, सजाने संवारने, छपवाने तक का काम करना होता था। ऐसे में अपनी ही मूल रचनायें कहानी, कविता, सॉनेट्स, ग़ज़ल, गीत आदि को छपने दे देते थे जो आज छापने के लिये अनुपलब्ध है। इस **आपाधापी** में स्वंय की रचनाओं की हानि हुई पर संतोष था कि ये बलिदान डोगरी के लिये ही तो था। तब से ही एक नियमित कॉलम, ''पते दी गल्ल'' लिखते थे। यह रणधीर के जीवन में फिर से परिवर्तन आया था। अनायास आये मौके का रणधीर ने खूब मजा लिया। यही डोगरी की सच्ची सेवा थी।डोगरी संस्था के सचिव बने।

रिटायरमेंट के बाद जम्मू जाना, वहां अखबार से जुड़ना और डोगरी का अखबार चालू करवाना, रोज डोगरी का एक पेज छपना, उसमें मैटर की कमी के कारण स्वंय की रचनायें छापना, कार्टून बनाना, डोगरी को स्थापित करने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी करवाना कुछ लोगों को पसन्द नहीं आया। जम्मू के क्षितिज पर अचानक एक धूमकेतु का उदय हुआ था जिसने डोगरी साहित्य परिवेश में हलचल मचा दी थी। रणधीर के ईमानदार, सशक्त मौलिक डोगरी साहित्य सेवा का, साहित्य की जमी दुकानों को यह बाहरी हस्तक्षेप नागवार गुजरा। खुद को ऊंचा नहीं कर सकते

तो आगन्तुक की टांग खिंचाई में क्या हर्ज है? रणधीर की लाइन छोटी करने के लिए वे लोग ने अपनी लाइन बड़ी नहीं कर पाये तो रणधीर की लाइन को काटने के लिए, एक समूह बना और षडयंत्र रचा जाने लगा। रणधीर को जब इसका आभास हुआ तो उन्हे दुखः हुआ और उनसे स्वतः दूरी बना ली। लगभग दो साल ये जम्मू रहे,मेरा नौकरी छोड़ना नही हुआ तो अपने बहु–प्रतीक्षित घर लौट आये।

''खलील जिवरान
क्हावत ऐ, फरिशते बेज़त होंदे अपने देसा च,
ते तांईऐं दुखी होईऐ मोआ लौकी बरेसा च,
ते ओह्दा पूजा–जोग मकबरा बनेआ बिदेसा च,
ते मीं जकीन ऐ उस जनम लैता मेरे भेसा च।

रणधीर,जीवन में पत्रकार भी बनना चाहते थे और पत्रकार अंग्रेजी के ही नहीं डोगरी के भी प्रथम पत्रकार बन गये। डोगरी पत्रकारिता का आरंभबिन्दु कुंवर वियोगी ही थे। जम्मू प्रभात के पत्र से डोगरी पत्रकारिता को जन्म दिया, उसे सजाया, संवारा, पोषित किया। जम्मू छोड़ने के बाद भी पत्र पर पूरी नजर रही। ''पते दी गल्ल'' नियमित कालम रहा और अन्य सामग्रियों से पूरित करते रहे।

मांडल, भीलवाड़ा से 8KMदूर था, तब भी आना जाना आसान नहीं था। 1992 मेंBSNLफोन भी नहीं थे, मोबाइल का तो नाम ही नहीं था। रणधीर हर शाम फोन का इतंजार करते थे, मुझे तो भीलवाड़ा जाकर फोन करना पड़ता था। हर सोमवार और शनिवार कोSTD से बात करना निश्चित किया था। बूथ पर भीड़ होती थी, प्रायवेसी का सवाल नहीं था। बात भी महज मुश्किल से तीन मिनिट हो पाती थी। वो भी केटी टाइम्स से बात करते थे। सामान्य पूछताछ और एक–दूसरे की आवाज सुनकर संतुष्ट हो जाना होता था। मेरे पास फोन नहीं था तो ये बाद में भी फोन नहीं कर सकते थे। मुझे फोन के तीन मिनिट के लिये बहुत तरद्दुद करना पड़ता था। पर आवाज सुन लगता था, पास

ही हैं। एक बार जम्मू फोन करने के लिए कम से कम 110रू– खर्च होते थे।STDका तीन मिनिट का चार्ज था– 90रू.। आने जाने में खूब टाइम और शक्ति खर्च होती थी, पर लगता था सदुपयोग हुआ है।

Whenever, I, my Love, your presence wish,
My hopes like roaring waves, then increase.
A sense of hopeful hopes does flourish
And blesses me with rare expertise.

A feeling of glowing warmth comes,
To push me on to pinnacles unclimbed,
And what was inaccessible becomes,
Accessible and easy, rightly tuned.

This world sour opinions, wily taunts
Are muffled and by the music in my mind,
And mere thought of you, to me grants,
Harmonious, peaceful moments, sweet and kind.

And if you come in person, in my view.
I wonder what miracles would ensure.

रणधीर अपने शहर, अपने लोगों, अपनी यादों के बीच थे। मेरा अस्तित्व भी यादों में था। जम्मू में जरूर अपने को असहज और यायावर अनुभव करते होगें। पैत्रिक मकान बेच दिया गया था। स्वंय का कोई ठौर नहीं था। स्वंय का ठौर होता तो पम्मी की यादों में भी शायद एक तसल्ली होती। जरूर लुटा–लुटा अनुभव करते होंगे। वो मुझे छोड़कर जाना नहीं चाहते थे ।

1. पम्मी दी त्रीऽ पुन्न–तित्थ–
मन जीने दी कोशश साल भर जरुर करदा ऐ,
अवो हर साल यकम अप्रैल दा खलनायक आई करियै।
मिरे मिथे दे मनसूबे गी चकनाचूर करदा ऐ,

जिदे जीवन दा नखलेस्थान भलयां, भलयां उक्खड़े दा।

2. 'प्रेम' की चौबरसी पर सॉनेट लिखा था कि चार साल होने पर भी तुम्हारे बगैर जीवन का संगीत, जादू, रस सब खो गया है। मृत्यु ने बड़ी नृशंसता से तुम्हे हम से छीन लीया है।

PREM'S CHAUBARSI YAAD

On first of April, Nineteen Eighty Eight
You went away to where the gods reside.
And we have, since then. been disconsolate-
Vaccuumed, empty, hapless, woe-be-tide.

Bereft of you, these nameless, aimless years-
Groping, blundering, always round the bend-
Hoping that our endless anguished tears
Would somehow cease; miseries would end.

But all our clueless mending bears no fruit.
And our all striving seems to be in vain.
Your parting has been such a ruthless brute,-
No blood is left in us for it to drain.

From the day you left us, to this day,
The magic, from our, lives has flown away.

पर साथ ही वर्तमान का ध्यान आता है, सब छोड़कर मेरे साथ अंबारां में बस जायें।

पिछले पंजियें साल्ले गी दूर पिच्छें छोड़ियै
मिरा मन करदा ऐ में अपने माजी बक्खी नस्सी जां
सीमैंटी शहरी जंगला दे सीखचें गी त्राड़ियै
मिरा मन करदा ऐ में अम्बारां जाईऐ बस्सी जां

तलाड़ दी मिट्टी दे ढेरा च घूड़ी दा रला पाईऐ
अपने पैरें कन्नै छड़ियै काह्नी गी प्यारां में
कंधों गी खड़ेरां दुग्गे अपने हत्थें नै लाईए
ते बरगे, थ्मम, बेल–बूटे उक्करियै सुआरां में,

वनाईऐ कुल्ला ए, आखां ''सुधा'' गी तुलसी ला बेह्ड़ै
सुधा गी तुलसी लान्दे दिक्खियै किलकारियां मारां
तुलसी दिक्खियै फी जेल्लै चेतां प्रेमां दा छेड़ै
तां ओह्दी दिलकशी कुल्ले चफेरे त्रौंकियै बारां

फी लेईऐ कुल्ले दी परखना कुल्ले गी आखां
मृतूलूका दी नशवर चीज गी मुड़ियै अमर आखां

रणधीर कहते हैं.....मैने जीवन में कई लड़ाईयां लड़ी है, कुछ हारी भी है, समय के साथ सच–झूठ, हां–ना अपने अर्थ बदलते जाते हैं। वर्तमान को कई पुरानी यादें दूषित करती हैं ओर कुछ भूली यादें उत्साहित भी करती हैं। प्रेम से भरी निगाहें, खुले होठ, स्वाभाविक नारी सुलभ मर्यादित, धुंधले चेहरे का आभास होता है। जिसे किसी समय मै बहुत अच्छी तरह से जानता था पर बहुत दिन हो गए हैं।

IT WAS LONG AGO

A few traces of the past intervene,
And jostle present moments with affection.
A few flashes of a long forgotten scene
Arouse in me a feeling of elation,
A faint impression of a lovely face
With parted lips, sparkle in the eyes,
A presence oozing femininity and grace
A clear glimpse, I tap my puzzled brow.
I knew her once but it was long ago.

तुम मुझसे मत पूछो कि मैने सपने में क्या देखा है? कारण उस सपने की बात बतलाना असंभव नहीं पर कठिन अवश्य है। सपने में देखी बात का नशा बहुत देर तक रहने वाला है पर और स्पष्ट रूप से याद करने कि कोशिश करने के प्रयास में सब रेत के समान खिसक जाता है। पर में उस सपने की ट्रांस में और जीना चाहता हूं। मै उसके खयालों में मस्त रहना चाहता हू।

I dreamt that I was dreaming in my dream
But what was it? I ask you not to ask,
Because to place a finger on its theme,
If not impossible, is still a task.
And though its fragrance in my psyche lingers,
Yet when I try to figure its extent,
It quickly slips like sand through my fingers
Its pleasurable aftermath may flee.
Pray, let it hold me in its' nebulous wonder,
And what was it? Pray, do not ask me.
And if I want to tell it, I can still,
But though I can, I do not think I will.

रणधीर का जम्मू में आवासकाल मानसिक स्तर पर बहुत कठिन था। जम्मू में रहते हुए वियोगी जी को अपने जीवन को देखने–जानने–विश्लेषण करने का अवसर मिला था। पम्मी की मृत्यु के बाद जिस मानसिक अवस्था में जम्मू से गऐ थे उससे अब अधिक स्थिर अवस्था में थे। अब वे अपनी स्थिति का आकलन कर सकते थे। मैने ही उन्हे जाने को कहा था इसलिए मेरे प्रति कोई अपराध भाव नहीं था। पम्मी के साथ जिये पलों को पुनर्जीवित करने पत्नी टॉप और बटोटा गए थे।फिरसे जीने के फैसले पर भी पुनर्विचार का मौका मिला था। नये जीवन के प्रति भी ईमानदारी और संतुष्टि भी आवश्यक थी। इस मानसिक द्वंद्व को सुलझाना जरूरी था। मै हर फैसले में उनके साथ थी। दोस्ती दुनिया की

सबसे बड़ी दौलत होती है। उनका मन शान्त–स्थिर होना जरूरी था।

इसी संदर्भ में कई कविताओं के अंश हैं जो उनके द्वंद्व को बतलाते है।

राहगीर चलते–चलते अचानक ऐसे दोराहे पर आता है कि उसे चुनना है कि वह किस रास्ते जाये। एक रास्ता बहुत चलने वाला है वहीं दूसरा उबड़–खाबड़ और कम उपयोग वाला लगता है, मन तोल रहा है कि वह कौनसा चुने।

1. एह् का रस्ता कीह् चुनया?
में रस्ते पर चला दा हा, दरस्ता आई आ चानक,
आंऊं भलखोई आ जे कोह्कड़े रस्ते गी फगड़ा में?
मिगी जो भाखे हे रस्तें दी चोन करने दे मानकः
इन्दी उब– खड्डुब्बी शकल ते बेरौनकी रौनक;
इेनें गी दिक्खिऐ फ्ही अपने–आपै कन्नें झगड़ा में।

2- PATNI TOP RE-VISITED WITHOUT HER

Tranquil, peaceful, calm, in solitude,
Birch and pine and fur trees stand in truce,
And when some vagrant wisps of wind intrude,
They sway and sigh and whisper. I deduce
Love, when I met you first, the woody lanes
Were the same. These everlasting veterans are
Bedecked with beauty of some fitful peace
And stand in silence bearing aches and pains.
But where are you? Your absence leaves a scar,
What wrinkled, twisted, lifeless woods are these?

3- BATOTE REVISITED

Have you seen Batote on leeward side
Of "Pattni" top so closely which it hugs
My Pammi once did in this place reside,
And end of journey for me it became
And to this dame of hills I always came

To spend a few moments with my future bride.
But to-day when I see this hilly bowl
I find it barren, lifeless, empty, sore.
For people not the places are my goal
And Pammi in this heaven stays no more.

4- DEATH WE DIE

What saddens me and hampers every chance
Of living is, we let our fears prevail;
And the wise injunction – "Death does come but once"
Does go unheeded – bludgeons us. Flail

The waves of sweetest music; granite walls
Of our anxiety roll away unheard
And our existence, akin to rag dolls,
Appearing life – like truly, but absurd

Are these illusions. If we only could
Refuse to die when challenged by each fear
And wallop this anxiety as we should,
Then we could lead a happy life, my dear.

And live like princes, to our loves attend,
To meet our death finally as a friend.

पर साथ ही वर्तमान में भी जी रहे थे। वर्तमान उन्हे बुला रहा था। वे वर्तमान में जीना चाह रहे थे।

5- WHERE IS LOVE?

How smoothly flowing the swan- like beauty sways.
And in its own-self always busy lives.
To loving soul it scarcely attention pays
And inits own self marvels and believes.

If this was not so; how come you, my friend
Forget my presence, legion of my woes?
Now do not tell me that you didn't intend
To tell me that who cares and who knows?
One glance at me you throw and this I grant.
But where is love? The alms- I do not want.

7- THAT NIGHT

That lovely night of love and understanding,
That blessed sacred happy, happy night
Where restless Time appeared to be standing
And everything appeared to be right.
Is still a source of blissful memory?
Though you are inaccessible to me.

9- DEJECTION

I seek and get the things I never seek,
I never get whatever, I have sought.
To look for her, I walk along the creek,
And want her badly, but I find her not.
When day is dreary, endless, overlong,
When evening takes a year to come along.

A WEE BIT MORE

A wee bit of more effort will not make,
A wee bit differences to you. You may find,
Few paces more, tentative when you take,
Your destination. Get your second wind.
By waiting we may have the widest choice,
Of happiness in which we can rejoice.

LOVE ME AS I AM

Love me, if you do, for what I am,
And not for what you want that I should be,
Because the love that limits is a shame,
And love is real when it makes us free.
So let's make a covenant, me and you:
Love me as I am and I will too.

SILENT SUFFERER

The nature of fire and love is the same.
The fire is easily extinguished with water
But tears of lovers can not tame
The fire of love. They make it even brighter.
Yes I shall weep but never ever speak,
And let the tears tumble down my cheek.

JOY

I – happy happy – like a fiddle fit,
Pirouette and to the beat of pleasure hum,
And throw my arms around you to submit,
To hurting hugs. And now that you have come.
No harm to tell of loathsome agonies,
Which tortured and tormented your beloved:
To see the mynas kissing on the trees,
And I so lonesome – unkissed and unloved.

To write the letters filled with ironies,
Of circumstances, tear them up and blink,
The tears away to hide the miseries,
Lest you may not so cowardly me think.
But nestled in your arms, I admit,
I don’t remember pain – not a bit.

अदना तिनका

मैं जिन्दगी की सैलाबी नदी में अदना तिनका था,
न कोई चारा था बचने का ना उम्मीद चारे की।
तुम तो डूब रहे थे जब तुमने मुझको देखा था,
य़कीनन तुम को जुस्तजू थी तिनके के सहारे की
खरै इस्सै करी जानी निं पाये खामियां मेरी
जे आप्पे आए तां मिक्की बी लेई आए कनारे पर
गेआ खतरा टली तां दिक्खियै निश्कामियां मेरी
तुगी मलाल ऐ हून अदना जेह् तिनके दे स्हारे पर
मलाल छोड़ दो तिनके को फैंको फिर बहने लगूंगा में
गिला, शिकवा किये बगैर फिर बहने लगूंगा में
फकीरी के सौदाई जैसे कहते हैं इस दुनियां में
मन्नत मांगकर तेरे लिये जीने लगूंगा में. *KV*

मुनासिब वकत पै चलेंगे हम दौनो,
क्रौचों के दिलमिले–हिलमिले जोड़े की तरह।
छोड़ के शिकवों को, गिलों को पीछे,
चंद अफसोस भरे पछतावे लेकर।
बची–खुची अड़चनों का निवारन करके,
आशा के भड़कते हुए आवे लेकर।
मन पसन्द रास्तों पे जहां हम जा न सके,
खुद ही अपनाई हुई निष्ठा के थकावे लेकर।
चंद दिन और सबर, और सबर, और सबर,
खुद ही मीसूस करेंगे दफर्तन शायद।
यह क्या कम है कि हम जिन्दा हैं,
देर से चाहे हुआ पर मिलना तो हुआ।
अब भी हमारे लिये हमदम जिन्दा हैं,
जो किसमत में लिखा था होना वो हुआ।
अपनी ही मरजी से सफर तै करने के लिये,
वाह्द–अजां अपनी खुशी ही से मरने के लिये।.... कुंवर वियोगी

और

Marriage

In a marriage, man and woman think more,
Of the partnership than they do of themselves.
It is interweaving (sweet की भांती) of interests and
A facing of sacrifice for the sake of both. Feeling
Of security(रक्षा) and contentment(सन्तुष्टि) comes
From mutual(मिल–जुलकर की हुई) effort. In
Marriage, as in dancing, happiness comes not
From skill but from togetherness.
In purely physical love there is emotional
Sincerity which can burn both partners to ashes.
No two human beings can always live
Together in the most intimate relationship
Of marriage without sometimes frustrating
Each other. Understanding is needed because
Where love is blocked it turns to anger and
Hate. The art of love is patience till spring comes..

28- माउंटएवरेस्ट यात्रा कुछ दिनों की कठिन यात्रा होती है पर कई, माउंटएवरेस्ट से ऊँची कठिन यात्राओं पर लगभग 20 वर्षों तक फतह पायी। जीवन में 'प्रेम' ही है जो सब कठिनाइयों को पार करवाता है। न थको , न रुको , लहू–लुहान होने पर भी अकेले चलो–– केवल लक्ष्य पर एकाग्रचित होवो–– एक सच्चे डोगरा सैनिक की तरह।

अगस्त 1994 में रणधीर मांडल आ गये। रणधीर के जीवन में यह बहुत बड़ा परिवर्तन था। अपने पूर्व के जीवन की कटु यादों, रिश्ते, सभी को पीछे छोड़ आये थे। अपने भूतकाल को हम मिटा नहीं सकते हैं, पर सजग चेष्टा से उसे धूमिल किया जा सकता है। इस संसार में हम ही एकदूसरे के लिये थे, और कोई तीसरा भावनात्मक आधार नहीं था। हमने एक दूसरे को नये सिरे से जानना शुरू किया।

नवरात्रि आने वाली थी। हमने प्लान किया कि इस नवरात्र में हम व्रत करेंगें और नौ दिन देवी भागवत का पाठ करेगें। रोज गायत्री मंत्र का भी स्मरण करेगें। दूर के नानाजी दसवें दिन यज्ञ करवायेगें। ये हमारे नये जीवन का शुभारंभ होगा। मन की, घर की सुख–शान्ति के लिये यह एक ईमानदार प्रयास होगा। मै इनकी पीड़ा को कम करना चाह रही थी।

प्रातः गायत्री मंत्र का स्मरण करते(21 माला का पारायण) और दिन को देवी भागवत बारी–बारी सस्वर पढ़ते थे। हमारे घर के सामने एक बहुत ही प्राचीन सुन्दर मन्दिर था, जहां रोज बहुत से श्रृद्धालु आते थे। नवरात्रि समाप्ति पर हवन करवाया और कन्याओं को भोजन करवाया। अच्छा और उत्साहवर्द्धक वातावरण था। लगा, सारी सृष्टि हमारे साथ है। 26 अक्टूबर1994 धनतेरस को हम आन्तरिक प्रेरणा से एक नवजात कन्या से मिले,उससे प्रथम स्पर्श और प्रथम संवाद गोद में ले गायत्रीमंत्र से हुआ। कोर्ट का अवकाश होने से उस दिन कानूनी

कार्यवाही हो न सकी। लौटते में ये अखबार देख रहे थे, मैने पूछा– नाम क्या रखेंगें?
अखबार पर लिखा–''Milee".घर आकर संवाद भी हुआ, मै इस पूर्णकालिक जिम्मेदारी के प्रति भयभीत, आशंकित थी। रणधीर ने आश्वस्त किया सब ठीक होगा।बाद में कोर्ट कार्यवाही के बाद हमारी प्रथम दत्तक पुत्री, ''रौनक'' घर आ गयी। लगा, मां दुर्गा ही अवतरित हुई है। जून 1995 को दूसरी दत्तक पुत्री ''खुशी'' हमारे परिवार में आयी।वह बहुत कमजोर और पीलीया से ग्रस्त थी। उसी दिन मेरा स्थानांतरण बिजौलियां हो गया था। छोटी जगह जाना ठीक नहीं लग रहा था पर भगवान जो करता है अच्छा ही करता है, मैं यहां लंबी छुट्टियां ले सकती थीं और हुआ भी ऐसा ही। मांडल में रहते पृथ्वीराजनगर, जयपुर में एक बड़ा प्लाट खरीदा था।

अगस्त में बारिश हो रही थी। घर में बरामदे के ऊपर एक जंगला था जहां से बारिश नीचे आती थी। रणधीर, रौनक को हाथ मे लिये बारिश का मजा ले रहे थे। रौनक को भी मजा आ रहा था कि एकदम हाथ से छूट गई और बेहोश हो गई। रणधीर उसे लेकर बारिश में ही पैदल ले 1.5 किलोमीटर दूर अस्पताल भागे। थोड़ी बारिश में ही मांडल चौराहे पर घूटनों पानी भर जाता है। मुझसे रहा नहीं गया, खुशी को घर में बंद कर मैं भी पीछे गई। अस्पताल से थोड़े पहिले ही ये आते हुए मिल गये, रौनक ठीक थी।

सितंबर 1995 में हम भीलवाड़ा आ गये। दौनों लड़कियां बहुत बीमार रहती थीं, बार–बार अस्पताल ले जाना पड़ता था। थोड़े–थोड़े दिनों में निमानिया हो जाता था। यहां बच्चों के लिये सहायक मिल जाते थे। रणधीर ने एक security company joinकी थी पर वह ठीक नहीं थी तो थोड़े दिनों बाद छोड़ दी। रणधीर किसी नौकरी के लिये बने नहीं थे और न हमें ओर पैसे की जरूरत थी। अपने संसाधनों में हम संतुष्ट थे। जरूरत थी कि बचपन से सालती पीड़ाओं से उबर जांयें। कुछ

ऐसा करें कि उससे इतनी तृप्ति मिले कि सब दुःख बह जाये।Fulfilment,परिपूर्णता का अनुभव उनके जीवन काturning pointबन जाये।

यह भाव आदमी में मात्र सृजनात्मकता,creativityसे आता है।Level of creativityजितना उच्च स्तर का होगा उतना ही जीवन से संतुष्टि का स्तर होगा। अपने भाई–बहनों को शिक्षा के साथ जीवन योग्य बनाने में इन्हे अपार संतोष मिला था। बचपन से अपूर्ण इच्छा थी अँग्रेजी का प्रोफेसर बनने की। This creativity may be complementary to his desire.

भीलवाड़ा एक व्यापारिक स्थान है जहां महेश्वरी समाज बहुत है। महेश्वरी बच्चे अधिकतर मेहनती, प्रतिभावान और विकासोन्मुख होते हैं। पर अँग्रेजी में कमजोर होने से भीलवाड़ा से बाहर फलने–फूलने के अवसर कम हो जाते हैं। अगर इन्हें थोड़ा सहारा मिल जाये तो अपना कमाल कर सकते हैं। इसobservationपर रणधीर ने अँग्रेजी कीspeaking classesशुरू की। जिन्हे थोड़ा अँग्रेजी लिखना–पढ़ना आता था, **तो बोलना भी वह** आ सकता था। रणधीर तो अँग्रेजी के प्रकांड पंडित थे। और इसतरह रणधीर एक गुमनाम आदमी से अचानक चमकते सितारे बन गये। कभी सूरज भी बादलों से छुप सकता है। अँग्रेजी के प्रकांड जानकार,fluent English speaking, highly knowledgeable, disciplined, polite, Air Force Officerके सामने सब बौने थे।

अखबार में एक विज्ञापन दिया, उत्तर में कुछ जिज्ञासु आये। 1997 में तीन माह के कोर्स की फीस 1500/– थी। यह प्रयोग रणधीर का अपना था पर भीलवाड़ा के लिये नया था। ये सामान्य टयूशन क्लास नहीं थी। अनुशासित गुरू–शिष्य संबंध था। तीन महीनों में उद्देश्य के प्रति पूर्ण समर्पण आवश्यक था। ऐसा न होने पर बाहर। एक घंटे की क्लास के लिये घर पर 2–3 घंटे तैयारी करनी होती थी। अंग्रेजी अखबार का खासकर एडिटोरियल पढ़ना और लिखना। vocabulary के दिये शब्दों को देखना और

पर्यायवाची लिखना। धीरे–धीरे छात्रों में परिवर्तन आता गया। इस परिवर्तन को सबसे पहिले माता–पिता ने देखा और समझा। एक घंटे के एक बैच में 10–12 से ज्यादा स्टूडेंट नहीं होते थे, कारण डिसकशॅन में सबकी भागीदारी हो। फिर तो इतने बच्चे आने लगे कि आठ बैच तक बने। मै तो घबरा गई थी कि ये बहुत मेहनत कर रहें हैं, रणधीर को रोका पर उन्हे तो मजा आ रहा था, तब इतनी ऊर्जा और जूनून था। सुबह हमेशा के अनुसार चार बजे उठकर ''पते दी गल्ल'' लिखते थे। मार्च से अगस्त तक बहुत छात्र आते थे बाद में बैच थोड़े कम होते थे पर कोर्स कर चुके बच्चे आते रहते थे।CDS, MAT,CAT, competitive exams.के लिये आते थे।group discussionकी तैयारी भी करवाते थे। छात्र से एक बार फीस देने के बाद फिर कभी फीस नहीं लेते थे।। निःशुल्क ही सबको सहायता करते थे, जरूरी था वह मन से मेहनत करे। पहले तीन महीनों की फीस इसलिये लेते थे कि– बच्चों की संख्या कम हो और पैसे देने पर छात्र पर अपने आप ही पढ़ने का दबाव रहता है।

डॉक्टर, इंजीनियर, ऑफिसर भी आते थे, रणधीर के सामने वे छात्र हो जाते थे। उनसे कोई फीस नही लेते थे पर शर्त होती कि वो नियमित रहेंगें।

बाद में अँग्रेजी साहित्य के छात्र भी आने लगे, पर उनके साथ दिक्कत थी कि वो परीक्षा के अनुसार पढ़ना चाहते थे, रणधीर ने उनसे कहा अँग्रेजी साहित्य को रसास्वादन करने के अनुसार ही पढ़ना होगा, वे ट्यूशन नहीं करेगें। रणधीर को कई कवियों का पद्य साहित्य कंठस्थ था।

1994 से राजस्थान में गुमनाम जीवन शुरू किया, बचपन से ''अँग्रेजी का प्रोफेसर'' बनने के संजोये सपने को साकार किया। सूरज कभी बादलों में छुप नहीं सकता है।''ग्रुप कैप्टन'' पद से लोगों की जानकारी नहीं होने से छात्र उन्हे ''कर्नल साहब'' कहने लगे और ''कर्नल साहब'' के नाम से प्रसिद्ध, सैकड़ों लड़के लड़कियों को अँग्रेजी बोलना सिखाते –सिखाते कब पथ प्रदर्शक

बन,उन्हे जीवन के इच्छित मुकाम तक पहुंचा देते, मालूम ही नहीं होता था, वे उनके मुरीद बन जाते थे।
रणधीर अपने छात्रों के साथ मित्रवत ही रहते थे, वे कभी भी समस्या समाधान के लिये आ सकते थे। मेरे ख्याल से लड़कियों को सबसे ज्यादा फायदा हुआ, कारण, अँग्रेजी बोलने से अतिरिक्त आत्मविश्वास आता था, गुरू के समक्ष एक नया स्वतंत्र आकाश मिलता था अपनें गुणों को पहचानने का, दुनिया के इस सागर में छलांग लगाने को तैयार होने का। मूलमंत्र था–श्रम, जुनून और PPLR(पीछे–पीछे लगे रहो) । इस तरह अथाह ज्ञान और अनुभवों से अभिभावक ही नहीं, सामान्य जनों के भी सलाहकार बन गये। समाज को वापस कुछ लौटाने का भाव ही शायद इसके पीछे था। बाद के कुछ सालों में बच्चों के माता–पिता भी सलाह लेने आने लगे। अखबार पढ़ने का समय भी नहीं मिलता था।

कर्नल साहब नाम से मशहूर, ग्रुप कैप्टन रणधीर सिंह–कुंवर वियोगी के जीवन का यह दूसरा चरण था। पहिले चरण में ब्रह्मचर्य व गृहस्थाश्रम था। जीवन को जिया और समाज से जो लिया था, इस दूसरे चरण में जीवन में जो पाया उसे दोनों हाथों से लुटाया। जीवन में कुछ करने की तीव्र इच्छा को पूरा किया और देने का सुख क्या होता है, का भरपूर आनंद लिया। ''देने'' में त्याग की भावना नहीं होती है। किसी पर एहसान का भाव नहीं, बस चुपचाप देने में अप्रतिम सुख–शान्ति– आत्मतृप्ति का अनुभव होता है। ये एक स्थायी भाव होता है। देने के भाव के पीछे स्वंय के विस्तार का अनुभव होता है। आध्यात्मिक स्तर पर 'मै' की जगह 'हम' का भाव स्थापित होता है। यही मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य है। आध्यात्मिक स्तर पर जीवन में ऐशो–आराम, luxury, से विरक्ति होने लगी। सादगी, क्षमा, सत्य को जानने का प्रयास, सदाचार को स्वीकार करने से जीवन ओर तृप्त होने लगा। निर्मलता, पवित्रता व्यक्ति को सज्जनता का प्रतीक बनाती है।

29. लड़कियां बड़ी हो रही थीं, और मेरा कभी भी प्रमोशन जिला शिक्षाधिकारी के पद पर हो सकता था, जो मैं नहीं चाहती थी। प्रशासनिक पद पर मैं बच्चों का ध्यान नहीं रख सकती थी। रणधीर तो कब से वीआरएस के लिये कह रहे थे। नौकरी छोड़ने से पहिले मैं मकान बनवाना ज्यादा जरूरी समझती थी। पर रणधीर तैयार नहीं थे। हमारे पास पैसे भी नहीं थे। मैं अपना जीवन किराये के मकान में बिताना नहीं चाहती थी। इस बारे में हमारे बीच कई बार बात हुई पर रणधीर सहमत नहीं हुए। पूर्व की आशा–निराशा, रंजिशें, कटु अनुभव, प्रेम के साथ किये वादे की असफलता सभी इन्हें पीछे खींच रहे थे। मेरे तर्कों का कोई जवाब नहीं था।

मैं जानती थी कि मकान बनाने के लिए इनका बहुत बड़ा मानसिक बैरियर था। अपना जीवन होम करते उससे उड़ती चिंगारियों से हाथ झुलस गऐ थे। इस potential well से निकलने के लिये escape energy बहुत चाहिए थी। जीवन में दो लोगों में हां–ना होता रहता है पर सामयिक ही होता है। यह पहली और **शायद** आखिरी बार था कि मैंने स्टैंड लिया और रणधीर की बात मानने से इनकार कर दिया। हाउसिंगबोर्ड, तीन प्लॉट नीलाम कर रहा था, जो बस्ती में ही थे। कुछ दिन मन खराब रहा पर रणधीर मान ही नहीं रहे थे। ऑक्शन वाले दिन बोर्ड की परीक्षा थी, मैं सेन्टर छोड़ नहीं सकती थी। रणधीर से रिक्वेस्ट की, पर मना कर दिया। स्टाफ के दो लोगों के साथ तीनों प्लॉटस् की लोकेशन देख एक को पसन्द किया, इन्ही लोगों को बोली लगाने भेजा, बोली छोड़ने से पहिले उन्होने पूछा– कीमतHIG के मकानों से भी ज्यादा थी, तीन दिनों में कुछ रकम जमा करनी थी। सारे पैसे जोड़कर एक तिहाई पैसा जमा किया, बाकी पैसा LICसे लिया। मकान का नक्शा दो लोगों से बनवाया पर तीन दिशायें खुली होने पर उसका उपयोग नहीं कर रहे थे। उन्होने छः हजार रूपये लिये पर सब बेकार था। तब मैंने ही ग्राफ पर कितने ही नक्शे बनाये और फाइनल वाले को एक

ओवरसियर को दिया– कहा, इसे बनाकर नगर परिषद से पास करवा दो। और नक्शा पास हो गया।मकान बनवाने में लोन राशि कम पड़ रही थी, रणधीर की पेंशन मिलानी जरूरी थी पर रणधीर ने फिर मना कर दिया। बैंक ऑफ बड़ौदा से बात हो गयी, स्टाफ ने सारा काम कर दिया था, सिर्फ रणधीर के साइन चाहिये थे। हिम्मत कर रणधीर से कहा– मुझे बैंक ले चलो, साइन करने हैं। इसतरह इनके साइन हो गये। ठेकेदार से भी मुझे ही बात करनी पड़ी। मकान शुरू करने से पहिले प्लॉट के पास ही किराये का मकान लिया। मकान बनते–बनते सब सामान्य हो गया। 28जुलाई2000 को मकान का नांगल हुआ और 31 जुलाई 2000 को वीआरएस से रिटायरमेंट हो गया। कुछ महीने तक तो हर महीनें किश्त देते रहें फिर हर महीनें देना परेशान करने लगा। तब सारा लोन एकबार में ही चुका दिया। सारे टेंशन खत्म। नये घर में अधिकतर नई चीजें आयीं। मकान से ये हमारा घर– 'आलना' बन गया। आलना ने सारी रंजिशों–पीड़ाओं को धो दिया। अघ्यनकक्ष व लाइब्रेरी, रणधीर का अपना कक्ष था, जहां पढ़ते–पढ़ाते थे। वहीं लोगों से मिलते थे। पूरा कक्ष उनका था।

30. अजमेर में एक अखबार 'राजस्थान पत्रिका' लेती थी, इनके आने पर 'Times of India' भी आने लगा। पत्रिका की हिन्दी अच्छी है, तो उसे भी पूरा पढ़ते थे। पढ़ने में कठिनाई होती थी पर underline लगाकर पूछते और अपनी हिन्दी सुधारने लगे। बाद में 'गीता'–स्वामी रामसुखदासजी की भी पढ़ना शुरू की, आधी से ज्यादा पढ़ ली थी, उसमें भी कठिन शब्दों को चिह्नित किया गया था और कई जगह अपनी टिप्पणी भी की गई थी। इसपर हमारे बीच चर्चा भी होती थी। पर कुल मिलाकर इनकी हिन्दी अच्छी होने लगी थी। इन्हे अँग्रेजी, उर्दू और डोगरी में महारत, लिखने, पढ़ने और बोलने में सुविधा थी और मुझे न हिन्दी ओर न अँग्रेजी में निपुणता थी, काम चलाऊ आता था। मैं डोगरी सीख नहीं पायी पर ये हिन्दी में बोलने, लिखने–पढ़ने में माहिर हो गए और हम दोनों एक तल पर आ गए जिससे संवाद आसान हो गया।

डोगरी सीखने के लिये पहिले बोलना सीखाना चाहा। ये मुझसे प्रयास से डोगरी बोलते, मैं एक–एक शब्द का अर्थ पूछती थी। मेरा कहना था कि ये अपनी बातें सिलसिलेवार डोगरी में बोलकर बतलायें जिससे हमारी बात का सिलसिला चलता रहे और मुझे भाषा सुनने की आदत भी हो। पर कहने–सुनने में डोगरी एकतरफ हो जाती और हम पुरानी बातों में खो जाते। अधिकतर बातें कविता–''चार कमरे'' के तीसरे कमरे की होती थीं, जहां शेर अपने जख्मों को अकेले ही चाट–चाट कर सहलाता है। अपने अलावा दूसरे का प्रवेश निषिद्ध होता है, मैं इनका विस्तार थी। सामाजिक आवरण ''शादी'' के नीचे दोस्त से भी ज्यादा हम निकट अनाम संबंधी थे।

मैं इनकी रचनाओं का हिंदी में अर्थ बतलाने को कहती, उस रचना का अर्थ व सार बतलाते हम उनके मूल स्रोत तक पहुंच जाते और उस वातावरण, स्थितियों व कारणों का विश्लेषण करते, वैसे ही भावनाओं के सागर में डूब जाते जैसा अक्सर हम सपने में देखकर भावनात्मक रूपसे अभीभूत हो जाते हैं। अपने सबसे

प्रिय व्यक्ति को उन विषम स्थितियों में जानकर वर्तमान में भी उसके साथ खड़े हो जाते हैं। उसे अपने आँचल में छुपाकर भावनात्मक स्तर पर सान्त्वना देने का प्रयास करते हैं। ऐसे में भाषा सीखने की बात गौण हो जाती।

बचपन से ही देखी–सुनी और भोगी खुशियां, यंत्रणायें, अभाव, आशा–निराशायें, अकेलापन और फिर 1986 से पम्मी के कैंसर से झेली घोर मानसिक यंत्रणायें, कुछ न कर पाने की अवशता से उपजा नपुसंक क्रोध, पम्मी के जाने के बाद जोधपुर में घोर अकेलापन, अर्थहीन जीवन सभी आँखें और वाणी से अविरल बहते थे। मैं मात्र श्रोता होती थी पर अन्दर ही अन्दर सब मथता जाता था, जिनसे ये दुःख मिले अगर सामने होते तो मेरी प्रतिक्रिया कठोर ही होती। ऐसे में डोगरी सीखना गौण हो जाता था। भीलवाड़ा आने पर Times of India & Indian Express, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर अखबार आते थे। सर्वोत्तम की जगहReader'S digest,TIME, Indian American Science, India Today डाक से आने लगे।

रणधीर को कभी भी मैने खाली बैठे नहीं देखा। कुछ न कुछ करते ही रहते थे। अखबार, मैगजीन, पुस्तकें पढ़ते ही देखा, या शाम को टीवी देखते थे हम दोनों अधिकतर समाचार देखते थे और उसपर बहस भी होती थी। इन्हे पिक्चर देखने का शौक भी था। इनके पास बहुत सारी किताबें थीं और मेरे पास भी किताबें थीं। जब मकान बनवाया तब अलग से लाईब्रेरी कम स्टडी 17X14 की बनवायी जिसमें 10x4 की आठ अलमारियां बनवायी जो लाइब्रेरी का काम करतीं थीं। वहीं ये क्लास भी लेते थे। अधिकतर हम खरीदकर पढ़ते थे। रणधीर की सॉनेटस् में कई ऐसे शब्द मिलेगें जो Reader's Digest Dictionaryमें ही मिलेगें। अँग्रेजी, डोगरी व हिन्दी की लगभग 25 डिक्शनरियां हैं।

अँग्रेजी, डोगरी में साहित्य के साथ इतिहास की पुस्तकें हैं। हिन्दी मेंचन्द्रकान्ता संतति, टैगौर, शरत्चन्द्र, बंकिमचन्द्र, ताराचन्द्र वन्दोपाध्याय, विमल मित्र,

आशापूर्णादेवी,जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, निराला, प्रेमचन्द, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मालती जोशी, हिमांशु जोशी, कन्हैयालाल मुंशी,यशपाल, नरेन्द्र कोहली, गुणाकर मुले, श्री मोतीलाल शास्त्री, राजपाल की हर महीने आने वाली किताबें जासूसी किताबें, पूरा वैदिक साहित्य, गीताप्रेस के लगभग सारे ग्रन्थ, श्रीराम शर्मा की पुस्तकें , श्री अरविंद, रशियन साहित्य, Physicsकी किताबें, सिलाई–बुनाई , चित्रकला की पुस्तकें..... । भीलवाड़ा से जयपुर आते समय रणधीर ने ढेरों किताबें अपने छात्रों को बांट दी कारण, वहां तो बड़ा घर था और यहां तो फ्लैट है। लगभग 15 सालों के 'टाईम' मैगजीन की जिल्द बनवायी गई थी, वह ओटीएस में दे दी। कुछ स्कूलों में दे दी गई।

31. इतने सालों में रणधीर को जितना जाना था, सोचती थी कि एक किताब"SKY SCRAPER"लिखूं। कम्प्यूटर खरीदा, मूवी कैमरा लिया। पहिले अंग्रेजी टाइपिंग सीखी। और सॉनेट टाइप करना शुरू किया। बहुत गलतियां होती थीं, पर फिर गलतियां कम होने लगी। सॉनेट चैक भी करते पर चैक करने में इन्हे आलस आता था। कहते, मन नहीं है। पर काफी चैक हो गयीं। फिर हिन्दी टाइपिंग सीखना शुरू किया। इस बीच गार्डन बनाने का भूत सवार हुआ। मकान के पीछे हाईटेंशन लाइन थी इस कारण वह खुला मैदान था, कालबेलिये अपनी झोपड़ी बनाकर रहते थे, जो असुरक्षित भी था। हाउसिंग बोर्ड से मौखिक परमिशन से लगभग 250x150 फीट जमीन पर तार खिंचवाकर बगाचे का काम शुरू किया। मजदूरों के साथ आकार लेते बगीचे को देख मजा आ रहा था। शाम को रणधीर से निरीक्षण करवाया जाता था। पहली बार दो छोटे–छोटे खेतों में भुट्टे लगाये, पहली

बार चार भुट्टे तोड़े। दूसरे दिन खिड़की से देखा, जिस खेत में भुट्टे लग गये थे वहां सैकड़ों तोते बैठे थे। देखने मे मजा आ रहा था। रणधीर ने फरमान जारी किया– अब कोई भी भुट्टे नहीं तोड़ेगा। पहिले एक खेत, फिर दूसरा खेत तैयार होने पर उसे भी तोतों ने चट कर दिया। तोते भुट्टे के कोमल मीठे तने को भी खा जाते थे। छोटी लड़की खेत के बीच कपड़ा ओढ़कर बैठ जाती थी और अपने छोटे कैमरे से फोटो लेती थी। बाद में नगरपरिषद नें गार्डन की बाउंडरी वाल बना दी थी। तीन कुत्ते रखे गये। दीवाल के सहारे करीब 65 अलग रंगों की बोगन बेलिया, 80 बडिंग वाले गुलाब, 20 बेलिया मोगरे, कचनार, चमेली, कुंद, आंवला और ढेर सारे मौसमी फूल और बॉटनेटिकल गार्डन तैयार किया। इतने बड़े गार्डन को बनाने में मेहनत के साथ पैसा भी बहुत लगा। एक बार मैंने रणधीर से पूछा– तुम पैसे के लिये कभी कुछ कहते नहीं हो? बोले–मुझे मालूम है तुम पैसे बर्बाद नहीं करोगी। रणधीर ने कभी मुझे पैसे के लिये टोका नहीं। हम दोनों, दोनों के एकांउॅट से पैसे निकाल सकते थे। वैसे सारा हिंसाब और बैंक का काम वे ही करते थे, मैं साथ जरूर होती थी पर यह जिम्मेदारी उनकी थी।

32. 1996 में जब भीलवाड़ा ट्रांस्फर हुआ तो मैंने स्कूटर की जगह लूना ली थी, कारण, हल्की और नीचे पांव टिक जाते थे। लोगों ने कहा यह आपके लायक नहीं है। जो मेरे लिये आरामदायक और सरल है वही मेरे लायक है। रणधीर मुझे हर जगह लेजा सकते थे पर मैं स्वतंत्र रहना पसन्द करती थी। मेरे काम के लिये रणधीर का समय क्यों खराब हो? ये गाड़ी में बैठ पढ़ते, इन्तजार करते रहते थे। इन्हे खराब नहीं लगता था। पर ये मुझे मंजूर नही था। 2011 में रणधीर ने लूना बेच दी। हर जगह वे ही ले जाते थे। रणधीर गाड़ी धीरे चलाते थे, उन्हे कोई

जल्दी नहीं होती थी पर दुनिया तो ताबड़–तोड़ दौड़ रही है, कई बार कमेंट होते– क्या बैलगाड़ी चला रहे हो? रणधीर फोन पर बात करते थे पर चिट्ठी लिखना पसन्द करते थे। 'पते दी गल्ल' लिखकर पोस्ट करने लगभग रोज जीपीओ तक जाना पड़ता था। अपने करीबियों को चिट्ठियां भी लिखते थे। सबकी खोजखबर रखते थे। परिवार में कौन क्या कर रहा है, कैसा है, सब का ध्यान रखते थे। दो भाइयों ने वीआरएस एप्लीकेशन का ड्राफ्ट भी रणधीर से बनवाया था। 2008 में रणधीर जम्मू जाकर रहना चाहते थे, भाई को मकान देखने को बोला पर बात आयी–गई हो गयी। भाई ने रणधीर से एफिडेविट बनवाया जिससे इनके एवज में वहां अपने बच्चों के लिये जमीन खरीद सकें। रणधीर को अच्छा नहीं लगा था पर एफिडेविट बनवाकर भिजवाया।

33.पुस्तकें छपवाने हेतू रणधीर ने कभी सोचा नहीं था। कारण, 1989 तक आर्थिक स्थिति इसकी इजाजत नहीं देती थी। बाद में जीवन व्यवस्थित होने में समय लगा। लिखे हुए की एडिटिंग शुरू की, पर अपना लिखा ही मानसिक अवरोध बन गया। बाद में श्री यशपाल शर्मा भी अनजाने में कारण बन गए। यश जी रणधीर के दोस्त थे और फोन पर बात होती थी। पर बाद के सालों में वे अस्वस्थ हो गये थे। उनकी एक पुस्तक छपी थी, उसके बाद से वे कहने लगे थे अब मैं मर जाऊंगा। जब शायद तबीयत खराब हुई होगी तो बतलाते थे आज रात मैं मर जाऊंगा। इस तरह इस डर का बार–बार स्मरण करना और अपने मित्र से कहना बड़ा डिस्टर्बिंग था। इस बात ने असर किया कि रणधीर भी कहते ... ''मैं किताबें नहीं छपवाऊंगा।''
कुछ समय बाद यह बात भूल गए।

रणधीर हमेशा अपने रिश्तों के प्रति ईमानदार रहे, पूरी तरह समर्पित। अपने दोस्तों के प्रति भी गंभीर थे। श्री रामनाथ शास्त्री रणधीर के गुरू थे। वियोगी जी के निश्चल मन में किसी के भी प्रति ईर्ष्या–द्वेष, होड़ की जगह नहीं थी। किसी के भी प्रति स्नेह, आदर या प्रशंसा का भाव आता था तो तुरंत शब्द–धारा बह जाती थी। पर आज के कुछ साहित्यकार इसे बेवकूफी समझते हैं, शायद मन में बैठे कोई भय, ईर्ष्या–द्वेष, कुंठायें उन्हे ऐसा सोचने की अनुमति नहीं देती है। यह कैसा हो सकता है? का भाव ही रह जाता है।

श्री रामनाथ शास्त्री, वेद राही, केहर सिंह, **नरसिह देव** जामवाल, 'दीप', पदमा सचदेव, चरण सिंह, ओम गोस्वामी, जनरल गोविंद सिंह, जाफर सिंह, करण सिंह आदि के लिये दिल खोलकर लिखा है। इन लोगों की श्रेष्ठता, रचना कौशल से नहीं वरन् उनके प्रति सद्भाव, स्नेह से प्रेरित हो लिखा है। अवचेतन में उनके प्रति श्रद्धा–आदर भाव ही रचनाओं में उतर आता है। पर लोग इनका प्रेम भाव समझ नहीं पाये, इसे बेवकूफी ही समझा। माता–पिता और प्रथम संतान के प्रति कई रचनायें हैं, वहीं बाल मित्र चरण सिंह की अकाल मृत्यु ने इन्हे अन्दर तक झकझोर दिया था।कभी भूल नहीं पाये, बार– बार पीड़ा, शब्द–धारा में बही है। सॉनेट व कवितायें लिखीं हैं।

34. संकल्प ...का अर्थ है, कोई कार्य करने के लिए लिया गया दृढ़ निर्णय या निश्चय, कोई कार्य करने की इच्छा जो मन में उत्पन्न हो, विचार, इरादा, कोई कार्य करने का मन में होनेवाला दृढ़ निश्चय।

रणधीर ने अपने जीवन में चार महत्वपूर्ण संकल्प लिये थे और शत–प्रतिशत पूरे भी किये। प्रथम था– किशोरावस्था में मां को आराम व सम्पन्न स्थिति में रखना। दूसरा–अपने काम को सौ प्रतिशत पूरा करना, जो सफलता से किया। तीसरा– प्रेम को देखते ही निश्चय करना कि इसी लड़की

से शादी करूंगा। एक ही समाज के होते हुए भी परिवारों में बहुत अंतर था। साम–दाम–दण्ड–भेद नीति से सगाई हुई और लंबे समय के बाद शादी हुई। शादी बहुत अच्छी भी रही। चौथा–संकल्प था– अपने सात भाई–बहनों को सम्मानित स्थिति में जीवन में प्रतिष्ठित करना, वह भी शत–प्रतिशत आनंद से किया।

चौथा संकल्प देखने में उतना कठिन नहीं लगता जितना दुरूह वह था। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व आर्थिक स्तर पर 1965 से लगभग 1979 तक कठिनाइयों के माउंटएवरेस्ट कितनी ही बार फतह करने पड़े। यहां उनकी दृढ़ संकल्पशक्ति या विलपॉवर की दाद देने का मन करता है। एक बार भी अपने कर्तव्यों के प्रति असंतोष मन में नहीं आया। भाई–बहनों को 'नवजात' पिता नें अपने अंतरतम से स्वीकार किया। ऐसा कैसे कर पाये? इसको फलीभूत करने के लिये माता–पुत्र का वह 'बॉण्डेज' था जिसने कभी भी किन्तु–परन्तु को बाधा नहीं बनने दिया। यह भाव जीवन पर्यन्त रहा।

मन में इच्छा होती है और बुद्धि उसे नियंत्रित कर (याने कौनसी इच्छा ठीक है, कौनसी नहीं) गति देती है। अच्छे–बुरे अनुभव धीरे–धीरे दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। यहां से ही व्यक्तित्व का निर्माण शुरू होता है। भाव हमारे अनुभव और दृष्टिकोण का मिश्रण है। इच्छा का स्वरूप स्वतंत्र होता है, वहीं भावना, व्यक्तित्व के अनुसार होती है। मन से जुड़ाव का अर्थ है– भावनाओं से जुड़ाव। भावों को तीन धरातल पर देखा जा सकता है– सकारात्मक, नकारात्मक व तटस्थ।

सकारात्मक भाव सदा कार्य के गुणों पर आधारित होते हैं। आशावादी होते हैं, लोक कल्याण को प्रेरित करते हैं। प्रोत्साहन का मार्ग तय करते हैं, प्रसन्नता देते हैं। सकारात्मकभाव से सबके लिये मन में आदर भाव आता है। स्वंय कितने ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, सकारात्मक भाव के स्थायी होने पर अपना स्वयं का महत्व कम होता जाता है। व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर होते जाते हैं। इससे यश व विनय में वृद्धि होती है, कर्म की भूमिका

बदलती है। कार्य व चर्चा वही रहते हैं केवल भाव बदलते हैं उससे कार्य के परिणाम बदलते हैं। भौतिकवाद में शरीर केन्द्र में, सकारात्मकभाव में मन की मुख्यता रहती है। मां जब अपने बच्चे को सम्हालती है तब पवित्रता व सकारात्मक भाव से वह अपने शरीर को भूल जाती है।

अहं ब्रहस्मामि, मै आजाद हूं, मैं ही शिव हूं, मैं मां हूं, मै अच्छा दोस्त हूं, मै अच्छा पिता हूं..... इस तरह व्यक्ति जब अपने हीरो के समान नहीं वरन् वही बनना चाहता है वैसे ही कार्य, अनुभूति व आचरण करता है तब अपने इच्छित उद्देश्य के प्रति प्रेरित हो शनैः शनैः वैसा ही बनता जाता है। दृढ़ विलपॉवर या संकल्पशक्ति से वैसा ही बन जाता है। रणधीर एक बहुप्रतिभाशाली व्यक्तित्व हैं। अंतर्मुखी तो कभी भी नहीं कह सकते हैं। परन्तु प्रथम सन्तान होने से मां–बेटे में आत्मिक संबध ज्यादा था। बचपन से ही मां को हरवक्त घर का काम करते या बच्चों को सम्हालते ही देखा, उनका सरदर्द करता तो माथे पर कपड़ा बांधकर काम करती रहती थीं। मां के आसपास रहने के कारण उनके छोटे–छोटे काम करवा देते थे। अधिकतर घरों में मां बच्चों की थोड़ी मदद ले लिया करती है और बच्चे भी खुशी–खशी करते थे। यह परिवार का स्नेह बंधन का आधार भी होता है। बड़े होते रणधीर को अपनी मां की परेशानियें, चिंताओं से परिचय होता गया। अपने पति की बीमारी, दिक्कतें, आर्थिक स्थिति से चिंतित मां, अनजाने ही ज्येष्ठ पुत्र को साक्षी बना देती थी। बाल मन पर ये बातें चित्रित हो जाती थीं। खाने मे, बच्चों को सम्हालने, उनके पोतड़े धोने, बहलाने, बातें करने, उन्हें खेल में व्यस्त रखने के साथ मां का साथ रहता था। मां भी अपने मन की बात किशोर रणधीर से करने लगी थी। रणधीर हमेशा रूप के दीवाने रहे पर मां के मुंह के चेचक के दाग कभी दाग नहीं लगे। मेरी मां सबसे सुन्दर, सबसे अच्छी का भाव ही रहा। सकारात्मक भाव रणधीर को व्यष्टि से समष्टि की ओर लेजा रहे थे। बच्चों को मां बनकर ही सम्हालते थे। अपने छोटे भाई–बहनों के लिए बहुप्रचलित भाव,

sibling jealousy का कोई स्थान नहीं था। बचपन से ही छोटों के प्रति वात्सल्य भाव ही रहा।

35–40 की मां अपने बीमार पति के प्रति बहुत चिंतित रहतीं 6–8 बच्चों के भविष्य के लिये दिनरात घुलती रहती। मां के ये विचार, मानसिक उद्वेग अनकहे ही ज्येष्ठ पुत्र तक पहुंच जाते थे। बच्चों को सम्हालते कब उसमें मातृत्व भाव स्थायी होने लगा, मालूम ही नहीं हुआ। सकारात्मकता और संवेदनशीलता ने जीवन के उद्देश्य को मूर्तरूप देना शुरू कर दिया। अवचेतन में यह संकल्परूप ले चुका था। अचानक माता की मृत्यु ने जीवन का आधार ही खिसका दिया। पिता की मृत्यु होने पर सारी जिम्मेदारी लेने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं हुई। माता से किये वादे को कभी second thought नहीं दिया। सब भाई–बहनों के पेरेंट स्वरूप ही आचरण किया, दुनिया की हर आंधीयों के लिये ढ़ाल बने रहे, यह सब उन्हे शान्ति और आत्मिक आनंद, संतोष देता था। यह आचरण कुछ दिनों का नहीं वरन 1965 से लगभग 1980 तक रहा। बच्चों के रुग्ण होने पर स्नेह–प्रेम से और क्रन्दन करने पर सच्चा पुरूष बनने को तैयार होना सिखाया। अपने पावों पर खड़े होने तक हरएक को अपने डैनों की छत्रछाया में सुरक्षित रखा, काबिल होने पर ऊँची उड़ानों के लिये स्वतंत्र कर दिया। दिन–दिन नहीं, रात–रात नहीं थी, चौबीस घंटे अपने तप में लगे रहे। सुखद परिणाम से अपने उद्देश्य की पूर्ति होने पर अपने माता–पिता से संतोष का आर्शीवाद चाहते थे।.....

जैसा दुनिया में चलन है, चूजे बड़े होकर अपने बड़ो को अपने से निम्नतर मानते हैं। बच्चों ने भी बड़े होकर उनके किन्ही हित की पूर्ति न होने पर कहा––– आप में दुनियादारी नहीं है।

35. व्यष्टि से समष्टि की ओर.....

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपनों के बीच ही रहता है। जन्म के बाद मां तक बालक का दायरा रहता है। पर धीरे–धीरे दायरा विस्तार लेता है और बालक परिवार से समाज तक पहुंचता है। ''मैं'' मुखर रहता है पर समाज में रहते इस 'मैं' पर अंकुश लगता जाता है। अच्छे–बुरे अनुभव समय के साथ पसन्द–नापसन्द, स्वीकार्य–अस्वीकार्य में भेद समझते जाते हैं । व्यक्ति के दृष्टिकोण, रुचियों, उद्देश्यों का बनना शुरू होता है। स्वयम् के हितों, स्वार्थों, आरामदायक स्थितियों को पहचानना और उपयोग करना सीखता जाता है। अच्छा... बहुत अच्छा... अतिअच्छा... परमरुप से अच्छा लगना और अंततः उसी में आत्मलीन होने पर दृढ़कामना या दृढ़विश्वास या संकल्परुप में व्यक्तित्व विकसित होता है। यही स्वयं के अहं का विस्तार है। जब यह विस्तार 'मैं' से दूसरे पर आरोपित होता है, व्यक्ति अपनी व्यष्टि से दूर 'अन्य' में पहुंचता है। यदि यह सकारात्मक भाव हैं तो व्यक्ति, व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर हो रहा प्रतीत होता है। सकारात्मकभाव से किसी एक भी संकल्प की पूर्ति व्यक्ति के जीवन को परमआनंद से पूरित करती है। सब अपना लगता है जैसे सावन के अंधे को हर जगह हरा ही हरा दिखता है। व्यक्ति ''मैं'' से उठकर ''हम/ हमारा'' की सोच में आ जाता है। यह प्रक्रिया एक तप है जो समय साध्य होता है, शनैः शनैः परिवर्तन होता है। इस सकारात्मकभाव को स्थायी होने से मुक्ति के द्वार खुल जाते हैं। रणधीर में भी एसे परिवर्तन आये जो दृढ़ होते गये। यह प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती रही।(see Monolouge vol.3,31)

1. रणधीर को अपनी माता का साथ अच्छा लगता था , मां की सहायता करना भी अच्छा लगता था, किशोरावस्था आने तक रणधीर मां, घर की हालत से परिचित होते जा रहे थे। मां के प्रति श्रद्धा व छोटों के लिये वात्सल्य भाव में उनके व्यक्तित्व का

विस्तार हो रहा था। यहीं व्यष्टिभाव से समष्टिभाव में प्रवेश कर रहे थे। स्वयं के इस विस्तार से ही दुख, अभाव, कष्ट, रोग में भी खुश, संतुष्ट रहे। घर के मुखिया के प्रसन्नचित्त रहने से पूरा परिवार प्रसन्नचित्त रहा। इस उत्पादक वातावरण में बच्चों का श्रेष्ठ उजागर करने में सफल रहे। ये व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रवाह था।

2. ''घर'' बनाने की तीव्र इच्छा में परिस्थितियों से व्यवधान होने से व भविष्य में इच्छापूर्ति न होने की संभावना ने आघात दिया था। पर सकारात्मकभावी होने से उस स्थिति में ही संतुष्ट रहने का प्रयास किया। रणधीर व्यष्टिभाव से उबर कर समष्टिभाव में प्रवेश कर गये और एक अदभुत विचारों की श्रृंखला अभिव्यक्त हुई, पुस्तक ''घर'' से।

3. 1980 के इस परिवर्तन ने रणधीर की सारी सोच ही बदल दी थी। उसके बाद के सारे काव्य और गद्य में यह देखा जा सकता है। एक विचार से शुरू रचना समष्टि स्तर पर पहुंच जाती है। इसतरह स्वगत आनंद से विश्वआनंद और विश्वआनंद से स्वगतआनंद व विश्वशोक से स्वयं का शोक तक यात्रा जारी रहती है। अनुभूति की सूक्ष्मता, गंभीर चिंतन, करुणा, प्रेम, कर्तव्य, रहस्य, चेतना मे भी रणधीर आत्म चेतना से विश्वचेतना, देश–काल के परे आत्मचेतना से ब्रह्मचेतना तक सरलता से पहुंच जाते हैं। संवेदनशील रणधीर को बाह्यदुःख संसार के बंधन में बांधते हैं, वहीं देश–काल की सीमा में बंधी असीम चेतना का क्रदंन भी है। बाह्य व आंतरिक दुखों की अभिव्यक्ति गद्य में आसान होती है पर भाषा पर पकड़ के कारण रणधीर ने पद्य में भी उतनी ही सरल. सहज अभिव्यक्तिकी है। विलक्षण स्मृति से ठेठ–लोक से आधुनिकता, आधुनिकतावादी से परपंरावादी में तुरंत shift- on/off हो जाते हैं। इसतरह समष्टि के कई सोपान चढ़ते गये।

36. अ. लॉटरी का टिकट....रणधीर हर महीने लॉटरी का टिकट खरीदते थे। पूछने पर बतलाया कि शायद कभी खुल ही जाये? यह आदत में आ गया था। जैसे कुछ करने की आदत हो जाना। रणधीर का कोई अतिरिक्त आय का साधन नहीं था। आर्थिक तंगी हमेशा रहती थी। इसलिये शायद लॉटरी का टिकट खरीदने की आदत हो गयी होगी।

मनुष्य की कई आवश्यकतायें होती हैं जिन्हे पूरा नहीं कर पाता है ऐसे में अनजाने ही कोई रास्ता खोजने लगता है। एक सबसे आसान पर खतरनाक रास्ता है उधार मांगना। रणधीर ने परिस्थितियों के दबाव में एक बार उधार लिया था जिसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी।

दूसरा रास्ता है...जुआ खेलना। जुए की आदत में कितने ही परिवार बर्बाद हो गये। रणधीर यह बर्बादी का रास्ता नहीं चुन सकते थे। सन् 2000 तक बाजार में लॉटरी टिकट खूब बिकते थे। कभी कुछ आ ही जाये की अपेक्षा में थोड़ा–थोड़ा गंवाना ज्यादा नुकसान दायक नहीं होता है।

मेरे पूछने पर कि – ''आपको पैसे की क्या जरूरत है?'' लॉटरियों की जानकारी रखना, टिकट खरीदने जाना (मांडल से भीलवाड़ा जाना), याद रखना फिर नंबर देखना, कितना समय और ऊर्जा बर्बाद करना है। 1995 से यह शगल छोड़ दिया था।

ब. इसी तरह राशिफल देखना भी एक आदत बन गयी थी। रणधीर को इन राशिफलों में विश्वास नही था। पर घोर कठिनाइयों के दिनों में कुछ भी अपने पक्ष में लिखा देखकर अतिरिक्त ऊर्जा या आशा का संचार होता था। डूबते को तिनके का सहारा होता था। पर 1995 से यह आदत देखने में नही आयी। जगह–जगह राशिफल की कटिंग देखी जा सकती है।

स. कोई विचार शुभ है या नहीं, काम ठीक है या नहीं या पूरा होगा या नहीं, जानने के लिये रणधीर एक गोला बनाते थे उसकी परिधी पर खूब सारे बिंदू लगाते थे फिर एक–एक बिंदू छोड़ गिनते जाते थे अन्त में एक बचता है या नहीं देखते थे। यदि एक बचता है तो अशुभ है।

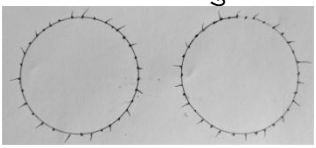

द. लोगों में सेना के प्रति कितना विश्वास और सहारा होता है यह एक वाकये से मालूम होगा। भीलवाड़ा में 1999 की बात है, हमारा मकान बन रहा था और हम पास के ही घर में किराये पर रहते थे। पड़ौस में एक युवा व्यापारी जोड़ा रहता था। हमारी उनसे कोई दोस्ती नहीं थी। एक बार आधी रात को जोर–जोर से घंटी बजी, देखा तो वह जोड़ा थरथर कांपता खड़ा था। बतलाया उनके यहां कोई धुस आया है, उनको बचाओ। रणधीर गये और सारा घर देखा कहीं कोई नहीं था या भाग गया होगा और सामान भी चोरी नहीं हुआ था। बाद में हम हंस रहे थे कि इस कपल के कई दोस्त सामने ही रहतें हैं पर ये लोग उनके पास न जाकर इनके पास सुरक्षा के लिये आये।

य. एक शाम को एक घबराई लड़की सीधे हमारे घर में धुस आयी। कुछ पूछते उसके पहले ही बाहर से खूब शोर आया, लड़की बोली लोग उसके पीछे पड़े हैं। करीब सौ–डेढ़ सौ की भीड़ हमारे गेट पर आ गई। घंटी बजी। पूछने पर भीड़ ने पूछा क्या लड़की अन्दर आयी है? गेट खोले बगैर ही पुछा–क्यों?

भीड़ में से आदमी बोले –यह लड़की दूर नाले के पास लड़के से मिलती है, आज पकड़ मे आयी है। भीड़ बहुत चिल्ला रही थी।

लड़की को निकालो, बाहर निकालो। ये बोले कि हमारे घर में कौन आता है इससे किसी को कोई मतलब नहीं है। हमारे घर के सामने इसतरह शोर मचाना ठीक नहीं है। वो पुलिस को बुला रहें हैं और वे सब लोग यदि इस घटना के लिये गवाही देना नहीं चाहते हैं तो तुरंत यहां से जायें। जब भीड़ को मालूम हुआ कि ये कर्नल साहब हैं तो भीड़ शान्त हो गई और पुलिस के नाम से इधर–उधर हो गये। हमें अपनी लड़कियों के लिये भी ख्याल आया था। फिर लड़की ने बड़ी मुश्किल से अपना नाम पता बतलाया। वह जाना चाहती थी पर हमने रोका कि शायद वे लोग बाहर दूर खड़े इंतजार कर रहें हो। लड़की ने सब बतलाया, हमने उसे थोड़ा समझाया कि इस हालत में वह लड़का उसे छोड़ भाग गया। वह लड़का वफादार नहीं है। फिर रणधीर उसे उसके घर तक छोड़ कर आये। 2–3 दिन बाद उस लड़की की मां आयी और अपनी लड़की की इज्जत बचाने के लिये धन्यवाद दिया।

र. मैं अपनी बहन की शादी में गई थी तो अजमेर लॉकर से जेवर निकाले थे वह घर पर ही रखे थे। थोड़ी ओर चीजें भी ली थीं। 30 जून 2004 को हम बच्चों की पढ़ाई की चीजें लेने और मूवी देखने गये। लौटने पर देखा दरवाजे खुले थे। रणधीर ने अन्दर जाने से रोका फिर ड्राईवर और वे अन्दर गये, देख सब सामान बिखरा पड़ा था, अलमारियां खुली थीं। सारा सामान बाहर बिखरा हुआ था। सारा सोना, चांदी के बर्तन व जेवर, कैमरा ले गये थे। FIR करवायी, पर कुछ हुआ नहीं। हमें सबसे ज्यादा दुख था कि कोई हमारे घर में बगैर अनुमति के कैसे घुस आया? लग रहा था जैसे हमारा

चीरहरण हो गया है। ये क्रोध, ग्लानि कितने ही दिनों तक सालती रही। अगर मिल जायें तो दण्ड अवश्य देगें। एक दुःख की बात ओर थी कि रणधीर ने मुझे जम्मू से झुमके ला के दिये थे वो भी चोरी हो गये थे।। रणधीर के उसुल के बाहर था किसी को भी गिफ्ट देना। रणधीर, जब जम्मू से वापस आये थे तब लाये थे। साथ ही स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगांठ पर भारत सरकार द्वारा जारी सोने का सिक्का भी ले गये थे।

क. सिगरेट....जिस चाल्ली सिगरेटें दा आदी मूहां इच सिगरेट नेंई पाने करी, अपने आपा गी खाली मसूस करदा ऐ–भामें सिगरेट पीने नै उसी मजा आवै जां नेंई– । अकसर दिक्खेआ गे आ ऐ जे सिगरेट पीना छाड़ने गितै लोक पैंसले ते पैन्नें दे गै कश लादे रौह्देन कीजे वे मुहारे उनेंगी सूटे लाने दी लत लग्गी गेई दी होंदी ऐ।

नौकरी शुरू करने के बाद रणधीर ने सिगरेट पीना शुरू किया था। बाद में जब बहन घर को सम्हालती थी तब सिगरेट के खर्चे पर सवाल उठते थे। रणधीर बतलाते थे कि उन्होने कई बार सिगरेट छोड़ने का सोचा था पर हुआ नहीं। सन् 2003/4 में बोले – '' अब छोड़ दूंगा, तुम मुझे सम्हालना।'' और फिर सिगरेट छूट गई। शराब भी कभी–कभी लेते थे। बाद में वह भी छोड़ दी थी।

ख. सन् 2004 में मारुती 800 ली। धनतेरस की शाम गाड़ी घर आयी, पेट्रोल नहीं था तो रणधीर पेट्रोल लाये और केन से ही पेट्रोल बेध्यानी में डालने लगे, थोड़ी दूर पर दीपक जल रहा था, उसने आग पकड़ ली। केन को फेंक कपड़े से गाड़ी पर लगी आग को बुझाया। गाड़ी को तो कोई नुकसान नहीं हुआ पर रणधीर की उंगलिया झुलस गई थीं। रनिंग वाटर में रखने पर

देखा, उंगलियों की चमड़ी निकल रही है। अस्पताल भागे। पर इस पूरे प्रकरण में रणधीर शांत थे, कोई हाय–तोबा भी नहीं की। इनकी सहनशक्ति की सीमा नहीं थी।

ग. सन् 2006 में मालूम हुआ कि रणधीर को डायबिटीज है। वजन भी कम हो गया था। पूरे चेकअप के लिये पूना आर्मी अस्पताल गये। पहली बार मोबाइल आया। अपनी लड़की के पास 16 दिन रहे थे , लौटने पर 16 हजार भेजे। इसके बाद जीवन में थोड़ा परिर्वतन आया। बाबा रामदेव के काढ़े , करेला, एलोवेरा, गिलोय का रस देते थे। कड़वे रस को एक सांस में ही बगैर ना–नुकर किये पी जाते थे।

लड़कियों को स्कूल लाते–ले जाते थे। दोपहर को ट्यूशन पर ले जाते, शाम को कुछ भी शॉपिंग करने या बच्चों के साथ घुमाने भी ले जाते और केडबरी केक, चॉकलेट दिलाते थे।

घ. रणधीर को बनावटीपन या दबाव में बदलना बिलकुल पसंद नहीं था।जो जैसा है वैसा ही ठीक है। बच्चों को अवश्य ही सामाजिक बनाने के लिए सिखाया जाता है पर परिपक्व होने पर उनकी स्वयं की सोच, व्यवहार को कंट्रोल नहीं किया जा सकता है। करना ठीक भी नही है कारण, यह अन्य मानसिक अवरोधों को जन्म देता है। इसी तरह दांपत्य जीवन में जो जैसा है– वैसा ही रहे। प्रेम से स्वतः ही कोई अपने को बदले तो अलग है नहीं तो जबरदस्ती बदलना हानिकारक ही होगा, नहीं तो स्वतंत्रता का हनन होगा। मौलिकता में परिवर्तन करना अनिष्टकारी ही होगा। जब हम मिले थे तो इन्होने मूँछें रखी हुई थीं, एक बार बातो में ऐसे ही अपनी नापसंदगी जाहिर की तो मूँछें हटा दी, पर इस पर कोई चर्चा नहीं हुई। मुझपर कभी कुछ बदलने का दबाव नहीं बनाया। में अकेले काम करते सौंफ–सुपारी खाती थी तो मेरे लिए लेकर आते थे। स्वंय सिगरेट छोड़ने की कोशिश करने में मेरी सहायता चाहते थे,

छोड़ी पर कुछ महीनों बाद फिर शुरु कर दी। बाद में डायबिटिक होने पर खुद ने ही छोड़ दी।

37. पूर्णिमा

Feb 19, 1989 --- 6:59 pm - Feb 20, 9:01 pm

कायलाना झील, जोधपुर, एक पूर्णिमा की रात बहुत अनमोल थी। चाँदनी रात में पहाड़ों के बीच हल्की लहरों से प्लावित जलराशि हमेशा के लिए भाव–समाधि लेने को प्ररित कर रही थी। शान्त वातावरण बहुत रूमानी था। आज भी सोचते ही वह चाँदनी रात की रुमानी अैर हम दोनों की उपस्थिति नजर आ जाती है।..... कोई लौटा दे मेरे वो दिन.....

पूर्णिमाMar 21, 1989 --- 12:51 pm - Mar 22, 3:27 pm

'89' में इन्हे किसी काम से गांधीनगर, गुजरात जाना पड़ा था, मैं भी साथ गयी थी। रिटायरमेंट के पेपर तैयार हो रहे थे। शाम ढले , शायद पूर्णिमा थी, सर्किट हाउस के लॉन में आये थे। वहां एक झूला लगा था। झूले पर बैठे देर रात तक बातें करते रहे। एक दूसरे को जानने और सान्निघ्य में सब बड़ा अच्छा लगा। उस जादुई वातावरण में घंटों समय का पता ही नहीं लगा। उस चांदनी रात में झूला झूलते, कहीं अन्तरतम तक चाँदनी ही बस गई थी। बाह्य प्राकृतिक असीम चेतना और आन्तरिक चेतना एकाकार हो गये थे। ये वो अमृत–पल थे जिन्हे

याद कर मरणासन्न में फिर चेतना का संचार हो जाये। हमें एक ही ताल–लय में लाने के लिए वह शाम हमेशा याद रहेगी।

''आलना'' भीलवाड़ा में शरत्पूर्णीमा की रात खुली छत पर पूजा, दूध का प्रसाद और सुई पिरोना, सप्तऋषियों की पंक्ति में अरुंधति को देखना एक आयोजन था, मुख्य था उस जादुई वातावरण में हम सबकी चेतना को उस असीम चेतना से तादात्म्य स्थापित करना, जिससे नव स्फूर्ति का अनुभव करना।

MOON AND LOVERS
Like moon to moonlight, love to lovers is,
And moonlight, like a dazzling arch, sprays
The lovers' meeting in the night. Love gives
Such high intensity to its surveys
That without love, the lovers are forlorn,
Like bamboos not yet hewn to make flutes
And without moonlight, moon of beauty shorn,
Like trees uprooted have all withering roots.
Moon is luminous with the pale moonlight
And shrouds the earth in soothing loveliness;
Love is like a lark , at viewless height,
Which with its melody lessens loneliness.
Lovers without love – a palsied hand,
Moon devoid of moonlight –a barren land.

38. चार धाम

हिन्दुओं में बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ पुरी व रामेश्वरम् चार धामों की यात्रा का बहुत महत्व है। इन धामों के प्रति हर हिन्दू में अपार आस्था व श्रद्धा भाव होता है। उसी तरह रणधीर के मन में भी वैष्णव देवी, अंबारां–गौर, चिनाब, जम्मू–फत्तुचौगान का स्थान चारधाम रहा है। बचपन से ही इनके साथ बड़े हुए और इनका आकर्षण, श्रद्धा, अपनापन, अपनी रग–रग में आत्मसात किया था।

अ. वैष्णव देवी माता रूप में पूज्य हैं। कोई भी काम शुरू करने से पहले उनका स्मरण जरुर करते थे। पूरे समर्पण भाव और विश्वास के चलते अपनी पत्नी की बीमारी में खूब प्रार्थना की, पूरे जीवन, माता को समर्पित रहे पर कोई प्रार्थना काम न आयी और वह चली गयी। रणधीर माता से नाराज हो गए और फिर कभी दर्शन हेतु गये नहीं। मुझे कभी माता के दरबार में नहीं ले गए। सालों से खुद भी नहीं जाते हैं। मां से बच्चा हताश–निराश हो रूठ गया है। इतनी घोर आस्था होने पर भी पम्मी को बचाने, मां क्यों नहीं आयी? सब लूटकर परीक्षा ले रही थी? पर कार स्टार्ट करने से पहले हमेशा स्मरण करते थे। मां से रूसा–रूसी जैसा था। देवी के लिए बहुत लिखा है ।

VAISHNO DEVI

From Katra to the Cave in a single file
They walk along the path with rocks strewn,
What power makes them keen and so agile
That all devotees chant one ceaseless tune.

In praise of Durga. Distance eating gait
With every step takes nearer to the Cave,
And as they reach the rocky Palace gate
Of Durga – all devotees rant and rave.

All legends which are dotted on the way
Of this enthralling, ancient folk lore
Are legends, pure and simple, if I may?
But I am told to be silent, say no more.

And this devotion leaves such deep impress
I join them, and I raw and rant no less.

ब. जम्मू दिखाने में सबसे अच्छी जगह थी– चिनाब– आगोर गांव और वहां से अखनूर की सड़क जो आर्मी एरिया की तरफ जाती है के बीच एक वाटर लिफ्ट स्टेशन के आगे, सड़क किनारे इन लोगों की पुश्तैनी जमीन बतलायी जो बंजर थी। पानी सैकड़ों फीट नीचे था। वहीं सड़क छोड़ कर कच्चे में चिनाब के किनारे गये, वहां एक विशाल पीपल का पेड़ भी था। कार वहां तक गयी थी। वहां से हम नीचे खड्ड में उतरे थे, वहां पगडंडी भी नहीं थी। एक जगह से कूदकर दूसरी जगह जाना पड़ा था। बीच–बीच में हम रूककर चिनाब देखते थे। मैं तो अभिभूत थी। चिनाब का चौड़ा पाट और भयकंर तेज बहाव और आवाज आकर्षित कर रहा था तो डरा भी रहा था।
हरिद्वार में गंगा का बहाव भी इतना तेज नहीं है। रणधीर और नीचे जाना चाह रहे थे ओर मुझे डर लग रहा था। रणधीर पहले भी वहां आये हुए थे। कूदते–फांदते आखिर चिनाब तक पहुच ही गये। वहां ज्यादा जगह नहीं थी छोटी–छोटी चट्टानें थीं । मुश्किल से 4–5 लोग खड़े हो सकते थे। रणधीर ने मुझे पांव पानी में डालने को कहा– इनका हाथ पकड़कर पांव पानी में डाला तो जैसे करंट लगा, जून में इतना ठंडा पानी? कुछ देर वहीं रहे, रणधीर का साथ और अपनी ओर बुलाती प्यारी भंयकर

चिनाब सब जादुई था। चट्टानें तप रही थी पर पानी ? खून जमा देने वाला ठंडा। अपलक देखते रहे। दूर लिफ्ट स्टेशन दिख रहा था। वापस आते बार–बार पलटकर चिनाब देखती थी। लगा स्वर्ग यहीं है। ऊपर आकर वही पीपल का पेड़ हमारा स्वागत कर रहा था। पास ही वह बंजर जमीन का टुकड़ा भी था। वहीं बसने की इच्छा हुई, रणधीर ने बतलाया कि पानी वहां समस्या है, पर वो भी उत्साहित थे। आगे अखनूर का पुल था। अखनूर तक गये थे। लौटने पर उसी जादुई वातावरण से फिर गुजरे।
दुखः का विषय है कि चिनाब में बाढ़ से वह लिफ्ट स्टेशन और अखनूर का पुल बर्बाद हो गये हैं। आतंकवाद के कारण अखनूर का वह रास्ता बंद हो गया है। अब लगभग 32 सालों बाद भी वह सब सजीव हो रहा है। जानती हूं रणधीर के चार तीर्थों में एक तीर्थ चिनाब क्यों है? अब डोगरी कविता ''नौकरी'' पढ़ने पर बतला सकती हूं कि वह कौनसा पेड़ है जिसने श्रांत–निराश रणधीर को आश्रय दिया था, और कुछ समय के लिये जिसके नीचे रणधीर को नींद आ गयी थी। आज वह लिफ्ट स्टेशन और अखनूर का पुल नहीं है, अखनूर का वह रास्ता भी बंद है। पर चिनाब है और अवश्य ही वह पीपल का पेड़ भी होगा।

THE RIVER SAGE

Chenab, with sudden twist and roar,
Makes a perfect arch and flows along
To do a similar thing just north of "Gaur"
And floods my senses with a sensual song.

At Ambaran it southward turns and goes
To ancient town Akhnoor and seems to say,
"Have I put some thought unto your brows:
For you are lost and I am on my way.

Why swim against the currents of your life?
Why not to take the path of least resistance
And like me negotiate the stress and strife
To add some color to your blank existence?”

I wonder at the truth of what it says!!
Is it a river or a sage?

गांव गौर से चिनाब के तट पर जाने वाली पुरानी पगडंडी जो रणधीर को चिनाब तट तक ले जाती थी।अब काम में नहीं आती है। अब दूसरी नई काम में आती है।

I KNOW THIS RIVER (Chenab)

Since my innocent infancy hood,
I have known this river. What is more,
I know this river like I know my blood,
Which courses through my veins with a roar.

I know this river, if I want I could,
In winter saddle it from shore to shore.
I also know that, when in summer flood ,
It brings the drift wood right up to my door.

I know this river, it can, when in mood
Reach out and touch the centre of my core,
When not in such a mood, perhaps it would,

Then let me brandapart its hoary lore.

A river from a man's infancy hood
Is bound to grow and stay with him for good.

चनांह दा सौदा.....

It is within my memory
Bathe in River, Bring water, Drift wood,
Exercise, Meet,
Taps have come
River is also dove
Now only those people go who heave to steel
Timber or are to be burnt,
I started going; People wondered.
I want to sell CHENAB
Mad, Lunatic, Fuse
Wrong on my part to expect
That sell will be concluded so easily.
It is easier to cure physical desire.
Not easy to cure psychological desire.
They saw my bag
Made me open my mouth- opened my grimace.
Saw my pockets;
Customer and death or unexpected
Hence----------

चनाह दा सौदा
में फौजी नौकरी छोड़ी करी
अपनाई मजमा–फरोशी जदूं
ते सौदागिरी दी म्हारत नै
मीं बखशी खानाबदोशी जदूं
में अम्बां–रां बिच आई करी

.

"हिरखा दी देन"

चनांऽ दे पत्तना पर लेतरा में कुडे बैही ऐ
लिखी दित्ता हा तेरा नां बडै लाड़ा नै पोटे नै
लखारी तूं अनाड़ी आखेया मीं ते पिरी लेईयै
मेरा पन्ना उसीं हा में सी दिता ओदे टोटे नैं
मेरे कच्चे पना पर तूं कुड़े फ्ही खिड़ खिड़ हस्सी ही
बडी मुद्दत होई लेकन फ्ही साढ़ा मेल नीं होआ
कुड़े ओ गल्ल तेरी किश तरह हिरदे च बस्सी ही
तुगी में सच्च दसदा पर मिगी मौका नी थ्होआ

..... KV

दवासट बे मुआरी लू चलदी
चनां दा वगदा ठन्डा ठार पानी
कुसा दी जान बी एदे ने जानी
भी जिन्ना यार दी ठन्डी नज़र नैं
जमाना खून मेरी नाड़िये च
खलारी हड्ड देने वाड़िये च
नेईं एदे ने इन्नी रूह जलदी
KV

जम्म–अखनूर दी सड़का पर जद तेज चनां आई जन्दा ऐ
सज्जै पासै दो कोस चलो तां गौर ग्रां आई जन्दा ऐ
जे पार करो दरया एका तां इक्क पगडन्डी आई जन्दी
पगडन्डी रसतै चारक्रो वस अमवारां आई जन्दा ऐ KV

" चनं देपत्तना अर पूरबी दिवा पासै"

चनां दे पत्तना अर पूरबी दिषा पे पासै
खनूर नग्गरा शा कोस भर पहले गै

ते दुरगा माता दे पहाड़े दे दखना पासै
जदूं तूं अम्वारां ग्रां एठ टहलें गै
खड़ोता, पत्थरें दा ठेर टाम टिल्ला ऐ
ते दौऊँ खड्डें दे मजारै किल्ला किल्ला ऐ
ते एके टिल्ले उप्पर–इक्क ऐ ग्रां जिसदा
मशूर नामी ते वदनाम पुठ ना जिसदा
ते लोक आखदे ने पुशतें कोला गौर इसी
ते एदी कत्थ ए मिक्की सुनानी अज्ज मनां
कोई निं जानदा इत्थे ते आम तौर इसी
वजुरग जानदे न थोड़ा जेया ते दना दना

.....

इस सोहने चनां दे पत्तना दै नेड़ैं मिमें दा पिंड अगौर बी ऐह्
मैं आखी निं सकदा भाग–जला ऐसा जम्मू च पिंड कोई होर बी ऐ
जमोआलें दा पिंड खुंआदा ऐ ते जमोआलें दा इस च जोरबी ऐ
लोक आखदे इत्थूं दे मियें अंदर बड़ी वी किज टौरबी ऐ
कोई सड्डक घर जमुआलें दे न कोई वीह्हारे घर झीरें दे न

XV

स. लौटते समय हम आगोर गये। अपना पैतृक घर जो अब मात्र खण्हर हो चुका था, देखा, और फिर ''बुआ की देहरी'' भी दिखाई, पूरी कहानी भी बतलायी। जिस पर लंबी कविता लिखी है। वहां प्रचलित धारणा कि गौर का कोई आदमी सुखी नहीं हो सकता है,इनके मन में बैठी थी। लगभग 30 साल बाद इनकी मौसी के यहां से फिर घर के वही अन्तिम अवशेष देखे। खिड़की खोलने पर दो पीली मधुमक्खियां एकदम आयीं, शायद बोल रहीं थीं– डरो मत –हम तुम्हे पहचानती हैं। रणधीर ने हम पर एक सान्नेट लिखी है–

A SUMMER AFTERNOON IN GAUR

An afternoon in GAUR* Busy bees
Are busy in gathering honey from the flowers:
There hummings, cooing, crooning lullabies
Are echoing from the honey comb's bowers.

Ah! windows and doors have been shut
To shoo away the flies and the heat
The tufts of yellowed grass on my hut
Are motionless. And windless, silent beat.

Of sun has manifested on the crests
Of balding kikar trees. Deep distress
Prevails upon humanity as it rests
And sleeps through the summer laziness.

And just a mile away appear to sob
Perennial, icy waters of Chinab

*my native village

बुआ दी देह्री

पूरे जम्मू क्षेत्र में यहां के लोग बाह्य आक्रांताओं के भय से कन्याओं को जन्म से ही दफन करते आ रहे थे। सैकड़ों सालों से भारत में प्रवेश करने वाले आततायी उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र से आये। हर बार युद्धों से पीड़ित राज्य में खून–खराबा होता था और हार–जीत लगी रहती थी। परदा और कन्या हत्या धीरे–धीरे आवश्यकता से परंपरा में बदल गयी। स्वतत्रंता के बाद भी यह परंपरा चालू रही।यह कुकृत्य माता द्वारा ही किया या करवाया जाता था। इसलिये कुछ दशकों पूर्व तक परिवारों में कन्याऐं नहीं मिलती थीं।

जो परिवार अपने पुश्तैनी स्थानों पर रहते थे वहां बड़ी–बूढ़ी, माता से यह दुष्कर्म करवाती थीं और जो परिवार बाहर शहर में रहने लगे उनकी कन्यायें बच गयीं।इसने बाल रणधीर को समसामयिक परंपराओं के विरुद्ध एक युवा विद्रोही बना दिया जिसने आगे चल कर उनके जीवन को नया मोड़ दिया था। वे जीवन भर लड़कियों के हिमायति रहे। एक विद्रोही कीअभिव्यक्ति कई बार देखने में आती है। जैसे पूरे जम्मू क्षेत्र को कन्याओं की कब्रगाह बतलाया है।

1

.

1. JAMMU: MARTIAL PRETENTIONS

This arid land is dotted with the graves
Of daughters killed by mothers, ere they knew,
Ah! less than thirteen breaths. Mothers slew,
Their off spring like the snakes. And like knaves.

And spineless, gutless weak impotent slaves,
Their fathers, lame apologies construed,
Cheap justification from their lips issued,
But Rajpoots are still known as fearless braves.

I can't deny that I am Rajpoot
And fact that I was also here in-born.
And here in lies my source, my psychic root.
My heart is torn asunder with this thorn.

This shameful, vile connection can't deny,
Like others, do not praise it to the sky. vol.2 178
XV

2-पुराने समय में गौर गांव में कन्या को जिंदा रखना पाप माना जाता था। पर एक मियां ने अपनी पुत्री को मारा नहीं, बहुत विरोध हुआ, अन्त में वह कन्या और मियां दोनों मर गये। बाद में गांव में मौतें होने लगी , सारे जवान असमय मरने लगे, सारा इल्जाम उस लड़की पर आया। उस आत्मा को शान्त करने के उपाय किए गये। तब गांव के बाहर तालाब के किनारे बुआ की देह्री बनवाई गयी। शान्ति करवायी गई। तब से श्राप माना जाता है कि गौर का कोई भी बड़ा लड़का कभी खुश नहीं रहेगा। इनकी रचनायें हैं...

बुआ दी देह्री (vol. 6, 315)

(There are three types of soldiers-1. Scared, 2. Scare to admit that they are scared, 3. scared with thinking nothing)

जम्मू शहरा कोला, उत्तरा पासै, सड़का सड़का पूरा वारां करो
जाफर सिंह इक्क पिडं वसाया हा, गौर ग्रां जिसी आखदे उतो
ऐदी नसें विच, ते चूकले विच, भड़कदी रौन्दी ए धीयें दी रूह
धीये दे कतलें गी भुकतना पीड़ियें ,.....

गौरा दें वट्टें पर पैर नी रखेयां धीयें दी कवरें दे वट्टें न ए
वट्टे नें वनियां टक्कियां, गैलियां–वट्टें नें नीमे ते उच्चे थड़े

धीये नीं पुच्छ जे बुआ दी देह्रीया पूजा करन आऊँ जन्दा नी की
धीयें दी कबर ए, धरमा दी लोथा ते देह्री नैई एते देरी नैई
रत्तु च लिखी दी, पापा नै मिथी दी बड़ी अजीव ए बुआ दी क्हानी
कि पणू बाहमनै मिगी सनाई दी, सुन धीये अज मेरी जबानी

****

मिये दा घर ए, राजें दा गड़ ए, शेरें दी ग़ार, योधें दी थां
कन्डै चनां दै, टिब्बै दै उप्पर, पुरखें बसायें दा गौर ग्रां
सड़कै दै कन्डै मियें दा पत्तन, पत्तना कोल बूटे च घेरी
उच्चे धड़े पर, इक्कली मुक्कली, मूक खड़ोती दी बुआदी देरी

धीयें गी जमदे गै मारी हे दिन्दे– गौरा दा गौरव वचाने गितै
धीये दा रखना पाप हा इत्थें, इज्जत ते मान कमाने गितै
उनें दिनें, घर शेरू मियें दै कुड़ी ओई, बड़ा चरज ओआ
दब्बी नीं, मारी नीं, सुट्टी नी, रोह्ड़ी नी, हरज ओआ बड़ा हरजओआ

पहला मियां जिस रक्खी ही धी ते सारै ग्रां ओदी पन्डी ओई
पैन्चे च, लोकें च, घरा घरा विच्च, चरचा एदी मन्डी मन्डी ओई
शेरू गी शेकेया मिलिए सारें गौरा दी उच्ची बरादरी चा
धीयें गी जीन्दे गै मारने आली गौरा दी सुच्ची बराबरी चा

बड़ा गै जिद्धि हां, बड़ा गै पक्का हा धरमी असूलें दा शेरू मियां
कुड़ी दा नां ओनै आतमा रखेया, आत्मू ओदे भ्राऊँ दा नां

शेरू दी लाड़ी बी ओदन रोयें ही, आतमू बी बड़ा विफ्फरे दा
रसमें रवाजे गी नैई जहेड़ा मनदा बब्ब थ्होआ कैसा निगरे दा
शेरू ते शेर हा लड़दा रैया, पर हारेया नी सब झलदा रैया
पर जमाना हा तक्का च बैठे दा रोआ कन्नें हत्थ मलदा रैया

शेरू दे धरमा दे छौरें च आतमा रूलदी रैई कन्नें पलदी रैयी
कुल्ला दी वेजती जेह्ड़ी ही ओई ओ आतमू दा दिल दलदी रैयी
आतमा दी रख करने गितै ओनै नां वलाया हा आतमू गी
तुखदा रैया दिल आतमू दा, कन्नें जलदी रैई रत्त आतमू दी
आतमा नां दना चन्गा नी लग्गा अम्बड़ी गी न गै आतमू गी
ताईएं करी उसी आखदे सारे हे ''मोई कुड़ी'',लोको "मोई कुड़ी"
कल्ली मुल्ली गैओ राहैन्दी ही खेडदी, करदी ही पूजा परमात्मा दी
ओ परमातमा लेई जा आतमा, मुकती करो उस आतमा दी
मरी गेया शेरू रसमां दे भारा ने मारू इए केह्ड़ी सट्ट वनी
शेरू गी शेर गै मारी हे सकदे, शेर इए ओह्दी हट्ट बनी
जीन्दी रैई गैई ''मोई कुड़ी" पर जीन्दी ते जागदी लाश ही ओ

आतमू दै सिरभार ही ते सारे कुला गितै नाश ही ओ
राखे भ्राऊँ नै, रक्खेया मैनू गी भुक्खे पाने, उसी केदी करी
अम्वड़ी कोसदी रौहन्दी ही उसगी, लम्में लम्मे साह् भरी भरी
बीये दिनें बाद मरी गेई आतमा, कुला दा नां पी साफ ओआ
आतमूं मियें ने मिलिए बैठेया, शेरू दा जुल्म वी माफ ओआ
जवरें दे लश्कर ए चाड़दी दुनियां ते जोरा आह्लें दी गै तांदली ही
धरमा दे भकते गी मारी ए दिन्दे ते गौरा आलें दी गै तांदली ही

आतमा मरी ते लोक गलान्दे फ्ही कुला गी कीड़े वी पौन लगे
पुत्र मरी जन्दे जमदे जम्दे, सारे ग्रां आह्ले रोन लगे
काल पैई गया सारे ग्रां विच्च घर भ्रोची गये कीड़ें कन्नें
बारी बारी सब मरन लगे पी नोखियै नोखियें पीड़े कन्नें
दूरा दूरा फिरी पन्त बुलाये, पूजा ओई, बुआ आतमा दी
उन्दी सलाह, कन्नें आतमू दा घर फूकिए बुआ दी देह्री बनी

बुआ दी प्यास, बुजालने आस्तै खो दया उथे फ्ही डूंगा तला
बुआ दे उच्चडें आसनै आस्तै चुनेया पी हत्थें ने उच्चा थड़ा
छां करानै तैं लाये हे बूटे पी वोड़ी दे बुआ दी देह्री दै कोल
बुआ दी भुख्ख, वसारने वास्तैं अम्बा दे वूटे ने कीत्ती ही रोल
पीड़ ज़री बुआ आतमा नै जेह्ड़ी ओर कुसै कदें भुकती नैई
ताईएं ग्रां विच्च नन्ग ते भुक्ख ए ताईंएं धीये इत्थें युक्ती नैई
शेरू दी रूह अज भटका दी इत्थें बुआ दी उच्चली डेरिया च
गमें दे मेलं च चेतें दे घुंघरू बन्निएं पीड़ ए विम्वला दी
पापा दी भाह्र नीं साम्वेया जा दा पीड़ा दी लोथ नी सम्वला दी
धीये दी कवर ए, धरमां दी लोथ ए देह्री नैई ए ते देह्री नैईं
ताईंए धीये ए दी पूजा नी करदा ताईंए धीये ए सखान्दी नी गी
बंधी वबाई करी रखी दी आतमा बुआ दी खुचली डेरिया न

पुरखें दी आतमा भटका दी इत्थें उन्दे गितै कोई मुकती नैईं
जदूं तक्कर ए धरत समान न वुआ दे खूनां दी चुकती नैईं
धीये नी पुच्छ जे बुआ दी देरियां पूजा करनेया आऊँ जन्दी वी की
धीये दी कवर ए धरमा दी लोथ ऐ देह्री नेई एते देरी नेई

3. **बुआ दबनू** (vol. 6 141)

मात–पिता जदूं सुरग सधारे अस हे ठिड मठिडा
अड्ड भ्रा ते बहनां अस हे– आऊँ सबने शा वड्डा
अस वे सहारे ते ना समझे ञ्याने निक्के निक्के
लोक ए आखन असें ते खाने जिन्दु अन्दर धिक्के
नां घर कोठा, धेला पैसा नां गै चारदिवारी
लिखी दी साड़ी किसमत अन्दर दर दर खज्जलखारी
आखन लिखदा गीत ते कत्थां के ए करग कमाई
घर ग्रहस्थी कुसनै कत्थां लिखिएं भला चलाई
पर दाते दी मरजी दुनियां समझी निं ए फरजी
नां मेरी हठधरमी समझी नां मेरी मन मरजी
आखन करग लखारी किन्नां– ओ जानन निं मिक्की
मेरी नरम तबीयत अन्दर उनें फौलाद नीं दिक्खी
इस दुनियां चा में लेई लैता आपू देश नकाला
नां गीतें दे सुनचे सुरलै–नां कत्थें दा आला
पन्द्रह साल में तप जप कीता करिऐ उच्ची ईखी
ताईं ऐ वच्चे वने दे अफसर– उच्ची सव ग्रहसती

पन्द्रह साल दै वाद में वैठा मगन नखिदी सोचें
इक्कलेपन विच मी घेरे दा जिद्दी जिद्दी सोचें
किरन मकिरनी कोहलू दा कन्नें जियां टग्गा रौन्दा
कम्म ओऐ पायें मुशकल उआं मानू लग्गा रौन्दा
जीयां कत्थ लखारी लिखदा जो की ओदी ओन्दी
कत्थ लखोई जन्दी पर जेलै फी ओदी निं रौन्दी

बेह्‌ला ओई ऐ कल्ल मकुल्ला हक्का–भक्का ओन्दा
ओ भारा दा आदी उसगी भार कोई निं थोन्दा
अखीं मीटी मना गी आखै आ चैना नें सौ
भारें हट्टी जिन्द ऐ तेरी विन भारा भी रौ
बिन भारें दै थौ निं लव्वै मन्गै फिरी पञ्‌जाली
ए दे छुट्ट नीं कई सकदा खेतर एका माली।
बहन भ्रा ते वस्से सारे में ओई गया कल्ला
साथ संग में मन्गा दा हा फिरी वछाईए पल्ला
में भुल्ले हे साथी सारे–मेरा दायरा निक्का
उस दै उप्पर भाव छुआले करदे धिक्कम धिक्का
ताईं वैठा में सोचा नां मगन नखिदि सोचें
इक्कल सोख ते सिद्धी सिद्धी जिद्दी जिद्दी सोचें

चानचक्क इक्क इरखी सुरखी मेरी नजरें खुव्वी
शिन्ग शराबी इरखी मेरे हिरदे दै विच्च चुव्वी
अज्ज वनी दी डाकटर मेरी बहन ओ ललता रानी
खवर मेरे लेई इयां जियां मिट्ठा अमृत पानी
ललता मेरी बहन ऐ निक्की– मेरी गोदा खेड़ी
हरान आं में जे चान चक्क ए ओई गइै बड्डी एडी
डाकटर जी में कियां आखां–मेरे लेई ओ ''गुतलू''

एक दिन हम शीतलामाता मन्दिर होते हुए नगरोटा गये, वहां जिस फ्लैट में ये रहते थे, बतलाया, हम अन्दर नहीं गये कारण वहां कोई रह रहा था। हम थोड़ी देर बाहर ही रुके। पुरानी

मर्मान्तक यादें सतह पर आ रहीं थीं, आना स्वाभाविक था। स्वस्थ भविष्य के लिये आवश्यक भी था।

द.1989 मेंहम 6–7 दिन जम्मू में रहे। रणधीर के लिए ''फत्तु चौगान'', चिनाब, जम्मू, गोर और माता वैष्णव देवी ही तीर्थ रहे। रणधीर को भी अच्छा लग रहा था। रघुनाथ मन्दिर, बाहू–फोर्ट, तवी, रबिंरेश्वर मन्दिर, म्यूजियम, शीतला माता मन्दिर, नगरोटा– जहां वे रहते थे, यूनीवर्सिटी। इस तीर्थयात्रा में रणधीर ने सारे जम्मू को दिखाया।

सबसे पहले मुझे ''फत्तु चौगान'' ले गए। ''फत्तु चौगान'' के नाम से ही इनके मन में सैकड़ों यादें उभर आती थीं। यहां आधा कच्चा, आधा पक्का मकान–'घर' था। पूरा कुनबा वहां रहता था। वह घर कई अच्छी–बुरी बातों का गवाह रहा था। बालपन से लेकर युवावस्था और बालिग होते–होते अपने वातावरण को देखने–समझने और मौज करने का समय था। यही जीवन का वह समय होता है जो जीवनदायिनी यादों का स्रोत होता है। बचपन और युवावस्था के वे अनुभव–मौज हमेशा याद रहते हैं, उन्हे दोहराने में आनंद आता है। उस जीवन में अच्छी–बुरी सभी बातें, घटनायें, अनुभव होते हैं पर याद सिर्फ अच्छी बातें ही रहती है। जैसे मां का डाँटना–मारना कभी याद नहीं रहता है पर उनका प्यार हमेशा याद रहता है। यही बातें मरणासन्न व्यक्ति को जिला सकती हैं। ''फत्तु चौगान'' की यादें, अपने भाई–बहन, दोस्त, पढाई, माता–पिता, खुद के आसपास घूमती हैं। यादों का पिटारा कभी खाली नहीं होता है। ''फत्तु चौगान'' के साथ एक नाम ओर जुड़ जाता है–''कान्ता''।

पारंपरिक परिवारों में पिता के बाद, जयेष्ठ पुत्र को पगड़ी पहनाई जाती है, वही उस घर का मुखिया होता है, सभी चीजों का मुखिया। मां से गपशप में कई बार समझ में आता था

कि मां की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं का विस्तार कहां तक है। उनके अर्न्तमन में क्या उथल–पुथल है। अनकहे ही पुत्र समझता था कि मां की आकांक्षाओं, अपेक्षाओं का आधार वही बनने वाला है। मां की थकावट, व्यस्तता और नीरीहता को महसूस करता था, ठीक वैसे ही जैसे प्रेमचन्द की कहानी में हमीद अपनी दादी को समझता है। मां की निरीहता ओर परंपराओं में फंसी नारी, एक परतंत्र महिला जो उसकी मां है, जो मूक है। एक गाय के समान है। पति ही उसका रक्षक है। पति के रक्षा–चक्र में उसके स्नेह,वात्सल्य, प्रेम, जीवन, परिवार और मातृत्व की रक्षा होती है। पति की अनुपस्थिति में उसका कोई अस्तित्व नही है, दूसरों के कहने पर ही चलना होगा। पुत्र इन सब तथ्यों से अवगत था। अन्ततः पुत्र अपनी माता की हर आकांक्षा को फलीभूत करने में सफल होता है, इसका गवाह यह ''फत्तु चौगान'' है।

बलगी जा जम्मु आ मेरे गितै"

जम्मू शहरा च कत्तियां बलियां न
ते स्होल सुहानी एन्दी गलियां न
इस शहरा च रूप ए लोवने दा
इत्थें मेरियां ईखियां पलियां न

AH! JAMMU

I was banished from your winding lanes
By want and dire penury. Thus exiled,
I came to earn my living to the plains,
Dejected and defeated and reviled.
I made my peace with fate. At its shrine,
I humbled myself, rages reconciled.
And all exotic rages which were mine,
Were buried and forgotten. Like a child
I thought that I shall never feel the need,
To think of my rejections, neatly piled
In memories; but now the dormant seed

Of memories has sprouted branches wild,
And roots of rages are so deeply driven,
That nothing is forgotten or forgiven.

VISIT TO MY HOUSE IN JAMMU

When I see the rickety wooden stair
Moth eaten, blackened, where it used to be
In childhood years, on which without care,
I used to sit and full of wonders see
The sky, bereft of stars, filled with kites
Of varied hues, with gay abandon tossed-
In all directions, locked aerial flights-
I wonder as to why in it engrossed.
My very being becomes, why so much,
I want to then recall the older scenes-
The obliterated lines, frantic clutch,
At hopes and aches of long forgotten tears.
Ah! Why I want to forget, present times,
And think of past, denuded, barren claimer.

TEMPLE BELLS OF JAMMU

Oh! temple bells of Jammu pray roll on,
And from my feelings echoing, then return.
This life is rough and tough and really stern,
So for the sake of harassed self toll on.

I, humbly humbly on you now call on,
Be ringing, tolling, pains to assuage,
And keep me company for my earthly age ,
To have a chance to manage and toil on.

Oh! like the days of yore, I fall on
Your sweetest notes to consultation give
And agonized soul, a bit relieved,
To make it thus survive and stroll on.

Oh! temple bells of Jammu, pray toll on
For when I hear you, all my doubts are gone.

THE CITY I LIVE IN
– a foot note

I craved for your attention, but in vain.
I failed to move your stoic, clueless cheer
I was rejected by you everywhere
But now you want to name your newest lane

To honor me. No thanks. In times remote,
When you rejected me with vile comment,
This rosary of the sonnets, then I wrote,
To assuage my hurt. The monument

Has risen higher than your wildest guess,
And learned scholars, from it widely quote,
The irrepressible truths of life,. Though, yes,
I once did on you passionately dote.

You booted me and therefore Your Highness
In this have only rated a foot note.

BELLS

Bells, have always fascinated me,
around the necks of camels or bullocks,
They jingle and then tinkle when they walk.
Or dangling, in my school, from the tree,

Or hanging from the rafter in the temples,
Or stung from the ceilings of the churches,
And ringing from their consecrated perches,
Or played along with conches and the cymbals,

The cadence of the bells and their jingle,
Is like the peal of unaffected laughter,
Which rises from the marrow only after
the honey tunes are trolled and co-mingle.

Their music like a soft and cozy clutch,
Affects my very- being, over much.

MUSIC IN AN EVENING IN JAMMU

O! often in the barren, lonely eve,
I curse my loneliness, sit and grieve,
And by humanity's woe and weal,
Defeated, ousted, and degraded feel.

Retreating into mind's private shades,
I think of plaintive serenades.
And dread the morning which will quietly steal,
Come tiptoe to my side, make me deal,

With hard realities of the day,
I shudder, full of fear and dismay.
Then as if just to answer my appeal,
The peals of temple bells of Jammu, come,

And by their lilting cadences and zeal,
My sorrows and my woes are overcome

39. क्रिटेनिन बढ़ रहा थां भीलवाड़ा में कोई **विशेषज्ञ** नहीं था। उदयपुर से पन्द्रह दिन में एक डॉक्टर आते थे उन्ही को दिखाते थे। जून में एक–दो बार देखा ये असंबद्ध बोलते थे, पर थोड़ी ही देर में सामान्य बात करते थे। मुझे भी कुछ समझ नहीं आया।

जुलाई 9, 2009 को सुबह सामान्य उठे थे। रणधीर की एक खराब बात थी कि कुछ अलग होने या बुखार, दर्द होने पर बतलाते नहीं थे। शुरु से दर्द सहने की आदत थी, पीड़ा चेहरे पर आती नहीं थी। थोड़ी देर में चाय पीने के बाद लगा इनकी बातें संबद्ध नहीं थी, डॉक्टर चौधरी को फोन किया तो बोले अस्पताल में ICUमें आ जाओ। वे अस्पताल में फोन कर रहें हैं। यूरिन पास नहीं हो रहा था, सारे test भी करवाये, तीन बजे तक कुछ ठीक नहीं हुआ तो बोले जयपुर ले जाओ। जयपुर पहुंचते रात हो गयी। जीजी, जो बरसों से जयपुर में डॉक्टर रहीं थी, ने फोर्टिस में नेफरोलाजिस्ट से तैयार रहने को कहा । हम पहिले फोर्टिस गये वहां भर्ती करने के बाद डॉक्टर नें इनकी हालत देख इलाज करने से मनाकर दिया , फिर मोनीलेक लाये, पहुंचने से पहिले ही डॉ. ऐ.के. शर्मा अस्पताल आ गये थे। रणधीर ने असंबद्ध रुप से खुद ही सारी बात बतलायी।ICU में भर्ती किया, केथेटर लगाने पर खूब हल्ला मचाया, रातभर परेशान हुए, दोनों हाथों को बांध दिया था। ड्यूटी पर वार्डबॉय रातभर परेशान था। पूछ रहा था कि सोने का इन्जेक्शन दे दें क्या? मैंने कहा, डॉक्टर शर्मा से पूछें। सुबह साढ़े पांच के करीब मैं बाथरूम तक गयी थी, दो मिनिट के लिये, आने पर देखा ये सोये हैं, फिर काफी देर तक सोते रहे तो शंका हुई, वार्डबॉय से पूछा क्या इन्जेक्शन दिया है? बोला नहीं। उसके बाद सेमी कॉमा में चले गये। मेरे और खुशी, रौनक के बारबार बुलाने पर जवाब देते थे। पर पलभर बाद फिर नींद में चले जाते थे। डॉक्टर ने कह दिया था कि स्थिति ठीक नहीं है। उनके यह कहने पर एक जोर का आघात

लगा, सब लुटने के कगार पर दिमाग निष्क्रिय हो गया। एक चुप्पी छा गयी।

बड़ी लड़कियां आ गयीं थीं, भाई भी आ गये थे। सभी चाह रहे थे कि आर्मी अस्पताल या देहली अच्छे डॉक्टर के पास ले जायें। ड़ॉक्टर ऐ.के. शर्मा से भी पूछताछ की, एक साथ उनको घेर लिया, पूछने लगे क्या इन्हें शिफ्ट किया जा सकता है? इसपर वे नाराज भी हुए थे। उन्हे समझाया कि बड़े भाई की इस हालत से वे परेशान–दुःखी हैं इसलिये बुरा न मानें। उन लोगों ने देहली के विशेषज्ञों से बात की , उन्होने कहा इस हालत में शिफ्ट करना ठीक नहीं है और डॉ ए.के. शर्मा अच्छे हैं। *यहीं कुछ ऐसा हुआ जो नहीं होना चाहिये था। लंबे अंतराल के बाद लड़कियां अपने पिता को पुकार रहीं थीं पर किसी भी पुत्री के पुकार का उत्तर नहीं दिया, इसनें उनलोगों को हर्ट किया। पर छोटी लड़कियों के उत्साह के अतिरेक में बार–बार पुकारने पर वे थोड़ी प्रतिक्रिया कर रहे थे। तब ही सबसे छोटे देवर ने अनजाने में कुछ कहा जिसने जले पर नमक का काम किया, बोला– बाइस साल के उपर ये इक्कीस साल भारी हैं। ICU में इस प्रकरण ने लड़कियों को हर्ट किया। बाद में उनलोगों ने दुःख और निराशा में अपने पिता को लिखा– हमारी फेमिली और आपकी फेमिली अलग है। मैं इनके मैसेज–मोबाइल को कभी भी देखती नहीं थी, पर इस अवस्था में इनका मोबाइल मेरे पास ही था। यह मैसेज इनको दिखाना ठीक नहीं था, पर डिलीट भी नहीं कर पायी। तब रणधीर ठीक से उठकर चल भी नहीं पाते थे। 6–8 महीने बाद जब मोबाइल इन्होंने देखा तब बहुत खराब लगा।*

13 जुलाई को वेंटिलेटर पर लिया गया। डॉयलीसिस के लिये ले गये पर बीपी कम हो जाने से हटा दिया गया। बाद

में दूसरा पानी वाला शुरु किया। 18 तारीख से इनको ब्लीडिंग शरू हो गई, समझ नही आ रहा था कि कैसे पता करें? कारण यदि देखने की प्रक्रिया में और घाव बढ़ न जाये। डॉयबिटिक होने से क्लॉटिंग जल्दी नहीं हो रही थी। इस इंतजार में थे कि अपने आप रुके। तीन दिनों तक ब्लीडिंग होती रही, उपर से ब्लड देते रहे, ओ–नेगेटिव होने से परेशानी हो रही थी पर जीजी और लक्ष्मीकांत के कारण अरेंज हो रहा था। पर डॉक्टर हतोत्साहित थे। खर्चा बहुत हो रहा था। इनके दोनों भाई पीछे पड़ गये कि ECHS का कार्ड बनवाने से अच्छा होगा, जबकि मोनिलेक अस्पताल ECHS की लिस्ट में नहीं था। इसलिये अभी के लिये और बाद में भी वह कोई काम नहीं देगा। पर सभी बोले, सारे डॉक्यूमेंट भीलवाड़ा से लेकर आऊँ, साथ में कार भी ले आऊँ उन लोगों को आने–जाने में परेशानी होती है। मुझे कार की जरूरत नहीं थी, जीजी या लक्ष्मीकांत की कार थी। मै इन्हें ऐसी हालत में छोड़कर जाना नहीं चाहती थी पर वे सब पीछे ही पड़ गये। इस से भीलवाड़ा गई, कागज ढूंढ रही थी, बैंक भी जाना था, मिसेज राठौड़ खाना लेकर आयीं थीं।उन्होने नकद पैसेदिये और मैंने चैक उन्हे दे दिया। इस बीच हर पांच मिनिट में देवर–देवरानी फोन कर रहे थे। मै काम जल्दी निपटाना चाह रही थी पर वे फोन पर फोन करे जा रहे थे। अनावश्यक रुप से इन लोगों नें मुझे अपने पति से दूर भेजा, मात्र कार के लिये, कारण, 'कार्ड' जो मोनिलेक अस्पताल के लिए अनुपयोगी था। में हैरान, परेशान, दुखी थी, यह सब मुझे अमानवीय लग रहा था। ड्राइवर को आने जाने का किराया देने पर हॉयर किया। दो घन्टे में काम निपटाया ओर लौटी, पर शाम के सात बज गये थे। देखा रणधीर की हालत में कोई परिवर्तन नहीं है।

23 जुलाई को खून रुका। पर कॉमा में तो चल ही रहे थे। 28 जुलाई को होश आया। 29 को वेंटिलेटर हटाया। वाटर गद्दे का इंतजाम किया था पर बेडसोर हो गया था। 9 जुलाई से निरंतर महामृत्युंजय का मौन जाप रात–दिन चल रहा

था। चौबीस घन्टेICU में रहती थी मात्र सुबह ड्रेसिंग के समय मैं जीजी के यहां जाकर नहाकर लौट आती थी। सुबह का खाना जीजी के यहां से आता था और शाम का शेफाली लाती थी। 3 अगस्त को ICU से प्राइवेट वार्ड में शिफ्ट हुए। रणधीर का वजन 49केजी हो गया था। 2–3 दिन में डॉक्टर शर्मा ने डिसचार्ज करने को कहा, मैं बोली ऐसी हालत में ये घर पर कैसे रह सकते हैं? वे बोले– ये इतने कमजोर हो गए हैं कि कोई भी इन्फैक्शन ले लेगें, इसलिये इन्हे ले जाओ। दोनों लड़कियों के स्कुल का भी हर्ज हो रहा था।

भीलवाड़ा डॉक्टर चौधरी से बात की, वे बोले ले आओ , सम्हाल लेगें। 8 अगस्त को हम सब वापस घर आ गये। सुबह–शाम को इन्जेक्शन देने थे, दवाइयां थीं और रोज ड्रेसिंग करनी थी। ये तो करवट भी नहीं ले सकते थे। अगले दिन ही इन्हे सोनी अस्पताल मेंICU में रखा। लड़कियां स्कूल जातीं और बारी–बारी अस्पताल में डयूटी भी करतीं। अस्पताल दो मिनिट की दूरी पर था। घर के बाहर गार्ड 24 घन्टे रहता। वह सहायक भी था। चार दिन बाद इन्हे फिर घर लाये। अब मैं ड्रेंसिंग करना सीख गई थी। पर उठाने बैठाने में दिक्कत हो रही थी। अपने पांव पर खड़े नहीं हो पा रहे थे। फिर दो दिनों के लिये ICU , सोनी अस्पताल में रखा, फिर एक ऐसे गार्ड का इंतजाम किया जो इन्हे नित्यकर्म करवाने में सहायता कर सके और मालिश भी कर सके। महीने भर में ये व्हील चेयर पर बैठने लायक हुए। दीवाली तक ये मेरे सहारे से थोड़ा चलने लगे।

टैस्ट करवाते और डॉक्टर शर्मा को रिपार्ट करते रहे। एक बार जयपुर जाकर बतला भी आये। दिसंबर में फिर तबीयत खराब हुई। जयपुर गये और गॉलब्लेडर का ऑपरेशन करवाया। 6–7 दिनों में घर आये। जनवरी में इन्हे सांस की तकलीफ होने

लगी, 18 जनवरी को मोनिलेक पहुंचे, बोले गले में सांस की नली में वेंटिलेटर के कारण केलसाइट जमा हो गया है , गले की नली में छेद करना होगा जिससे सांस ठीक से चल सकेगी। जिंदगी भर के लिये छेद, बड़ा फैसला था। पर रात को बाथरूम जाते वक्त ये गिर पड़े, भाग्य से वार्डबॉय मौजूद था, सांस रूकने से ऐसा हुआ था। E.N.T.Doctor को फोन किया, बोले कल ऑपरेशन करेगें। पर इनकी हालत ठीक नहीं थी, हॉस्पिटिल के ईंचार्ज डॉक्टर तोलानी को फोन किया, उनके कहने पर रात को ही ऑपरेशन हुआ।

ऑपरेशन के बाद उन्हे पानी देने की मनाही थी। इन्हे प्यास लगती पर नहीं देने पर नाराज होते,.... प्यासे को पानी नहीं दिया तो..... वहीं से दो रजिस्टर खरीदे ताकि ये अपना लेखन कर सकें। जयपुर से ही suction machine खरीदी और भीलवाड़ा आ गये। ये बोलना भी सीख गये। फिर ये मशीन जीवन का अंग बन गयी।

पयासे गी पानी निं दित्ता, अमृत बाद च दित्ता केह् फायदा,
यमें दे राजें गी एह् बुलाबा ऐ ओह् दोस्तो बाकायदा।
हर चीज ज्यादा चंगी निं होन्दी–सूक्तियें दा कायदा,
असें जरूर त्रोड़ना ऐ प्यार देइयै ज्यादा कोला ज्यादा।

(vol 3 28)

मैं इस होल को बंद करने की पूछताछ करती रही। मालूम हुआ कि स्टेंट डालकर इसे बंद किया जा सकता है। पर ऑपरेशन खतरनाक और खर्चीला है , स्थायित्व का भी अभाव है। स्टेंट को बदलना भी पड़ सकता है। डॉक्टर ऐके शर्मा ने मना किया, कहा. .... लोग इससuction machine से पूरी जिन्दगी निकालते हैं, दूसरा foreign body staintentसे यदि infectionहो गया तो सम्हाला नहीं जा सकेगा। पर मशीन, रणधीर की जीवनचर्या में आवश्यक अंग बन गयी थी। मै चाहती थी वो एक बार फिर सामान्य जीवन जीयें। इन्टरनेट से लेजर सर्जरी से ऑपरेशन का मालूम हुआ, ऐसा ऑपरेशन केवल दिल्ली और मद्रास में होता है। डॉक्टर महेश्वरी देहली में ENT specialistहै। बात करने पर

उन्होने देहली बुलाया। बतलाया कि ऑपरेशन से ठीक हो जायेगा।

अक्टूबर 11 में जग्गी ने ऑपरेशन की तारीख ली , यह साल बच्चों की पढाई के लिये महत्वपूर्ण था, दोनों लड़कियां 12वीं में थी। एक ने साइंस–गणित और दूसरी नें कामर्स लिया था। हम दोनों ने निश्चित किया कि मई–जून में करवायेगें पर जग्गी ने ऑपरेशन तयकर दिया था, असमंजस की स्थिति थी। जग्गी से पूछा कि यदि अभी ऑपरेशन करवाते हैं तो उसे ही पूरी देखरेख करनी होगी, मैं वहां नहीं रह सकूगीं। मन में बहुत डर लग रहा था, मैं तैयार नहीं थी। जग्गी की नौकरी भी थी। रणधीर नें फिर जग्गी से बात की तो वह जिम्मेदारी लेने को तैयार हो गया वे भाई बहन और पूनम मिलकर सब सम्हाल लेगें। पैसों के बारे में **निश्चित** हुआ कि अभी सारा खर्चा जग्गी करेगा। जग्गी नें सबकी डयूटी लगा दी थी जिससे हरवक्त कोई ना कोई इनके पास रहे। इस अरेंजमेंट पर थोड़ा विश्वास हुआ कि सब सम्हल जायेगा और आखिर सब तैय हो गया। मै इन्हे छोड़ने उदयपुर गई। मन में घबराहट थी, कैसी विडबंना है कि मैं साथ नहीं हूं। ये तो अपनों के बीच थे। लड़कियों को ज्यादा समय अकेला कैसे छोड़ती? दोनों अकेली कैसे रहतीं? रणधीर को पूनम और जग्गी पर विश्वास था। ऑपरेशन में पहले दिन ओपन करने पर पाया कि लेजर से **ऑपरेशन** नहीं हो पायेंगा कारण, केलसाईट फारमेंशन ज्यादा होने से लेजर काम नहीं करेगा। मेरे से पूछकर दूसरे दिन फिर ऑपरेशन हुआ जो मेजर ऑपरेशन था। सांस की नली के damaged portion को काटकर फिर जोड़ना था। सब ठीक हुआ पर एनस्थिसिया के समय आक्सीजन की मात्रा ज्यादा होने से शरीर में खूब सूजन आ गयी जो खतरनाक हो सकती थी। मैं भी दूसरे दिन पहुंची, देखकर रोना आ गया, इन्हे पहचानना मुश्किल था। ICUसे इन्हे कमरे में लाया जा रहा था। रणधीर की ठोड़ी को गले नीचे की हड्डी को बांधा गया था ताकि सांस की नली पर खिंचाव न आये यह सब बड़ा

कष्टदायक था। रौनक मेरे साथ थी। मैं वहां दो रोज रही थी। खुशी घर पर अकेली थी। मुझे लौटना पड़ा। वर्तमान स्थिति बहुत परेशान करने वाली थी। पति के पास रहूं या लड़कियों को देखूं ? रणधीर अपनों के बीच थे, लड़कियां घर में अकेली थी, गार्ड थे पर घर थोड़ा एकान्त में था। मेरी छोटी नंनद बार–बार कह रही थी कि मुझे अपने पति के पास रहना चाहिये, सत्यवान–सावित्री की याद दिला रही थी। रणधीर सब समझ रहे थे और मुझे जाने को कह रहे थे । अपनी बेबसी पर दुःख और क्रोध, असंतोष था। एक ओर विचित्र बात हो गयी, मैं रणधीर के पास कुछ पैसे छोड़ आयी, जब कि रणधीर को जरूरत नहीं थी। वो पैसे सम्हाल नहीं सकते थे।

हम हरवक्त सपंर्क में थे। जग्गी के पास ही रह रहे थे। जग्गी ने इनकी बहुत सेवा की थी, जैसे एक पुत्र अपने पिता की सेवा करता है। जग्गी की पत्नी और लड़की भी सेवा मे लगे रहते थे। डॉयबिटिक होने से विशेष ध्यान रखना पड़ता था। जग्गी रात को पांव की उँगलियों के बीच सफाई करता था। रणधीर की छोटी बहन ने दो–एक बार बात की और रणधीर के बारे में बतलाती थी और बतलाती थी कि जग्गी बहुत सेवा कर रहा है ऐसी कोई नहीं करता है व मुझे जग्गी काthankful होना चाहिये। यह कईबार कहा गया और बाद में दूसरी दोनों बहनों द्वारा भी कहा गया कि मुझे जग्गी का thankfulहोना चाहिये। बारबार ऐसा सुनना अच्छा नहीं लग रहा था पर क्या किया जा सकता है? ऐसा कहने से जग्गी की सारी सेवा पर पानी फिर रहा था। 20–22 दिन बाद फिर से चैकअप करवाकर ही रणधीर वापस लौटे । ठुड्डी को धागे से बंधी होने से गर्दन को ज्यादा हिलाने की अनुमति नहीं थी जो कष्टकर था। पर अब बोल पा रहे थे। कोई बाहरी चीज शरीर में न होने से इन्फेक्शन का **अंदेशा** भी नहीं था। भगवान के आशीर्वाद से सब ठीक ही रहा। बाद में भीलवाड़ा में ही वह टांका हटा दिया गया और रणधीर

का जीवन सामान्य होने लगा। रणधीर ने जग्गी को छः लाख का चेक भिजवाया।

जीवन फिर चल पड़ा। स्टूडेंट आते थे, ''पते दी गल्ल'' लगभग रोज ही लिखते थे। सब सामान्य हो रहा था। भीलवाड़ा में ही ECHS की क्लीनिक खुल गई थी।वहां के इंचार्ज के बहुत कहने पर, इनके भाई–बहनों के कहने के कारण ECHSबनवायेकार्ड का उपयोग किया। जयपुर के सोनी हॉस्पिटिल में जाना पड़ा था।

दिसंबर '12 को एक दिन ये शेव करवाने कॉलोनी में ही गये थे। मैं कम्यूटर पर कुछ कर रही थी। बच्चे स्कूल गये थे। गाड़ी रूकने की आवाज आयी, गेट खुला, फिर आवाज़ आयी , ये अन्दर आये ही नहीं, उठकर देखने गयी तो ये घर में धुस रहे थे। पूछा किसकी आवाज़ थी, बोले पानी होने से फर्श पर फिसल गये थे और हाथ में लग गयी है। देखा सूजन नहीं आयी थी, बोली– चलो अस्पताल चलते हैं? इन्होने जवाब नहीं दिया पर मुंह से लग रहा था कि तकलीफ है। मेंने हॉस्पिटिल चलने को कहा। गाड़ी चलानी आती नहीं थी, थ्रीव्हीलर पकड़ा, हॉस्पिटिल में एक्सरे करवाने पर मालूम हुआ फैक्चर है, प्लास्टर हुआ , घर आये। थोड़ा व्यवस्थित होने पर मुझे रणधीर पर गुस्सा आया, फिसले तो आवाज क्यों नहीं दी, हॉस्पिटिल जाने की जल्दी नहीं की, बतलाते भी नहीं है कि दर्द हो रहा है।

क्रिटेनिन बढ़ने पर जयपुर सोनी हॉस्पिटिल दिखाने गये। वहां फिर से प्लास्टर करवाया। मार्च मे हाथ ठीक हो गया था पर पूरा काम नहीं कर रहा था, लड़कियों के बोर्ड एक्जाम का सेंटर दूर था। टैक्सी का इंतजाम करवाया पर कई बच्चों को लेकर जायेगा, समय पर नहीं पहुंचा तो .....। इन्होने outer roads से खुद ले जाना तय किया। हम दोनों इन्हे छोड़ने बाहर–बाहर से ले जाते थे। सेन्टएन्सलम स्कूल अजमेर रोड पर था। इस व्यवस्था से ये खुश थे। अपने बच्चों के लिये कठिन परिस्थितियों में भी ये धीरज और साहस से काम ले रहे थे।

इन दिनों मैने कई बार महसूस किया कि अब दोनों लड़कियां 12 वीं कर चुकी हैं और होस्टल में रह सकती हैं। एक तोBBA के लिये जयपुर आ गयी और दूसरी भी कम्प्यूटरके लिये जयपुर जा सकती थी। इनकी आंतरिक इच्छा हमेशा अंबारा या आगोर में रहने की रही थी। रणधीर जम्मू अपने पैतृक गांव में रह सकते थे। वहां फ्लैट लेने के लिए भी भाई को कहा पर उसने गंभीरता से नहीं लिया। वैसे हम किडनी की बीमारी के कारण भी जयपुर छोडकर कहीं जा नहीं सकते थे।

सन् '13' में एक करीबी ने रणधीर को मर्मान्तक पीड़ा दी जिससे वो बहुत ही दुःखी और क्रोधित थे। रणधीर को इतने सालों में कभी आपे के बाहर होते नहीं देखा था। कई महीनों तक वे परेशान रहे थे। आदमी अपनी क्षुद्र इच्छापूर्ति के लिये कितना नीचे गिर सकता है! दूसरे को इतना पीड़ित कर सकता है! रणधीर की बीमारी के कारण बार–बार जयपुर जाना होता था इसलिये जयपुर ही शिफ्ट होना तय किया। एक 2 बीएचका फ्लैट सीनियर सिटीजन की सोसाईटी में लिया जो ग्रांउड फ्लोर पर था कारण उसके साथ थोड़ी बगीचे की जमीन भी थी। फिर लगा इतने छोटेफ्लैट में कैसे रहेंगे? तो दूसरा एक फ्लैट ओर लिया जहां ठंड में सुबह से शाम तक धूप आती थी। सोचा दोनों में रहेंगे, एक विंटर और दूसरा समर हाउस होगा। कितनी रंगीन इच्छा थी। 1995–96 में जयपुर में एक बड़ा प्लाट लिया था जिसकी अब कीमत खूब बढ़ गयी थी। फ्लैट लेने के लिये पैसे नहीं थे तो पृथ्वीराज नगर का प्लाट न चाहते हुए भी बेचा। लागत कीमत से लगभग साठ गुना पैसा मिला और अंततः भीलवाड़े का मकान भी बेच दिया उसके भी अच्छे पैसे मिल गये। रणधीर की तबीयत खराब होती जा रही थी। बार–बार जयपुर आना होता था।

दिसंबर '14' में रणधीर के पाँवों में सूजन आयी जो अच्छा लक्षण नहीं था। जयपुर दिखाया, सोनी हॉस्पिटिल के डाक्टर ने कोई चिंता नहीं बतलायी तो हम पुनः मोनिलेक, डाक्टर

शर्मा के पास गये। देखते ही उन्होने डांटा कि ये क्या किया है? वहां चार दिनों के बाद भी क्रिटेनीन नीचे नहीं आया तो डायलेसिस पर रखा, क्रिटेनीन कम हुआ पर अब निश्चिंतता खत्म नहीं हुई थी। डा. शर्मा ने भी कोई उत्साह जनक भविष्य नहीं दिखाया। अब हर 15 दिनों में क्रिटेनीन चैक करवाकर डा. शर्मा को रिपोर्ट करते और उनके दिशा निर्देशों के अनुसार इलाज चल रहा था।

ये ECHS के कार्ड के चक्कर में रणधीर की हालत खराब हो गयी थी। सोनी में अच्छे डाक्टर नहीं थे। आर्मी के ही रिटायर्ड नेफ्रोलॉजिस्ट थे। यदि हम डाक्टर शर्मा के पास ही रहते तो शायद बेहतर होता। डाक्टर शर्मा ने मुझ से कहा था कि –मैंने उनसे दो साल मांगे थे, जैसी स्थिति में रणधीर 2009 में आये थे वह उत्साह जनक नहीं थी। पर अब 2015 तक सब चला ही है, पर अब आगे कहा नहीं जा सकता है। समय ज्यादा नहीं है।

दोनों लड़कियां ग्रेजुएशन पूरा कर रहीं थीं। रणधीर की सलाह से दोनों की शादी करवाने का फैसला लिया, अपनी जिम्मेदारी पूरी करना चाही। 2015 मई में हम जयपुर आ गये। दोनों लड़कियों की शादी आठ जून और 22जुलाई 2015 को की।

40. कुवंर वियोगी , गौर वर्ण, भूरी हरी आंखों वाले बहुत ही सुदर्शन और आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च बुद्धि और विलक्षण स्मृति के स्वामी थे । उच्च नैतिक स्तर, मानव मूल्यों, समय की पाबन्दी, सत्यवादी, आत्मविश्वासी, दृढ़ इच्छाशक्ति, साहसी, एकाग्रचित्तता, दया, प्रेम, करुणा, शिष्टाचार के धनी थे। पढ़ने लिखने के शौकीन, विद्वान और वातावरण के प्रतिसजगता से कभी भी, कहीं भी ,किसी भी विषय पर अर्थपूर्ण चर्चा कर सकते थे। हिन्दी, अँग्रेजी, उर्दू व डोगरी साहित्य के प्रेमी थे। किसी भी वर्ग, स्तर , जाति, क्लास की महिला के प्रति हमेशा आदर सम्मान से पेश आये। नारी का उनके जीवन में हमेशा महत्वपूर्ण रोल रहा, और हमेशा नारी को ऊँचे पैडस्टल पर रखा। आत्मविश्वासी, दृढ़ इच्छा शक्ति, पर धीमे कोमल स्वर से कई बार लोग धोखे से उन्हे कमजोर समझने की भूल कर जाते थे।
रणधीर बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति रहें हैं। जब भी कोईemotional sceneदेखते उनकी आंखों में आँसू आ जाते । फिल्म 'बागबान' के अन्त को, जितनी बार देखते भावुकता में आँसू आ जाते। मैं पूछती , रणधीर, कितनी बार तो देख ली है फिर ये भावुकता क्यों? शायद अपनों के दोषारोपण और बिछुड़ना तड़पाता होगा। तभी कहते हैं.....
मुझे लगता है कि प्यार और आग समान ही होते हैं। आग तो पानी से बुझाई जा सकती है पर प्रेमी ह्रदय के आँसू को रोका नहीं जा सकता है। प्यार की अग्नि उन्हे और तपा देती है। प्रेम की तड़प में मै रोऊँगा ,मेरी आंखो से आँसू बहने दो।

हमारी शादी के 27 सालों में दोस्ती गहराती गई। कैंसर से एक रोगी ही विचलित नहीं होता है वरन सारा घर, वर्तमान, भविष्य सभी कुर्बान हो जाते हैं। प्रिय के छिनने की फाँस हमेशा चुभती रहती है। 'समय' उस चुभन को कम करता जाता है पर वह जिंदा तो रहती है। वियोगीजी की लिखी एक कविता ''चार कमरे'' में जीवन का दर्शन छुपा है। दोस्त होने से मेरी पहुंच तीसरे कमरे तक हो गई थी।

तीसरे कमरे की झिर्री से , रणधीर की unsaid, undefined पीड़ा को थोड़ा जान पाई थी। शायद पत्नी से दोस्त, दोस्त से मां बनने की प्रक्रिया मे ऐसा हुआ होगा। बाद के कुछ सालों में वे ,मुझे मां कहने लगे थे। लड़कियां कहती थीं – पापा! आप मम्मी को मां क्यों कहते हैं? ये हंसकर कहते, तुम भी तो 'मां ' कहते हो।

पिंजरे की चिड़िया, पिंजरे को ही अपना संसार मानती है, दरवाजा खुला होने पर बाहर जाकर धूमकर फिर पिंजरे में आ जाती है जैसे जहाज का पक्षी उड़–उड़कर फिर जहाज पर ही आता है। पिंजरा टूटने पर चिड़िया खुले आकाश में उड़ने की आदी होने लगती है। दमित इच्छायें फिर सतह पर आने लगती है और आकार लेने लगती है। ये एक आजादी पर्व है। हे मित्र! तुम्हारा कुछ नहीं है और सब तुम्हारा है।

2010 में बीमारी के बाद रणधीर को कुछ एसे अनुभव हुए जिनसे बचे–खुचे रिश्तों से भी मोहभंग हो गया। प्रारंभिक अवस्था में यह मोह भंग थोड़ा विचलित करने वाला था पर बाद में आजादी के नये द्वार खुल गये। एक आनंद भाव स्थायी होता जा रहा था– कुछ है भी तो अच्छा और कुछ नहीं भी है तो भी अच्छा। 2015जुलाई में लड़कियों की शादी के बाद बोले, अब हमारे सब काम पूरे हो गये हैं। लंबे प्रयाण के लिये प्रस्तुत हो सकते हैं। बोली, नहीं, अभी एक काम और बचा है, तुम्हारी रचनाओं का प्रकाशन। तब बोले रहने दो– हम ऐसे ही चलेगें। बोली, नहीं तुम्हारी इतनी मेहनत और सृजन यूं ही क्यों जाने दें? हम प्रकाशित जरूर करवायेगें। बोले तो ठीक है तुम करवाना, मै इन्तजार नहीं कर सकता। मैनें पूछा –तुम्हे कैसे मालूम कि तुम पहिले जाओगे? मै नहीं जा सकती? रणधीर बोले, मैं तुम्हारे बिना एक पल भीsurviveनहीं कर सकता हूं। बहुत dependentहो गया हूं। रणधीर, यह तो बहुत स्वार्थीपना है? कुछ जवाब नहीं दिया।

जम्मू के श्री अशोक गुप्ता, कलचरल आकादमी के अध्यक्ष से रणधीर की बात होती थी पर मैं उन्हे नहीं जानती थी। परन्तु किताबें छपवाने के लिये उन्ही से मदद मांगी थी, जो उन्होने स्वीकार की थी। यह जुलाई आखिर की बात है।

थोड़ी देर में हाथ पकड़कर बोले, मेरे मरने के बाद तुम किसी को मत बुलाना, तुम्हीं मेरा संस्कार करना। जुलाई 2009 के बाद डॉक्टरों ने कई बार संभावनायें बतलाई थी, पत्थर बन सब सुनती थी। भयानक सूचनाओं के आघातों को कछुए के समान मुंह छुपाकर या ज्ञानशून्य हो सहन करने की कोशिश करती थी। कुछ देर अपने को व्यवस्थित कर फिर इन्हे स्वस्थ करने के प्रयास में जुट जाती थी। पर इसबार सूचना का आघात स्वयं इन्होने दिया था। यह सूचना नहीं छुपा हुआ आदेश था। यह प्रथम और अन्तिम आदेश था।आखिर के कुछ दिनों में ये बोल नहीं पाये थे पर जानती थी की मेरी सब बातें सुन रहें है। मैनें कभी हाथ नहीं छोड़ा। बच्चा रणधीर डरता था तो मां तकिये के नीचे चाकू रख देती थी। रात के अंधेरे में कोई साथ होना चाहिये। मुझ से भी अन्त तक हाथ न छोड़ने की अपेक्षा की थी। **16 सितंबर 2015 के ब्रह्ममूहर्त में देह त्याग दी।** रणधीर की इच्छानुसार मुझे ही अन्तिम संस्कार करना था पर अन्तिम संस्कार के लिये दोहता आया था तो उसने किया। पंच तत्व के भौतिक शरीर को छोड़ने और पंच तत्व में मिलने के दौरान भी मेरा हाथ तुमसे अलग नही हुआ , मैं हर वक्त तुम्हारे पास थी। मेरी आंखें के सामने सब मिट्टी, मिट्टी में मिल गयी। ज्ञानशून्य यंत्रवत खड़ी देख रही थी। त्रि आयामी संसार से अब उच्च आयामी संसार में चले गये हो। रणधीर, हम अब भी साथ हैं। मात्र नजरों से ओझल हो। हे भगवान! उनका ध्यान रखना, उन्हे कोई तकलीफ न हो।

सफरै दे नन्दै दैं सामनै मजल किश बी निसो,
जिन्दगानी जीने आह्लें तैं अजल किश बी निसो।

समें दी चाल कदें बी थमोन्दी हैन्नी सो,
गुजरी दी घड़ी परतियै परतोन्दी हैन्नी सो।

जद पखेरू उड़ान बदलदा ऐ,
उसलै अपना शमान बदलदा ऐ।
हत्थ रक्खिऐ धरम पोथी पर,
माहनु किन्ने ब्यान बदलदा ऐ।
टटैने दै स्हारे सूरजा दा,
कुन भला खानदान बदलदा ऐ?
नेईं खुंजने आह्ले तीरें तगरा,
तबका–तबका कमान बदलदा ऐ।
मशूक सूरत ते नेईं बदलदा,
गल्ला–गल्ला पर जुबान बदलदा ऐ।
चेहरें–मोहरें गी बदलने तांईं
न्हक माहनु मकान बदलदा ऐ।
''वियोगी'' आपूं गै अज गोआचे दा–
आखदा हा ओह् ज्हान बदलदा ऐ।

41. साहित्य परिपेक्ष में कुंवर वियोगी.....

आधुनिक डोगरी व अंग्रेजी भाषा में कुंवर वियोगी का साहित्य–समृद्धि, दार्शनिक गंभीरता और पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान रहा है। संवेदनशीलता, आत्मवादी दृष्टि, सौन्दर्य चित्रण, मूल्यों के प्रति समर्पण, राजनैतिक व सामाजिक कुप्रथाओं पर प्रहार व विद्रोह सदा रेखांकित किया जावेगा। विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अनुभूति की सूक्ष्मता, चिंतन की गंभीरता, करूणा, प्रेम, रहस्य, कर्तव्य चेतना, कवि को एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। डोगरी, अँग्रेजी, उर्दू, हिन्दी मे आधिकारिक योग्यता से अनुभूतियों, विचारों की अभिव्यक्ति सरल, स्पष्ट हो जाती है। गद्य और पद्य में भेद भी नजर नहीं आता है। विलक्षण स्मृति से ठेठ–लोक से आधुनिकता, परपंरावादी से आधुनिकतावादी में तुरंतshift- on/offहो जाते हैं।

स्वगत शोक से विश्वशोक व स्वगतआनंद से विश्व आनंद की यात्रा अनायास ही हो जाती है। संवेदनशील कवि को बाह्यदुःख संसार के बंधन में बांधते हैं,वहीं देश–काल की सीमा में बंधी असीम चेतना का क्रदंन भी है। बाह्य व आंतरिक दुखों की अभिव्यक्ति गद्य में आसान होती है पर भाषा पर पकड़ से कवि ने पद्य में भी उतनी ही सरल. सहज अभिव्यक्तिकी है। अलंकारों का ज्ञान न होने पर भी कबीर की मानिंद उपमा, उपमेय, शब्द, अर्थों की भी अभिव्यक्ति अनुपम है। देश–काल का पुनः सर्जन, गोचर साक्ष्यों से अगोचर सत्यों तक पहुंचा देता है।

कुवंर वियोगी जी ने स्कूल से लेकर जीवनपर्यन्त, लगभग 60–65 वर्षों में डोगरी, अग्रेजी,और उर्दू में अपने बहुआयामी व्यक्तित्व की तरह बहुआयामी लेखन विधाओं में

लेखन कार्य किया है। ये विद्वान, उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों के विशेष सन्त डोगरा सैनिक रहे।

वायुसेना के सेवा काल में उन्हे प्रशंसा , मैडलों से सम्मानित किया गया था। सेंट्रल साहित्य एकेडमी डोगरी द्वारा 1980 में पुरस्कृत हुए, बाद में नमीं डोगरी संस्था ने भी सम्मानित किया। के. के. बिड़ला फाउंडेशन के सरस्वती व व्यास सम्मान के प्रस्तावक भी रहे।

एक सन्त आत्मा की रचनायें आपको छुयेंगी, उद्वेलित करेगी, जीवन दर्शन, ममत्व, आशा–निराशा, सुख–दुःख से निस्पृह, जीवन की कठोर परीक्षायें देते सफलताओं का अनुभव कराते, कठोर शारीरिक–मानसिक श्रम, सामाजिक कुरीतियों का विरोध करते, माता–पिता–परिवार के प्रति समर्पण का भाव , श्रवण कुमार का स्मरण करायेगा।

कुंवर वियोगी एक विशुद्ध भारतीय गृहस्थ कवि हैं जो प्रेम के, प्रकृति के अवलंबन से सौन्दर्य और प्रेम की ऐन्द्रिकता को काव्य से अभिव्यक्त करते हैं। यह प्रेम अपनी पत्नी से है जो विराट रूप लेकर , काव्य में उतरता है। कविता में प्रेम है तो प्रिय के प्रति अप्रतिम आकांक्षा की प्रबलता, कल्पना रूप में घटित होती है, जो कामना से प्रेरित हो ऐन्द्रिकता को निर्देशित करती है। कुंवर वियोगी के जीवन का आधार 'प्रेम' है। प्रेमी युगल के प्रेम, परस्पर संयोग, प्रिया का चित्रण, बहुत ही भावपूर्ण है, अनोखा है। यही अनोखापन, प्रेम, आवेग कविता को सौन्दर्य प्रदान करता है और इस प्रेम को गहरी आत्मीयता से अधिक उदात्त बना देता है। यह प्रेम वासनाजन्य और उन्मत्त नहीं है। मात्र प्रिया को छू लेने की चाह है। सात्विक, निश्छल प्रेम– यहां सुलभ है यह आत्मिक प्रेम ही जीना सिखाता है। जिजीविषा को जागृत करता है, अवचेतन मन में भी भावों को जागृत करने की विलक्षण क्षमता रखता है। प्रेम की वत्सलता में रति का अकुंठ अंकन करता है । इस प्रेम में अधीरता नहीं वरन पूर्णता का भाव है जो तृप्त करता है। कुंवर वियागी का यह प्रेम एक ऐसा फ्रेम है जो प्रत्यक्ष–परोक्ष

रूप से सब जगह उपस्थित है। जिसके बिना संघर्ष, वेदना को सहन करना, सपने देखना, प्रतीक्षा, जीना संभव नहीं है। प्रेम के आलंबन से अपनी राह बनाते, प्रेम से ताप का शमन, आक्रोश को शांत करते, नई उम्मीदों में परिवर्तन करते जाते हैं। प्रकृति, स्वंय और 'प्रेम' से प्रेम की शक्ति ने कुंवर वियोगी के स्वभाव को उदारता, संयम, शालीनता, शुभ्रता दी है जो अन्यत्र देखने में नहीं आती है। अपनी सम्पूर्ण जीवन प्रक्रिया में ऐसे सन्त कवि को देखना ही समझना है, जैसे आज कबीर, तुलसी, जायसी को देखते, समझते हैं।

प्राचीन भारतीय साहित्य में ''यम'' के साथ दो जगह संवाद है.. नचिकेता व सावित्री का। नचिकेता संवाद का अपनी रचनाओं में उल्लेख किया है, पर कहीं सावित्री का उल्लेख नहीं है। गहन–गंभीर प्रेम के प्रेमी वियोगीजी ने कहीं ''सावित्री'' का उल्लेख नहीं किया है। जबकि भारतीय त्योंहारों में ''वट सावित्री''' व्रत की अहं भूमिका है। पम्मी के कैंसर ग्रस्त पीड़ा काल के संवाद ''सत्यवान–सावित्री से कम नहीं होंगे?

जीवन और प्रकृति के छोटे से छोटे संवाद, वैचारिकता, घटना या स्थिति के साक्षी कुंवर वियोगी यदि प्रभावित हुऐ हों तो उनके चौकन्नेपन और विलक्षण स्मृति से सहज ही काव्य रूपों में चित्रित हो जाते थे। गद्य और काव्य की कोई भी विधा या भाषा कभी बाधा नहीं बनी है। लगता है कि उनके पास कोई ऐसा लैंस था जिससे छोटी अनूभुति को बड़ी और दूर की चीज पास ले आते थे। एक बार पढ़ी सरल चीज में छुपे अर्थ खुलने लगते हैं। उनकी रचना को दो बार पाठ की आवश्यकता होती है। एक बार उन तक पहुंचने के लिये और फिर व्यक्ति से उनकी रचना संसार में आने के लिऐ।

कुंवर वियोगी ने परम परमात्मा को कई नामों से संबोधित किया है..... परमात्मा, ईश्वर, शिव, अल्लाह, God,वैष्णव देवी, विदना माता..... भी किया है।

कुंवर वियोगी स्वांतसुखाय के लिये ही लिखते थे। उनका लेखन व अभिव्यक्ति, आत्मसंवांद या आत्माभिव्यक्ति है। इसी लिये उन्होने कहा था कि यदि 'मुझे जानना हो तो मेरा लेखन पढ़ो', तब मुझे पूरा जानोगी । उनका आत्मिक संसार बाह्य संसार से अलग था। शायद इसलिये ही अपनी आत्माभिव्यक्ति को सार्वजनिक करने का विशेष उत्साह नहीं था। अधिकतर कवि या लेखक अपनी रचना को दूसरों के साथ शेयर करते हैं– स्वीकृति ओर वाह वाही के लिये। इतने सालों में कभी आगे होकर अपनी रचना दूसरों को सुनाते नहीं देखा। कभी रचना के बहुत अच्छी बनने पर बतलाते थे। अधिकतर मैं ही रचनाओं के बारे में पुछती थी, तब एक–एक शब्द को समझाते ,पूरा अर्थ बतलाते थे। कई बार उनके मन में छुपी पीड़ा का अनुभव होता था, पूछने पर कहते–– विचार ,शब्द–धारा में बह जाते हैं।

विस्तार.....

गद्य से लेकर पद्य लेखन का क्षेत्र विस्तार प्रेम–श्रृंगार, मिलन–विछोह, दुःख–सुख, दया–दैन्य, श्रम से पस्त जीवन, टूटती आकांक्षायें, समाज की क्रूर व्यवस्था, पाखण्ड, रिश्तों के प्रति विश्वास और प्रकृति के समस्त उपादानों पर न्योछावर, जन्मभूमि, रणभूमि, कर्मभूमि, गीता से रामायण, बुद्ध के अष्टांग मार्ग, ईश्वर से प्रार्थना–मजाक, मृत्यु के पार झांकने का प्रयास आदि की सरल–सहज अभिव्यक्ति ही हुई है। जीवन की साधारण चीजें ही असाधारण हो गयी हैं। 'श्रम' ही जीवन है– वह श्रम शारीरिक या मानसिक होवे, श्रम की महत्ता हमेशा रही है।

वियोगीजी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु अनेक विधाओं में प्रयोग किये। अँग्रेजी में कविता और सॉनेट, कहानी, फीचर लेखन, पुस्तक समीक्षा के साथ कुंडलियां, गजल, शेर, दार्शनिक व आध्यात्मिक विचार, में भी प्रयोग किया है ।

डोगरी में सॉनेट, कविता, गजल, रूबाइयां, कुंडलियां, शेर, दोहा, चुसमुसा, कहानियां, निबंध, उपन्यास, पुस्तक समीक्षा, दार्शनिक व आध्यात्मिक विचार, में भी प्रयोग किये हैं ।
हिन्दी और उर्दू में भी ग़ज़ल, शेर, कविता, कहानी विधा में लिखा है।

उर्दू भाषी राज्य में रहने वाले के लिये ग़ज़ल– शेर में प्रयोग, कठिन नहीं होता पर कविता, रूबाई, गीत, दोहा, कुंडलीयां, चुसमुसा आदि प्रयोग के साथ शब्द यात्रा रूकी नहीं। डोगरी में अँग्रेजी विधा ''सॉनेट'' का डोगरी में प्रयोग प्रथम और महत्वपूर्ण रहा है। इस प्रयोग ने कुंवर वियोगी को डोगरी साहित्य में अमर कर दिया है। शायद अभी तक डोगरी में इतनी विधाओं में किसी ने भी लेखन नहीं किया है जितना कुंवर वियोगी ने किया है।

1. कुंवर वियोगी के विचार संसार में कई शब्द बार–बार आये हैं, जैसे...

प्रेम, प्यार, पीड़ा, अकेलापन, पखेरू, रूक्ख, लौकिक–अलौकिक प्रेम, आघ्यात्मिक चेतना, फूल, विरह, मिलन, आनंद–सुख–दुःख, बाह्य चेतना से जुड़ा जीवन और आंतरिक चेतन संसार से बद्ध आत्मा.

2. कुंवर वियोगी के विचार संसार में कई नये शब्दों का सृजन हुआ है।

''जीवित चाबियों'', ''जिन्दे तालों'', ग्रह–पथ, मिथुन मरजी, मिथुन मौसम, सफेदपोश गरीबी, कंजरी यादें.....

3. बहुत ही कोमल, हृदयस्पर्शी, द्वि–अर्थी, प्रचलित अर्थ व आघ्यात्मिक अर्थ में प्रयुक्त

शब्द.... पखेरू... प्राण/आत्मा/ पक्षी

रूक्ख..... मनुष्य/ पेड़ आदि

कई बार भीड़ में भी अकेला होना, मन को सालता है। अकेलेपन का अहसास बाल्यावस्था से ही साथ रहा था, यह पीड़ा हमेशा मन को सालती थी। इस पीड़ा की पीड़ा से ही कई भावों का जन्म हुआ और पीड़ा शब्दों में उतर गया। पीड़ा ने अन्तर्मुखी बनाया वहीं पेशे ने बहिर्मुखी बनाया। संयम–संकोच, दार्शनिक सोच, करुणा, विद्रोह का सूक्ष्म चित्रण किया है। व्यक्तिप्रधान अभिव्यक्ति – अहं का विस्तार होता है। चुनौतियों को स्वीकार करना, सकारात्मक जुनून, जहां सफलता देता है, वहीं अकेलेपन में भी वृद्धि होती है।

इतने वृहत विस्तार में लेखन अवश्य ही स्मृतियों में घुमाता है, जो रेखाचित्र– सस्मरण, गद्य–पद्य दौनों में अभिव्यक्त होता है।

रचना काल..... लगभग 1952 से ही विद्यालय जीवन से लिखना आरंभ किया था जो 2015 तक, लगभग 64 वर्ष निरंतर चलता रहा। 1992 से 2015 तक नियमित 'पते दी गल्ल' डोगरी टाइम्स के लिये लिखते रहे। आरंभ से डोगरी टाइम्स को बनाये रखने के लिये अपनी रचनाओं, चित्रों, व्यंग्य चित्रों से और अन्य रचनाकारों को प्रोत्साहित करते रहे, जो अभी तक चल रहा है।

रचनायें.....

1. अँग्रेजी में.... वियोगी जी ने लगभग 365 सानेट्स, 131कविताऐं , 16 रूबाईयां, 5कहानियां, 100 फीचर लेखन, 6पुस्तक समीक्षा के साथ 11कुंडलियां, 11 ग़ज़ल, 9शेर, 153 दार्शनिक व आध्यात्मिक विचार

2. डोगरी में..... लगभग 1330 सॉनेट्स, 575कविता, 500गजल, 22निबंध, 840रूबाईयां, 4कुंडलियां, 1000शेर, 3 दोहे, 2चुसमुसे, 20कहानियां, 6उपन्यास, 6पुस्तक समीक्षा, 200 दार्शनिक व आध्यात्मिक विचार,

जानकारी के अनुसार अँग्रेजी में अधिकतम 520 सानेटस् लिखी गयीं है परन्तु वियोगी जी ने 365 + 1338 = 1703 सानेट्स लिखे हैं जो अपने आप में बेजोड़ है, साथ ही यह सानेट लेखन दो भाषाओं (अँग्रेजी और डोगरी) में है।दोनों भाषाओं में सानेट के विषय भिन्न हैं व अनुवाद नहीं है।

अभिव्यक्ति.....

वियोगी जी के अनुसार परमात्मा से ही विचार लयबद्ध हो अवतरित होते हैं। ''वे'' तो मात्र– पूरने हेतु माध्यम हैं। अभिव्यक्ति हेतु भाषायें मात्र साधन रहीं हैं।

मन विचारों का स्रोत है, भूत–भविष्य–वर्तमान में विचरण करने वाला मन, अपने विचारों के माध्यम से यात्रा करता रहता है। चुभने वाली या अलभ्य चीजें, कामनाऐं जगाती है और बुद्धि अपनी चौकीदारी का घर्म निबाहते– सीमांयें बनाती है। यही दुःख–सुख, पीड़ा– अकेलापन, संकोच आदि को विस्तार देता है।

विचारों को शब्दों से व्यक्त किया जाता है। शब्द संकेतों से ही भाषा बनती है। कई भाषाओं को जानने वालों के पास शब्द संकेतों के भण्डार में वृद्धि होती रहती है। अभिव्यक्ति हेतु ये शब्द–संकेत, भाषाओं की सीमा लांध देते है और रचनाकार एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवेश कर जाता है ओर मालूम ही नहीं होता है। बहुत ही सहजता, सरलता से अनेक भाषाओं के शब्द संकेतों से अभिव्यक्ति हो जाती है। वियोगी जी उर्दू, डोगरी,

अँग्रेजी, हिन्दी भाषाओं के अच्छे जानकार होने से गद्य–पद्य में अभिव्यक्ति, शब्द–संकेतों की मोहताज नहीं रहती है। हिन्दी व अँग्रेजी में समृद्ध शब्द भंडार होने से कभी कठिनाई नहीं हुई।

डोगरी में अभिव्यक्ति, मातृभाषा होने से कोई दिक्कत नहीं थी पर डोगरी लिपि में लगातार बदलाव और यायावरी जीवन होने से ,उनकी डोगरी लिपि, वर्तमान डोगरी लिपि से पूरी मेल नहीं खाती है। पर विचारों, भावों की उत्ताल तरंगों के समक्ष, लिपि आड़े नहीं आती है। सीधे पाठक को उद्वेलित कर देती है, उसके हृदय तक पैठ जमाती है। कबीर को लिखने पढ़ने का ज्ञान न होने पर भी वे महान रचनाओं के रचयिता हैं।
डोगरी का भविष्य कमजोर देखकर ही अधिकतर लेखन डोगरी में है। अपनी पुरस्कार राशि भी बगैर दूसरी बार सोचे, डोगरी संस्था को भेंट कर दी थी। जीवनपर्यंत डोगरी के उत्थान हेतु कार्य करते रहे।

डुग्गर दी दुरदशा निं नमें हेरूयें दा दोष,
दोष ऐ तां ए ऐ उन्दे पैरूयें दा दोष।

वियोगी जी को भाषा के अलंकारों का विशेष ज्ञान नहीं था। शब्द और अर्थों में प्रतीकों, उपमा, उपमेय, उपमान, मात्राओं पर भी ध्यान नहीं था, पर विचार प्रवाह के प्रचण्ड प्रवाह की अभिव्यक्ति, लयबद्ध होते–होते स्वतः ही अपने आपको संवार लेती है। वियोगी जी को गीता, रामायण, जिब्रान, शैक्सपीयर पढ़ते थोड़ा तो ज्ञान हुआ होगा पर हिन्दी भाषा के छंद, अलंकारों की विशेष जानकारी नहीं थी। पर तब भी शब्द, प्रतीकों से खेले हैं। कबीर ने भी शब्दों के दो अर्थों का सहज–प्रभावी प्रयोग किया है।

प्रारभं में समय–अर्थ–सुविधा का अभाव रहा। बाद में भी प्रकाशित करवाने के लिये विशेष उत्साह नहीं रहा। उनका सारा लेखन , रोज के बहीखातों का ब्यौरा है। इसलिये जब छपवाने के लिये राजी हुए तो – नाम रखा–– ''वियोगी दी ब्याजा''। कुवंर वियोगी जी ने अपनी सम्पूर्ण रचनाओं को चुनकर

एक ही पुस्तक, '' वियोगी दी ब्याजा'' मे रखना चाहा, पर सामग्री की अधिकता से अपनी ब्याज को कुछ वाल्यूम में रखने को राजी हुए। पर यह उत्साह–उद्देश्य, जुनून में नहीं बदला और समय की रेत हाथ से फिसलती गयी।

"कुंवर वियोगी" दी ब्याज पढ़िए लोक ए सोचन
सुगंधी एहदे चा रणधीर सिंह जन ऐ आवै दी

मेरी व्याजै दी कताबत करियै आखदा कातब,
तोबा! तेबा! एह् ते पच्छोताएं दा पुलन्दा ऐ।

मलतूयत

नमीं कपोई दी टाह्ली दे सैल्ले पत्तरें आंगर,
हकीकता थमां खिंडी दी ऐ मनोदशा मेरी।
खुशखत लेकन बेमतलब लिखे दे अक्खरें आंगर,
मैह्सून होआ निं करदी ऐ हालत मेरे शा मेरी।
तिरे मरने परैन्त यारें–बेल्लिएं दी आमद नैं,
मिरे शा, मेरे नुकसानै गी ऐ छपैली रक्खे दा।
रिश्तेदारें दी हमदर्दी, बच्चें दी खशामद नैं,
मिरे अन्दरूनी ज़लज़ले गी ऐ संभाली रक्खे दा।
चिर ऐ रिश्तेदारें, यारें–बेल्लिएं दे जाने दा,
मिरे नुकसानै दा विकरालमा वजूद होना ऐ।
ध्यान अपने–आपै च जदूं होना ञ्यानें दा,
में ज़लज़लें दै मूजब नीस्तोनाबूद होना ऐ।
खुशखत अक्खरें प्रसंगहीन मूढ़ होना ऐ
ते सैल्ले पत्तरें अखीर कूड़म–कूड़ होना ऐ।

लगभग 64 वर्षों के साहित्यिक जीवन में लिखित सामग्री बहुत अधिक है। रजिस्टर, डायरियां, फाईलें, आदि भी लगभग 70 हैं। अधिकतर पेंसिल से लिखें हुए हैं कारण, पैंसिल की हर वक्त उपलब्धता। जो समय के साथ धुंधली होती जा रही है। एक ही पेज पर भिन्न भाषाओं में, भिन्न विधाओं में लेखन को

, विधावार क्रमवार छांटना थोड़ा कठिन कार्य था। सामग्री की अधिकता भी कठिनाई बढ़ा रही थी।
रजिस्टर–डायरियों के कागज भी जीर्ण–शीर्ण होने लगे हैं।

कुवंर वियोगी जी ने अपनी लिखित सामग्री –अभिव्यक्ति से अर्थाजन नहीं करना चाहा। इसलिये उनका सारा साहित्य निःशुल्क है।

41-- रणधीर हमेशा अपने काम में तल्लीन रहते थे। जो भी काम करते पूरी मेहनत से करते थे। नौकरी, समय, बच्चों की कोचिंग करते समय या लेख लिखते समय हमेशा पूरा ध्यान अपने काम पर रखते थे। एक वक्त में एक ही काम करने के आदी थे। जीवन संघर्ष में कई बार असफल होने पर पुनः पूरा विश्लेषण करते और दुगुने उत्साह से जुट जाते। परिवार के पालन–पोषण में बहुत कठिनाईयों, अवरोधों, असहमतियों का धीरज से सामना किया और लक्ष्य पूरा होने तक लगे रहते।सभी को सफल इन्सान बनाया।बच्चों के साथ भी कोचिंग के पैसे मात्र बंधन के लिये थे। नहीं तो योग्य छात्र के पूरा तैयार होने तक लगे रहते। धीरज भरा आश्वासन,अभयदान देने वाली कठोर पर

मधुर और पक्के इरादे वाली कोचिंग से छात्र अपने रास्ते से डिग नहीं पाता था। शान्त ब्राह्म मुहूर्त में लेखन पूरी तल्लीनता से करते थे। उस समय ताजगी से विचार सकारात्मक और उपजाऊ होते हैं। समस्याओं का हल भी साथ ही खोजते जाते। हर काम को पूर्ण लगन और ध्यान से करना ही उनका मेडिटेशन था। संगीत, जैसे ''घ्यानावस्था'' में लेजाता है उसी तरह लेखन भी घ्यानावस्था में लेजाता था। अपने सॉनेट में लिखा है....

पूरने–1
परमातमा ने गीत मीं दित्ते हे पाइयै पूरने,
मेरा सिर्फ उ'दे उप्पर लिखने दा प्रयास हा।
लेकन खुशख़ती गी अपनी समझियै बतूरने
जज़्बातें मेरे सोचेआ अपना इसी सरयास हा।

भामें बुद्धीजीवियें, लखारियें बड़ें–बड़ें
आखेआ ते मन्नेआ इ'नेंगी खास–उल–खास हा
ते इ'नेंगी बिन पढ़े–लिखे दे अनपढ़े
खरदोई दी अलोचनें च आखेआ बकवास हा

ते कसीदा–ख्वानी दी लफ़्फ़ाज़ी बुराइयें मुजूं,
दोगले समाजै दा मन होआ हताश हा
मानसक तुच्छें मुजूं ते भोगी गैह्राइयें मुजूं
इक धड़ा हा दाद गरोह् दूआ अति नराश हा

पर मिगी परमातमा दे पूरने पाए पर एह्सास हा
ते मीं अपनी थबीकें ते कमियें दा एह्सास हा

वियोगी जी– उस परम शक्तिमान ईश्वर की खोज में बहुत प्रयत्न किए, बहुत दुखी, परेशान हो रोये भी पर निराशा ही हाथ लगी– तो उस ईश्वर को छोड़ फिर सांसारिक जीवन में आ गए। घर

लौटते दरवाजे पर एक प्रकाशित आकृति दिखी और इस तरह ईश्वर में ईश्वर की आहुति दी गयी।.....

AT THE DOOR STEP

I reached in every corner, far and wide.
In nook and brook; in valley; hill and dale
All manners of comment and spiteful snide
I bore and in the process learnt the tale.
That once upon a time "Viyogi" lived
In,ever -widening search of the true Lord.
And all exhausted fell and wept and grieved,
But could not- His true countenance behold.
And in that state of mind and body turned
His back on Him and came to live in world.
But while approaching homeward he discerned
A shining figure all divine unfurled.
So at His doorstep, standing near His gate,
He met the king and met a kingly fate.

हिल्ला करदा ऐ बूटे दा पत्ता–पत्ता ,
टालियें शा खिंडया निं अलबत्ता पत्ता।
मेरी ब्याजा दे हर पढ़ने बिच लब्बग,
जेड़ा मी दित्ता हा उनें पहल मी झत्ता–पत्ता।
जीन्दे होने दी खुशफहमी लीन ऐ हाल्ली,
नमीं कपोई दी टैहनी दा पत्ता–पत्ता।
पीला–पीला ऐ खुश रुख, सुखत्ता पत्ता।

पेड़ का हिलता पत्ता पत्ता
टहनी से अलग होता पत्ता।
मेरी बयाज के हर पन्ने में दिखता,
जो पहली मुलाकात में मुझे दिया पत्ता।
जीवित होने की खुशफहमी में लीन,
नई कपोई की टहनी का पत्ता–पत्ता।
सुखता पीला पत्ता खुश है, रूख भी

रणधीर के साथ एक बार ऐसे ही कुछ बात की थी, उसका भावार्थ बतलाया था कि पेड़ से टूटा पीला पत्ता यह सोचकर खुश है कि पेड़ पर फिर नया जीवन आया है। संसार ऐसे ही चलता है.... अपने प्रिय से पहली मुलाकात में किये–दिये वादों से भरी ज़िंदगी को दिये पत्तों को 'बयाज' के हर पन्नें पर पढ़ा जा सकतां हैं। मै , सूखता पत्ता, खुश हूं कि नई कोपलों पर फिर नये पत्ते आये हैं।

प्राणी कल्लै औन्दे न ते प्राणी कल्लै जन्दे न,
छड़ा जिसमें दा होना गै उनें गी फिट्टे करदा ऐ।

ते ऐ आतम–मिलन शरीर की करिशमें बनदे न,
शरीरे दा मिलन गै कौड़े जीवन मिट्ठे करदा ऐ।

''वियोगी आतमा गी मोथे दे अरसा होआ ऐ पर,
जिसम बट्टा समे दी ढाला मूजब रिढ़का करदा ऐ।

दुक्खात दा बयान ऐ केह् एह्दे शा बेह्तर
जे अंजू बनियै अक्खीं च लहू ना दा ऐ।

'वियोगी' दी गज़लें दी बी 'लोथल' बनी नी जा
तां सामनै लोकें दै इनें गी करा दा ऐ।

रूक्ख–उपदेश

इक तगड़े रूक्खा गी मोह् इन्ना होया पत्तरें कन्नै
जे उस गी मोह रेहा निं विन्द बी अपनी जड़ें कन्नै
ओ सैले पत्तरें गी इष्ट देवता बनाई ऐठा
ते लीन पत्तरें च होईयै जड़ेंगी भुलाई ऐ ठा

जड़ां भुलाईयै ओ लग्ग रेहा पत्तर बधाने च
सकार रूया गी घनेरमा घना बनाने च
जमाने गी छवी जद रूक्खा दी हर–भरी लग्गी

तां उस गी उसदी घनेरमी झौंगर खरी लग्गी

सफीर पक्खरूयें गी बी घनेरी छां खरी लग्गी
खरै ससताने ताई गुयतता ही तां खरी लग्गी
गुआडी रूक्खें अपने रूक्खियें गी दित्तियां मत्तां
तुस बी तगड़े रूक्खा आलियां जे फगड़गें बत्तां

तां खूब पौंगरंगे ते झोगरगे बनशामें होई जागे
रूक्ख जातिया दे सरगने सिरनामें होई जागे
तरीफां सुनिऐ तगड़ा रूक्ख आपे च समान्दा निं
ते सौचै जे कुसैगी ओहदे आंगु जीन औन्दानिं

प इक टुड़–मुन्ड सुक्के दे रूक्खै नै घबराईयै ऐ
तगड़े रूक्खा गी ए सिक्ख–मित दिती गरड़ाईऐ
दरूसत ऐ जे पत्तर रूक्ख जाती दा पैहनावा न
रूक्खी सिरजना दा दिल फरेवाना दखावा न

गुआड़ रूक्खें दा पत्तर गैं आं उजागर करदे न
तफीका शा मते होईऐ जड़ां पर लांगर करदे न
जड़ें आप बधाईऐ दूर डूगें पुज्ज ना पौन्दा
जुआन पत्तरें ताईं जिमी सत सीकना पौन्दा

प इस बधो बधाई च इक गल्ल होर होन्दी ऐ
जड़े दी कासमी जिमीं–पकड़ कमजोर होन्दी ऐ
प तगड़ें रूकखै नै सुनी निं इक्क सुक्के रूक्खा दी
उसी आखै मीं छोड़ सोच अपनी विरद भुक्खा दी

जड़ें दा कम्म ऐ सेवा उनें गी सेवा करन दे
अगर ए करदे भ्मरदियां न तां फी मरन दे
भला पत्तर प्रेमी नै उनें गी चित्तना कैल्ली
जेहदा कम्म सींचना उसेंगी सीचना कैल्ली
जिड़ें नि झौंगरें पूरे उने केह मीं सखाना ऐ
मिरे पत्तर जुगा गी दाद देआ दा जमाना ऐ
बुडखर रूक्ख चुप्प होईआ पर नर्थ ऐ घटया
जे इक्क काला अन्धड़ रक्खें वक्खी तेजी नै वधया

ते उन्दै विच आईऐ झुनकया घड़ी क रूक्खें गी
डराई ओडया उस मेरूयें गी ते मनुखें गी?
तं नै उसकी जद लग्गा हा झडका तगडा अंधड़ दा
जड़ें छा पुटिटये इसी होआ रूख आडा अंधड दा
तगड़ें रूक्खा दा हा पत्तर भार बेकथका भारा
जडों कमजोर कमजोर हियां साम्भया गया निं झुनकारा

KV

पखेरू फुर कीते दे उडडी गे
तलेहडू दाद–गोह जमाने आल्ला साथ छड्डी गे
असमतल चाह बरोबर होन्दे न बड़े बडे आल्ले
ते रूक्ख बखशदी ऐ कुदरत बी तगड़ी जड़ें आल्ले
कुन्नै मोलोमाल कीता एह सुनागे फी कुदै
सुत्ते दे न झूक चेतें गी जगागे फी कुदै
ईआं दिखदे रौहगयो तां दोष तुन्दा गै गनोग
पलचङन जे साढ़िये नजरें दे धागे फी कुदै
सामनै, सारे दै पुच्छो निं मिगी दिला दी गल्ल
तुस ओ भुल्लनहार सुनियै भुल्ली जागे फी कुदै *KV*

लावा

शुरुआत होई तां उस बेल्लै,
भाव–छो आला कोमल हा,
रफतार मनै दी मट्ठी ही,
जीने दा सुआतम शीतल हा।
पर दनाक उवड़े होंदे गै,
मीं पे आ सुआद बुआल्लें दा,
ते जे में लेई लैग्गा,
सम्पूरन नंद ज्वाल्लें दा।
ते सेकें बी चाहने आल्ले
हमराही, मिगी अनेक मिले,
ते एहदै फलसरुप मिगी,
भांती–भांती दे सेक मिले
उंदे ने कौल करार होये,
ज्वाला मुखियें तक जाने दे,
सौखें विच किट्ठे रौह्ने दे,

आखे विच साथ न भाने दे।
पर ज्वाला मुखी तक पुज्जने शा,
पैह्लें गै साथी मुड़ी गये,
ते लाईयै चसका सेकौ दा
मीं कल्ल–मकुक्कला छुड़ी गये।
हुन जीने दा केह ढंग करां ?
अपने आपै गी पुच्छां नां,
ता, ज्वाला मुखी दी लावे च,
धलदा धलदा में सोचां ना।
नां शीतलता दी जाच रेही
नां उब्बलने च नंद रेहा,
नं सम्भवता परतोने दी,
नां रौहने दा परबंध रेहा
एह्दे शा बेह्तर ऐ च धलियै,
लावे बिच लावा होई जां में,
ते आपूं अपने आपे दे,
होने दा मदावा होई जां में।

ऐसा करार निसो

अफलातूनी तमद्दना इच्च लोको
गीत कारें गितै पाये ते थ्हार निसो
गीत लिखना में हिरखा मस्तियें दे
होर कोई बी कारी दी कार निसो
गल्ल बक्खरी ऐ मेरी लिखा–पढ़ी
इक्क पूजा ऐ ते रोजगार निसो
रूट्टी खाने गितै फौजी बनेदा में
इस मैहकमे नै मिगी प्यार निसो
गाही ओड़े आ दुनियां कोना कोना
कुसा थ्हार बी इदा इनकार निसो
अमल बाटे संगीता दे अमला दै
पायेदार निसो मजेदार निसो
जैसा थ्होंदा ऐ फी शब्द कारियें च
कुसा कम्मा च ऐसा करार निसो
शान–बीन कारो आपूं दिकखो लोको
मेरी गल्लें दा अगर तवार निसो

सादा–सादा गल्ल

1
ए लोक जीने मरने गी कवल्ला मामला आखन
ते जेड़ी सादा सादा गल्ल उसी गी फलसफा आखन
जेड़ा करमें ने थोये दा ऊए जीवन लन्गाना ऐ
ए सारा पिछले जन्मा दा नमाना तानावाना ऐ
पर जून आनी जेकी ऐ उसी चन्गा वनाना ऐ
निरन्तर चलदा रौना ऐ पी साड़ा आना आना ऐ
होनी मेशा ओन्दी ए ते एना ओई जाना ऐ
ते विदना दी लिखी होनी गी लोक हादसा आखन
ए लोक जीने मरने गी कव्वला मामला आखन
ते जेड़ी सादा सादा गल्ल उसी गी फलसफा आखन

2
रिशते जाते पाते दे वड़े पक्के गै जोड़न ए
जेड़े जन्म नैं दित्ते ओ रिशते कियां त्रोड़न ए
ते अरजन साथी अपनां कम इन्दे ताईं छोड़न ए
श्रृष्टी रूप की भुलदे मड़े मत्तूं पी फौरन ए
ते छेकड़ खाली रसमें नें अपनी जिन्द टोरन ए
ते जेड़ा समझ नी आन्दा उसी ए ओपरा आखन
ए लोक जीने मरने गी कवल्ला मामला आखन
ते जेड़ी सादा सादा गल्ल उसी गी फलसफा आखन

3
जेड़ा उसनै गलाया हा ते गीता च पढ़ाया हा
जियां भुल्ले गुआचे अरजना गी रस्तै लाया हा
जेड़ा अरजन दी नजरी जिन्दगी दा रूप आया हा
जियां अरजन उनें निरभै ते निरमोह बनाया हा
उए पुरखें शा पुरखें सिखिए सारै सखाया हा
ते इसगी इक्क कुसै लखारिया दा वलवला आखन
ए लोक जीने मरने गी कव्वला मामला आखन
तेजेड़ी सादा सादा गल्ल उसगी फलसफा आखन

4
में आखां जेड़ी लट लाई उसी पूरा करी छोड़ो
मनां शा दूर हर हासा ते हर झूरा करी छोड़ो
कवासी लालसा गी पन्निऐ चूरा करी छोड़ो
मना दे डर ते सन्देह सव कूड़ा करी छोड़ो

वस इक्क रन्ग फरजा दा छड़ा गूड़ा करी छोड़ो
पर मेरी डूगी गल्लें गी ए मूड़ खोखला आखन
ए लोक जीन मरने गी कवल्ला मामला आखन
ते जेड़ी सादा सादा गल्ल उसगी फलसफा आखन

5

"वयोगी" छोड़ ए रगड़े तूं अपनी वत्त साम्वीलै
पी जिन्नी आम्व ए तेरी तूं उन्नी आम्व आम्वी लै
चन्गा ए जे सौखी ऐ औखी ऐ सों वी लै
चली चली अपने आपा च पाये थोड़ी वसावी लै
ते दुनिया जो देया चन्गा मतां वी लै देनी वी लै
फिकर करेयां नी जे आखन पागलायां वावला आखना
ए लोक जीने मरने गी कवल्ला मामला आखन
ते जेड़ी सादा सादा गल्ल उसगी फलसफा आखन

6

ते जेड़ा समझें कच्छा/कशा दूर ओका सिलसला आखन
मगर में गल्ल नी मनदा पायें ए सौ दफा आखन
मिगी विश्वास ए जो आखदे ओ वेवजह आखन
में ताई एं आखदा नी की के मीं नी चुलवुला आखन
ए इक्क आखदे नीं इक्क गी मेशा स्वा आखन
ए लोक जीने मरने गी कवल्ला मामला आखन
ते जेड़ी सादा सादा गल्ल उसगी फलसफा आखन XV

सील स्वातम

मेरी खो ऐ गुम–सुम रौह्ने दी
जीवन दे रूक्खा दै चल्लै
इस रूक्खा दी परछाईं ऐ
इत्थें भी थार ऐ बौह्ने तैं
ए थार गै मेरे ताई ऐ
नां ईखी टीसी बौह्ने दी
नां टालें ने पलमोने दी–मेरी खो ऐ गुप चुप रौह्ने दी
में गुप चुप आभा हा इत्थें
ते गुप चुप खीर मुड़ी जाना
में छुपली छुपली टोरा नें
बिन बोले चुप टुरी जाना
कोई आस निं अम्बर छोने दी

नां कुसा रे मैरे पौने दी–मेरी खो ऐ गुप चुप रौह्ने दी
में जूल लग्गानी ऐ ऐसी
जित्थें कोई शोर छड़ापा निं
कोई हवस निं विन्द भी शोह्रत दी
किश वखलापन आँ आपा निं
नां लोड़ऐ दर दर होने दी
नां वेइयै रोने–धोने– मेरी खोह ऐ गुप चुप रौह्ने दी
मेरा समतल सहज स्वातम ऐ
मेरी जिन्दु विच्च कोई वलवा निं
ते कुसै कच्च जी वासा दा
मेरे मगजा उप्पर गलवा निं
नां वजह दुखी कोई होने दी
नां लोड़ ऐ जादू टूने दी–मेरी खो ऐ गुम सुम रौह्ने दी

नसीयत

मड़ा तूं ऐ में जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दे जीने ताईं इन्नीं खेचल की करा करना
1
वड़ी गै धूड़ मिट्टी जिन्दु विच्च अन्धी झखड़ ऐ
नरासा वालदी मे दै विच्च ऐसा पाम्वड़ ऐ
वगी जन्दा ऐ तेजधार कन्डा इरख छेकड़ ऐ
ते ईखी पाई दिन्दी जिन्दगी च खूव रफड़ ऐ
तूं रोन्दूँ गीतें कन्नें काले काकल की करा करना
मनां तूं ऐमे जानां भाव चंचल की करा करनां
घड़ी दे जीने तांईं इन्नीं खेचल की करा करनां
2
भी ओना के ऐ मेरी अज्ज ऐसी अख फरका दी
ते चज्जल जिन्दूड़ी मेरी ऐ किश करने शा ज़रका दी
इसी परवाह ए नी सो कुसा ताने यां तरका दी
ए जीन्दे जी चली पैई ऐ पौन कैसी नरका दी
दना ते थौ कर वेथौ अज्जल की करा करना
मनां तूं एमें जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दे जीनें ताईं इन्नी खेचल की करा करना
3

खतोले पाये दे इन्नें तूं किस लेई न जिन्दु च
जे गैरत विन्द नी रैई दी मेरी सोहल किन्दु च
समें री पीड़ सारी वैई गई रूहा दे विन्दु च
ते खौदल भी पैई गई दी ऐ गन्गा ते सिन्दु च
नकम्में भय न तेरे इन्नी हलचल की करां करनां
मनां तूं ऐमे जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी ते जीने ताईं इन्नीं खेचल की करा करनां

4

नजर नीं फेर जाना कुद्धर ऐ मौती शा नट्ठी ऐ
ए मन्जल खीर जीने दी वड़ी पक्की ए हट्ठी ऐ
मना च पैई दी कच्ची कुलै नी नट्ठो नट्टी ऐ
डरा दा जीन कच्चा ते कच्चजी टट्ठो टट्ठी ऐ
में मन्नां नां जे पीड़ं पायें अज्ज मट्ठी मट्ठी ऐ
अगर कोई साम्व नी कीती आई जानी भी कट्ठी ऐ
नकारे खौफें कन्नें जीन खज्जल की करा करनां
मना तूं ऐमें जानी भाव चंचल की करा करनां
घड़ी दै जीने ताईं इन्नीं खेचल की करा करनां

5

तूई ते जहान थोये दा भी आगल कोकी चूका दी
तुगी के थोड़ ऐ कोकी ऐ तुक्की अग्ग फूका दी
की गै सरवनासी जिन्द तेरी हूक हूका दी
वडूंनौ दिख कोयल वे मुआरी कूक कूका दी
खुशी दे टन्गें गी नजरू शा ओजल की करा करना
मनां तूं ऐमे जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दे जीने ताई इन्नी खेचल की करा करना

6

नदान की वनां ना चित्त फिक्का की करा करना
ए निक्की जिन्दड़ी ए दिल तूं निक्का की करा करना
कवासें शक्के ने भी तिक्कम तिक्का की करा करना
मना पर हावी अपने इन्दा सिक्का की करा करना
ते वो फल आवला गी ओर वो फल की करा करनां
मनां तूं ऐमें जानी भाव चंचल की करां करनां
घड़ी दे जीने ताई इन्नीं खेचल की करा करनां

7

समीन्दा की नीं ओर ओर ओर की करा करनां

विना मतलव दै इन्नां जैदे शोर की करा करनां
कुआस घुन्गले अपने कठोर की करा करना
करैखी की ऐ चाड़ी दी ए तौर की करा करना
ते सज्जर भाव की नातें गी पागल की करा करना
मना तूं ऐमे जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दै जीने ताईं इन्नी खेचल की करा करना

8

धरे दा अपने सायें गी गला तूं कोदै गोचर ऐ
अयें ते मेल ओने च वड़ा चिर ऐ वड़ा चिर ऐ
गमें दी तड़फो तड़फी लग्गी दी रौन्दी भी उच्चर ऐ
दिला गी वेवसाई अपना उप्पर रौन्दी जिच्चर ऐ
जेड़े खिन तेरै ऐ नी उन्दी आगल की करा करना
मना तूं ऐमे जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दे जीने ताईं इन्नी खेचल की करा करना

9

सलोनी जिन्दड़ी ऐ तूं कोलाहल की करा करनां
ते साम धाम, खज्जल जिन्द चज्जल की करा करना
ते मैली आगले ने मैली अज्जल की करा करना
ते सोनी अखियें दा डीन्ग कज्जल की करा करना
अथाह ईखियें गी थाह मैकावल की करा करना
मना तूं ऐ में जानी भाव चंचल की करा करनां
घड़ी दे जीने ताई इन्नी खेचल की करा करना

10

दिला दै विच्च कौड़े भाव दाखल की करा करना
ते सुच्चे सुन्ने अन्दर खोट शामल की करा करना
तूं साफ जिन्दड़ी च वह्क खौदल की करा करना
वगाईए अथरूं मुकते तूं दलदल की करा करना
मगर गी दस्स हां ए सव तूं अक्ल की करा करना
मना तूं ऐ मे जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दे जीने ताई इन्नी खेचल की करा करना

11

भयंकर–वेसुरे घवरा दी अड़दल की करा करना
मलैम मोह भरे चित्ता गी ब्याकल की करा करना
वड़ा सिद्धा ऐ जीन इसगी गुन्जल की करा करना
टकोदा साव ऐ जीने दा पल पल की करा करना

डरें ने जीना अपना खाक विलकुल की करा करना
मना तूं ऐमे जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दे जीने ताईं इन्नीं खेचल की करा करना
12
में ठाकां नां तूं कर नी ए मगर फी वी करा करना
मेरी गल्ल की नैईं मनदा ते मन मरजी करा करना
नखिदी रन्जशें गौ वेथवा हावी करा करना
करा करनां एं तूं ए लेकन ए तूं की करा करना
विना मतलव दिला गी तूं मड़ा अड़ियल करा करना
मना तूं ऐ में जानी भाव चंचल की करा करना
घड़ी दे जीने ताईं इन्नीं खेचल की करा करना *KV*

–काग़जी रिशते–

1.
में जमाना दिक्खेया– ए दा य़राना दिक्खेया
महरमे दा महरमे गी में मटाना दिक्खेया

2.
सव खुशी दे यार न– किन्नें खुशी च प्यार न
ते खुशी ने जान वी देने गितै त्यार न
पर दना मुशकल ने ए ओन्दे जदूं दो चार न
य़ार वी ते प्यार वी करदा वहाना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

3.
में मती दौलत कमां तां सारे दा मित्तर वनां
पर जदूं निरधन ओआ तां पैरें दा छित्तर बनां
ते खडाली में इन्नें लोकें दी पी किच्चर वनां
लोभी–झूठा, भन्गी चरसी में जमाना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– ए दा य़राना दिक्खेया
महरमें दा महरमें गी में मिटाना दिक्खेया

4.
में जदूं लाडा च आई ऐ मन्गी थोड़ी भिक्खेया
में देई सकदा नी य़ार य़ार नै ए लिक्खेया
ते असें सौ मार खाईऐ ए सवक हा सिक्खेया
य़ार दा ते प्यार दा उडदा भ्राना दिक्खेया

में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

5.

य़ार वेली न मलेची–झूठे रिशतेनाते न
य़ार करदे य़ारे ताई ए में गै जगराते न
य़ारी दे खूना दै कन्नें ए लिखदे खाते न
लेकाचारी दा वथेरा ताना वाना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

6.

कामयावी दे दिनें च दोसती ऐ पाई दी
सत्त वखलें वी मेरी जिन्दुच रौनक लाई दी
पर पशानन नी वुरे वकता च सक्के भाई वी
में खुशी दा ते गमीदा आना जाना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

7.

य़ाकते दी खेड़नी ओन्दी खड़ाली जिन्दड़ी
मौत दी काहला थमां वी ओन्दी काहली जिन्दड़ी
ए समझनी आई तां पलेयां गै गाली जिन्दड़ी
आखदे ई ऐ 'वयोगी' में स्याना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

8.

बाल–बच्चे,वहन,भाई सारे इक्कल सोख न
ताई तोतों, चाचा चाची सारे बखले लोक न
महरमी अन्दर भरें दे किन्ने फिक्के फोक न
में गड़ाकें विच इन्दा रोना राना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

9.

दो घड़ी दी खेड़ ऐ ए जिन्दड़ी दी खेड पी
साज़ लेईऐ तू मना दा कोई सुरलै छेड़ पी
खुत्त लेई लै मौती कन्नें–जिन्दड़ी गी रेड पी
जिन्दड़ी ते मौत दा रिशता पुराना दिक्खेया

में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

10.

जिन्दड़ी दा मौत अग्गे सिर नुआना दिक्खेया
य़ार दा पी य़ार गी सूली चड़ाना दिक्खेया
जिन्दड़ी दा हीन–होना–हारी जाना दिक्खेया
लक्ख जिगरें दा पिरी जिगरा गुआना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो

11.

दिल करा दा चाह ने या साड़ा कोई जिगरी वनै
चिन्ता नें खिन्जी दी जिन्द मेरी बे फिकरी बनै
कोई लाडा ने कुआलै तां मेरी विगड़ी बनै
यार दा कोई वी एसा नीं ठिकाना दिक्खेया
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो
में जमाना दिक्खेया– एदा य़ाराना दिक्खेया
महरमें गी महरमें गी में मटाना दिक्खेयो *KV*

.....

.....

मिरी हर इच्छा पूरी हो गई है,
मगर कोई इस में खो गई है।
इच्छा दिल में आते ही यकायक,
बीज रंजिशों के बो गई है।
दर्द अब भी उठ जाता है अकसर,
मैं समझा था जो थक कर सो गई है।

KV

मन करदा रौह्ना असें एसी जगह जित्थें कोई,
लैन–देन नेईं होऐ, आला–दुआला नेईं होऐ।
नां होऐ मजाज–पुरसी ना होऐ बेतल्लकी,
कोई रंजश नेईं होऐ, कोई जलोखाला नेईं होए

KV

- Gradually, the root of Mind and all the conflicts become visible during this choiceless observation.
- When there is choiceless observation, Awareness comes into being. Awareness is the foundation of peace and joy that no one ever can take away from you.
- A journey that can change your life, you have noticed how automatic forces of Mind create conflict inside and outside.
- At this stage many seekers wonder, though I can see subconscious world taking place inside me, internal peace still remains out of reach.

I thought my pains were done and past
True happiness was here
And I could merrily lead this life
Without a trace of care *KV*

The beauty of lonely perfect moment
That neither had a future nor no past
Which rustles like a reverie in ferment
And like a dream reverie quickly lost *KV*

I dreamt that I have woken from a dream
I dream that I am dreaming in my dream
To live pressed in mother’s cozy arms
And that is what I wanted, sorely needed
Not for nothing I had joined the crowd

I dreamt that I was dreaming in my dream
Performing every task with utmost ease
I liked the way this dream declined to cease
And followed a pre-meditated scheme, *KV*

Life hardens us as year by year it flows. *KV*

As the flute is without breath, piece of wood-
So is a singer without words-
Wood is beautiful- singer is
Statuesque- But what makes them unique is-

The breath and the words.
It is a vital spark.

JOY

I – happy happy – like a fiddle fit
But nested in your arms, I admit
I don't remember pain – not a bit.

If you are thinking this then think again
This thinking moment you may never gain
That life is full of pain and pain and pain.

To come near each other- two people
Have to come, walk in opposite directions.
Only condition is to face each other.

The ocean of this life is bottomless,
In victory or defeat, or stress
Unmindful of our fear, strife or stress
And if you want to cross it, ply the boat
Courage has no alternative, there may be defeat
Never mind if there is no boat man.

संसार ऐ इक गह्न भलेचा मिरे तांई,
दुयें गितै जो झूठे–सच्चा मिरे तांई।

- Let your women talk and you will learn something from them.
- Bygone days--- Cold ashes hide no burning smoldering ember.
- No patience to look into the eyes of passer by—all of them are alone in the crowd
- Remember when you make an appointment with another person, you assume the responsibility of punctuality and that you have not the right to be a single minute late
- The moments that are spent – no one can restart neither hated nor loved years
- There is in them a blankness- of a sort, for there were unloved years.

- He served them and quietly faded away from their lives .Till they needed him again.

- His favourite column- what the stars foretell in two papers. Contradictory. But being an incorrigible optimist, he discarded the one which was contradictory.
- GOD asks no man, whether he will accept life.
  That is not the choice. One must take it. The only choice is HOW?
- I was silent like a book and may be rubbish& may be potent.
- He had broken all the fortresses of custom, tradition and rituals and was in the open. And very very vulnerable----------

1. Make your own nests
2. Take care of your own problems
3. Establish your own value systems,
4. Rules and conventions

- Unless we deal with an issue in all its complexity, we will be wailing our woes a hundred years, now.
- I am a person in my own right and not simply existing through relationships.
- Men like floods can be unpredictably dangerous.
- But the river said, flowing be mighty- it was not my fault.
- The family feeds our humanness and we will suffer if we don't' recognize this fact.
- In the absence of sober, systematic analysis and shared discussion of the issues, the misunderstandings are exaggerated. This must be remedied.

There is happily enough, sufficient tinder,
Lying around that can easily be ignited.

- Does any one has to explain, why one is behaving like a human being.
  Have we reached this stage of decadence?
- See what you want to and be oblivious to all else.
- Illusions, delusions and vain hopes are inheritance
  of mankind but the problems can not be wished away.

Apprehension--
Your fear is justified and I promise.
I shalln't call you SITA any more.
On hearing your fear is justified and sincere
For, may be in your previous birth, you may were SITA,
who had suffered in travail.

- A widower can not escape of dead wife.
- Let us have less of competition and more of competence.
- अचानक, शीतल धार जिल्लै आवशार बनदी ऐ,

When mild river- becomes a raging fall- it produces electricity. Water used To turn the turbines to produce electricity does not lose a thing- like wise is Knowledge imparted and love given.

- A traveller does not know ,what is his destination. He only thinks, he knows, Main thing is he enjoying the journey. If no then it is better to change the roads.

thoughts by Viyogi-----

1. When you become a seeker of knowledge, you realize your Ignorance—like the shows appear only where light is present.

भोली–2

भोली मेरी भैह्न ऐ निक्की, चैंचलता दी रानी
सच पुच्छ तां हसदी–हसदी मित्तरता मसतानी
निक्के–निक्के हत्थे कन्नै मेरे दुखडे धोंदी
तुस पापा जी रोएं ओ कैल्ली औं सकूला जन्नी
मीं अपना भी सबक सुनांदी बरके भन्नी–भन्नी
भी कीमा दा नुसखा लेईऐ–गल्ल ओपरी पुछदी
कैल्ली तुस कूंदे निं दस्सो–समझ लधू ऐ उसदी
भोली, मेरा भैहन ज्यानी मेरी सेवा करदी

.

Medal and Recognition

File:Kunwar Viyogi received a Gold Medal.jpg

A multifaceted personality like him made mark in every field he entered. Below is a list of his awards and recognitions.

1. Gold Medal for best fighter controller in 1966
2. SahityaAkademi Award for his long poem Gharin 1980
3. Commendation of Chief of Air Force in 1985
4.SahityaRatan Award by the Nami Dogri Sanstha in 2001

रणधीर सिंह अपने माता–पिता, भाई–बहनों के साथ

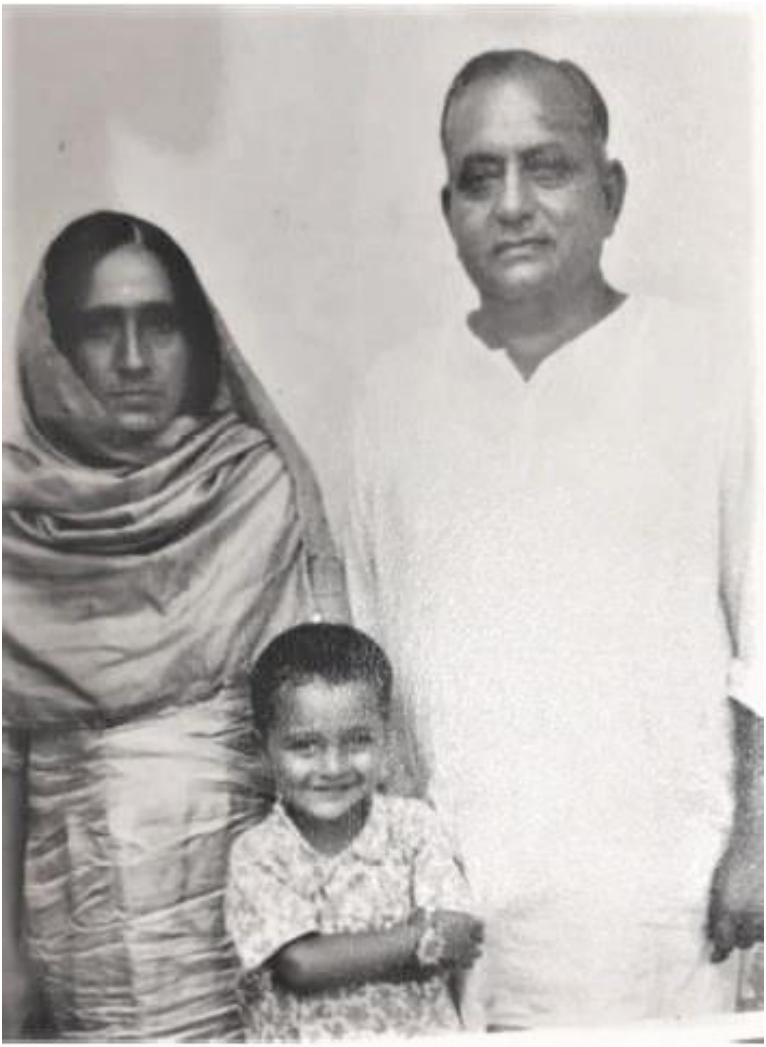

रणधीर सिंह के माता–पिता अपनी सबसे छोटे पुत्र के साथ

रणधीर सिंह पत्नी प्रेम, पूनम, रश्मि, शालू व जैकी के साथ

SUDHA RANDHIR

SUDHA RANDHIR

22 व 23 –7–2015

22—7—2015

हमारा प्रथम व अन्तिम युगल चित्र 18–3–89, 23–7–2015

2020

1996

Vanshawali-----Grop.Capt.

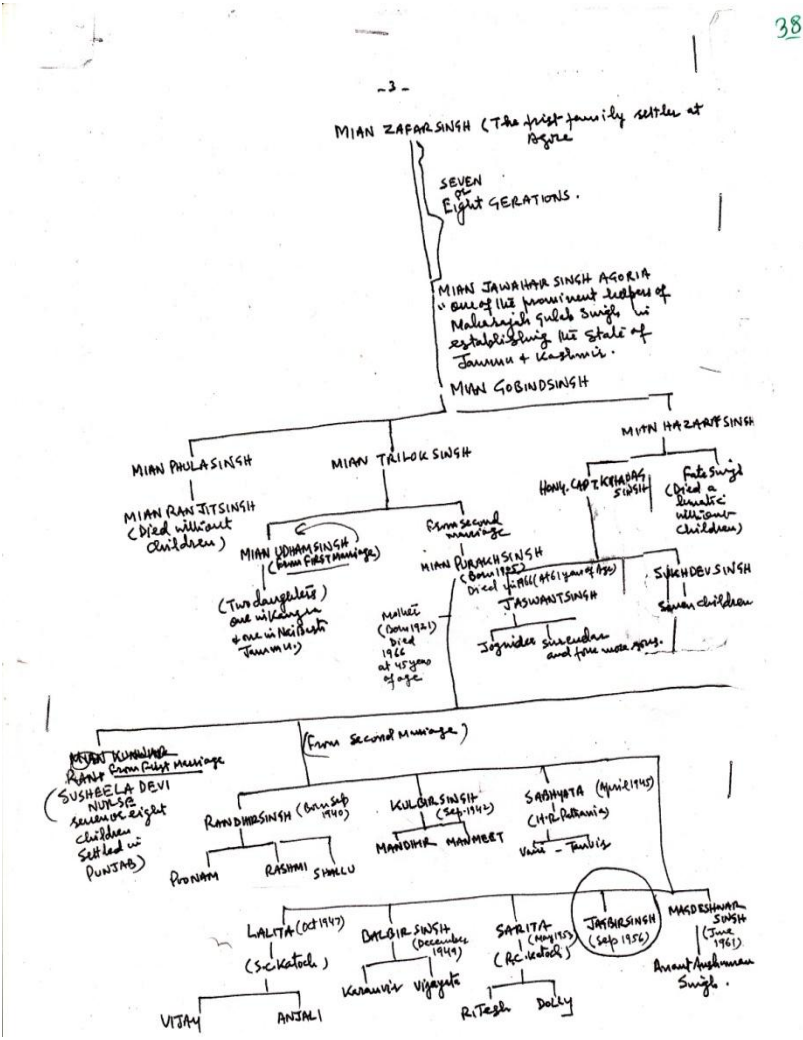

Randhir Singh(I)

Vanshawali-----Grop.Capt. Randhir Singh(II)

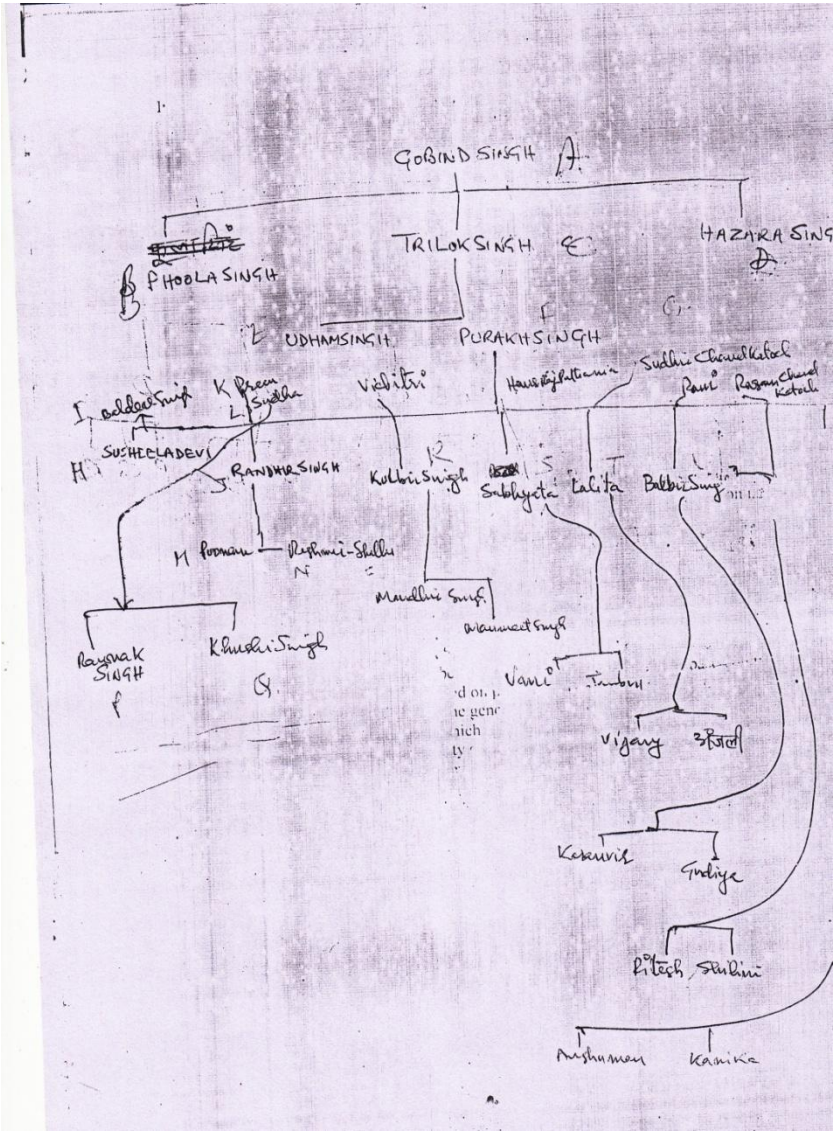

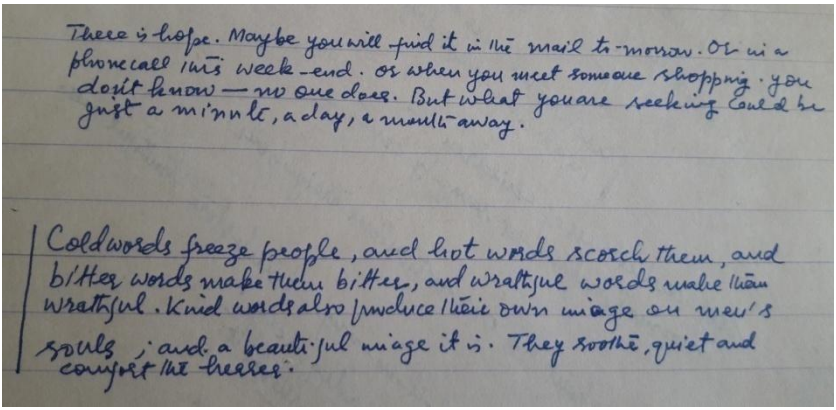
There is hope. Maybe you will find it in the mail tomorrow. Or in a phone call this week-end. Or when you meet someone shopping. You don't know — no one does. But what you are seeking could be just a minute, a day, a month away.

Cold words freeze people, and hot words scorch them, and bitter words make them bitter, and wrathful words make them wrathful. Kind words also produce their own image on men's souls, and a beautiful image it is. They soothe, quiet and comfort the hearers.

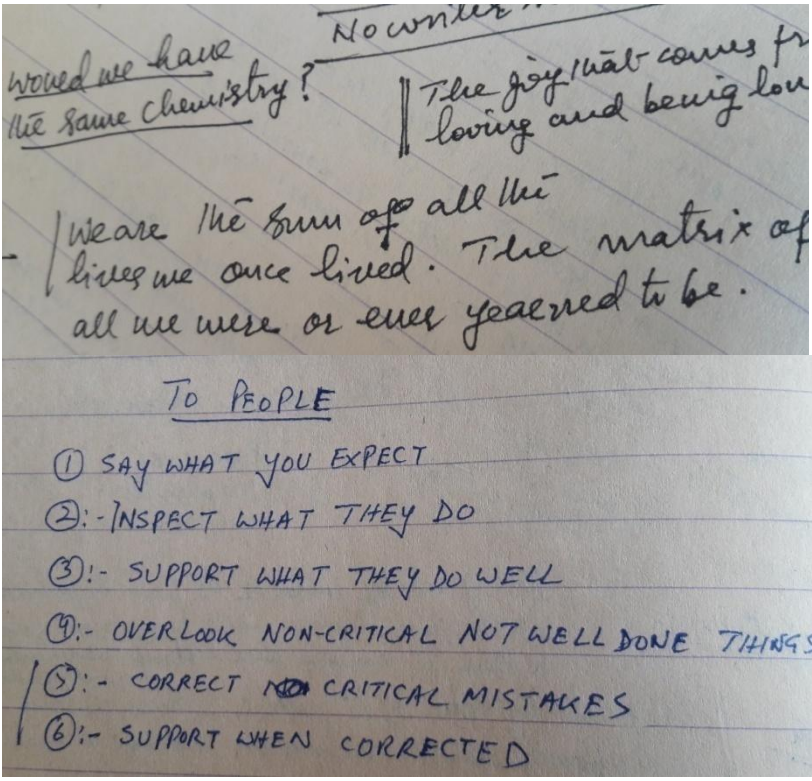

No writer...

would we have the same chemistry?

The joy that comes fr loving and being lov

We are the sum of all the lives we once lived. The matrix of all we were or ever yearned to be.

TO PEOPLE

1. SAY WHAT YOU EXPECT
2. :- INSPECT WHAT THEY DO
3. :- SUPPORT WHAT THEY DO WELL
4. :- OVERLOOK NON-CRITICAL NOT WELL DONE THINGS
5. :- CORRECT CRITICAL MISTAKES
6. :- SUPPORT WHEN CORRECTED

= An onion is an excellent (remedy) cure for an unbroken chilblain. cut the onion in half, dip in kitchen salt and rub lightly on chilblain.

= We need to learn to set our course by the stars, not by the lights of every passing vehicle.

In this world of fragile constancies; inevitable inconsistencies transient permanances, —

Be bold and mighty forces will come to your aid.

✓ The totality of Symptoms and not the physical signs.
We do not wait for pathological signs
✓ Cure is short and permanent without secondary symptoms
✓ No strict dietary measures

- Unless we deal with an issue in all its complexity, we will be wailing our woes a hundred years ,now.
- I am a person in my own right and not simply existing through relationships
- Men like floods can be unpredictably dangerous.
- But the river said, flowing be mighty- it was not my fault. ---- The family feeds our humanity and we will suffer if we don't' acknowledge this fact.